प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-509
उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का अधिगम

ब्लॉक-3
सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में मुद्दे

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सीतांशु एस. जेना
(अध्यक्ष)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री बी. के. त्रिपाठी
आईएएस, प्रधान सचिव, मासवि
झारखंड सरकार, रांची

प्रो. ए. के. शर्मा
भूतपूर्व निदेषक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली

प्रो. एस.वी.एस. चौधरी
भूतपूर्व उपाध्यक्ष
रा.अ.शि.प. नई दिल्ली

प्रो. सी.बी. शर्मा
शिक्षा विद्यापीठ,
इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

प्रो. एस. सी. अगरकर
प्रो. होमी भाभा विज्ञान षिक्षा केन्द्र, मुम्बई

प्रो. सी.एस. नागराजु
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के. दोराईसामी
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एवं विस्तार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

डा. बी. फलाचन्द्र
भूतपूर्व अनुदेशन विभागाध्यक्ष
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के.के. वशिष्ठ
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रा. शि. विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रो. वसुधा कामठ,
कुलपति,
एस.एन.डी.टी.,
महिला वि.वि. मुंबई

डा. हुमा मसूद
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनस्को
नई दिल्ली

प्रो. पवन सुधीर
विभागाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्य विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्री बिनय पटनायक
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, रांची

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ सलाहकार, (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डा.कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संपादक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

पाठ लेखक

डॉ. आशा के.वी.डी. कामत
आर.आई.ई. मैसूर

डॉ. नित्यानंद प्रधान
रवनशा विष्वविद्यालय
कटक, उड़ीसा

डॉ. प्रबोध कुमार पांडा
बीजेबी स्वायत्त कॉलेज,
उड़िसा भुवनेष्वर

डॉ. टी.के. बसंनतिया
ऐसोसिऐट प्रोफेसर
असम विष्वविद्यालय, सिलचर

डॉ. शरत राउत
ऐसोसिएट प्रोफेसर
रवनषा विष्वविद्यालय, कटक उड़िसा

डॉ. सुखविन्दर
एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

पाठय वस्तु संपादक

प्रो. एन. के. दास,
प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

अनुवादक

डा. अनिल कुमार तेवतिया
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

श्रीमति अनुराधा
प्रवक्ता, डायट,
कडकडडुमा, दिल्ली

डा. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य
एस. एन. आई. कॉलिज, पिलाना, बागपत (उ.प्र.)

डा. वीरेन्द्र सिंह
ऐसोसिएट प्रोफेसर, डी. जे. पी. जी. कालेज, बड़ौत
बागपत(उ.प्र.)

डा. सतनाम सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डा. एम. एम. राय
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

विषय वस्तु लेखक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ परामर्षदाता (अध्यापक षिक्षा),
शैक्षिक विभाग,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

आवरण संकल्पना एवं रूपांकन
श्री डी.एन. उप्रेती
प्रकाशन अधिकारी, मुद्रण,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा
धर्मानन्द जोशी
कार्यकारी सहायक, मुद्रण
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

टाईपसैटिंग
मैसर्स शिवम ग्राफिक्स
रानी बाग, 431, ऋषि नगर
दिल्ली–110034

लिपिकीय सहयोग
सुश्री सुषमा, कनिष्क सहायक, शैक्षिक,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्त्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंत:सेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अत: आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

खंड परिचय–3

शिक्षार्थी के रूप में आप खण्ड-3: सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मुद्दे का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में शिक्षार्थी की प्रकृति को समझना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, अधिगम संसाधन और सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन से संबंधित चार इकाईयां हैं। प्रत्येक इकाई कुछ भागों एवं उपभागों में विभाजित है। खण्ड-एक में आप सामाजिक विज्ञान की प्रकृति तथा पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान के स्थान का तथा खण्ड-दो में आप इतिहास, भूगोल तथा राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र के एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक जीवन एक राजनीतिक जीवन का अध्ययन कर चुके हैं।

इकाई-छः

इस इकाई में आप भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषाई विविधता का अध्ययन करेंगे। साथ ही यह इकाई आपको यह व्याख्या करने में मदद करेगी कि शिक्षार्थी सामाजिक विज्ञान से संबंधित मुद्दों को किस प्रकार समझते हैं। आप सामाजिक विज्ञान से संबंधित शिक्षण शास्त्रीय मुद्दों की समझने के योग्य हो सकेंगे। आप संज्ञानात्मक विकास तथा प्रत्यय निर्माण का अर्थ समझ सकेंगे।

इकाई-सात

आप सामाजिक विज्ञान शिक्षण में बालकेंद्रित शिक्षण हेतु सामान्य विशेषताओं को जान पाएंगे एवं विशेष मुक्ति को अपनाने में विभिन्न कारकों को समझ सकेंगे। यह इकाई आपको विभिन्न शिक्षण विधियों जैसे भूमिका-निर्वाह, परियोजना विधि, सहयोगी अधिगम, नाटक, प्रत्यय मानचित्र, क्षेत्र यात्रा, आलोचनात्मक शिक्षण इत्यादि को समझ सकेंगे।

इकाई-आठ

यह इकाई आपको विभिन्न अधिगम संसाधनों की अवधारणा, अर्थ तथा महत्व को समझने में सहायता करेगी तथा विभिन्न प्रकार के अधिगम संसाधनों जैसे ग्लोब, मानचित्र, मॉडल, रेखाचित्र, चार्ट, कार्टून, किताब, संग्रहालय, फिल्म इत्यादि के उपयोग को समझने में भी मदद करेगी। यह इकाई आपको विभिन्न प्रकार के अधिगम संसाधनों को विकसित करने एवं उनके प्रबंधन के योग्य बनाएगी।

इकाई-नौ

यह आपको सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के महत्व को समझने के योग्य बनाएगी। आप सामाजिक विज्ञान में सतत् एवं धापक मूल्यांकन के प्रत्यय एवं उद्देश्यों की समझ सकेंगे एवं सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियों का उपयोग कर सकेंगे। आप ग्रेडिग पद्धति एवं अंकन पद्धति में अंतर की समझने में सक्षम हो पाएंगे।

पाठ्यक्रम-509: मानचित्र

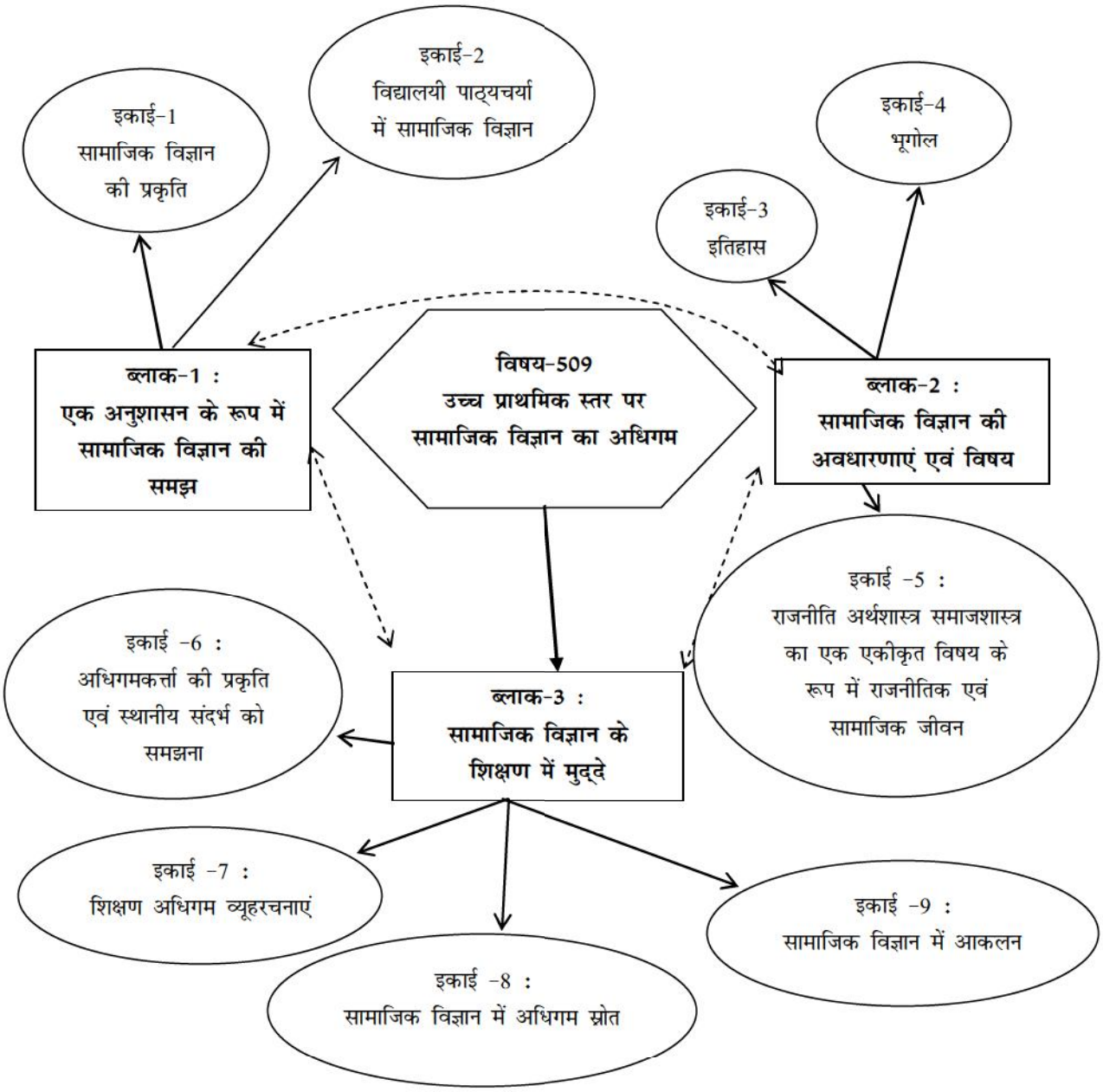

श्रेय अंक (4=3+1)

ब्लॉक	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ	**इकाई 1**	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	3	2	स्थानीय संदर्भों में वर्तमान सामाजिक घटनाओं एवं संबंधित चुनौतियों का अध्ययन
	इकाई 2	विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	4	2	μ जिला/राज्य में धर्मनिरपेक्षता से संबंधित समस्याओं का अध्ययन μ स्थानीय संदर्भों में जाति एवं जेंडर से संबंधित विभेदों का अध्ययन
ब्लॉक-2 सामाजिक विज्ञान की अवधारणाएं एवं विषय	**इकाई 3**	इतिहास	5	3	विभिन्न प्रकरणों पर अवधरकों का मानचित्रण
	इकाई 4	भूगोल	5	3	किसी एक प्रकरण पर पाठयोजना विकसित करना
	इकाई 5	राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/ समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन	5	3	समाजिक विज्ञान के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पक्ष से संबंधित किसी प्रकरण पर पाठ योजना का विकास
ब्लॉक-3 सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में मुद्दे	**इकाई 6**	अधिगमकर्त्ता की प्रकृति एवं स्थानीय संदर्भ को समझना	5	3	अपने जिले की धर्मिक एवं भाषायी विविधता का अध्ययन
	इकाई 7	शिक्षण अधिगम व्यूह रचनाएं	6	4	μ अपने सहकर्मी की सामाजिक विज्ञान की कक्षा का दौरा कीजिए एवं शिक्षण के दौरान बाल केन्द्रित विशेषताओं को सूचीबद्ध करना μ किसी एक अवधरणा पर अवधरणा मानचित्रा का विकास
	इकाई 8	सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत	6	4	ग्रापफ, चार्ट तथा कार्टून बनाना तथा उनके उपयोग से प्रदशर्नी तैयार करना।
	इकाई 9	सामाजिक विज्ञान में आकलन	4	2	कक्षा–VI के विद्यार्थियों के प्रगति विवरण की व्याख्या करना
		शिक्षण	18	&	
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-3
सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में मुद्दे

इकाई 6 : अधिगमकर्त्ता की प्रकृति एवं स्थानीय संदर्भ को समझना

इकाई 7 : शिक्षण अधिगम व्यूहरचनाएं

इकाई 8 : सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत

इकाई 9 : सामाजिक विज्ञान में आकलन

विषय सूची

क्रम. सं.	*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 6 : अधिगमकर्त्ता की प्रकृति एवं स्थानीय संदर्भ को समझना	1
2.	इकाई 7 : शिक्षण अधिगम व्यूहरचनाएं	23
3.	इकाई 8 : सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत	68
4.	इकाई 9 : सामाजिक विज्ञान में आकलन	95

टिप्पणी

इकाई-6 अधिगमकर्त्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषायी विविधता

6.2.1 धार्मिक विविधता

6.2.2 भाषायी विविधता

6.3 अधिगमकर्ता सामाजिक-विज्ञान के मुद्दों को कैसे समझते हैं?

6.3.1 सक्रिय सम्मिलन : अधिगम के लिए अधिगमकर्ता का सक्रिय और संरचनात्मक सम्मिलन अपेक्षित है

6.3.2 सामाजिक भागीदारी

6.3.3 सार्थक क्रियाकलाप

6.3.4 नयी सूचना को पूर्वज्ञान से संबद्ध करना

6.4 संज्ञानात्मक विकास और संकल्पना निर्माण

6.4.1 Piaget का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

6.4.2 अधिगमकर्ताओं में संकल्पना का निर्माण

6.5 शिक्षा-शास्त्र के उपागम

6.5.1 डिजाइन बनाने के निर्देश, विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का उपयोग

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

6.0 प्रस्तावना

पूर्व की इकाई में आपने सीखा कि इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र नामक विषय मिलकर सामाजिक विज्ञान बनता है। इनकी विभिन्न शिक्षण विधियां हैं और तर्कसंगत सीमाओं को खोला जाना आवश्यक है। एक सामाजिक परिदृश्य की बेहतर समझ बनाने में

विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षक को विभिन्न विषयों के निश्चित बिंदुओं को एकीकृत करना और बहुसंख्य उपागमों को लागू करना चाहिए। आपने सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों से प्रसंगों को एकीकृत करते हुए प्रोजेक्ट तैयार करने में विद्यार्थियों की सहायता करना भी सीखा। आपको उपागमों का अवश्य आनन्द लेना है ओर कुछ निर्देश प्राप्त करना है कि बच्चे सामाजिक परिदृश्य को कैसे समझें? इस इकाई में हम अधिगम प्रक्रिया और प्रारंभिक स्तर पर विविध सामाजिक संदर्भों में सामाजिक विज्ञान के शिक्षा शास्त्र पर विचारविमर्श करते है। भारत विविधताओं का एक देश हैं। विविधताओं के मुख्य साधन जैसे नृजातीय उत्पत्ति, धर्म और भाषा आदि विशेषत विद्यालयों में अधिगम में एक विवेचनात्मक भूमिका निभाते हैं जो कि अधि गमकर्ताओं के बीच अंत:क्रिया के प्रजातांत्रिक रूप को सुसाध्य बनाते है। कुछ संदर्भों में शिक्षक से सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम सिद्धांतों का प्रयोग करना अपेक्षित है जो कि विविध ता का सम्मान करता है। खुले विचार विमर्श और सामूहिक निर्णय निर्माण, सामाजिक अंत:क्रिया और बहुसंख्य चिन्तन को सुसाध्य करता है, विविध दृष्टिकोणों का सम्मान करता है और अन्तत: विविध सामाजिक संदर्भों से संबंधित बच्चों के अधिगम को सुसाध्य करता है।

6.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपको सक्षम होना चाहिए:-

(a) अधिगमकर्ताओं के बीच धार्मिक एवं भाषायी विविधताओं को शामिल करते हुए सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं के आयामों को सूची बनाने में।

(b) इन आयामों पर आधारित उनका प्रोफाइल बनाने में।

(c) अधिगमकर्ताओं के बीच सामाजिक मुद्दों पर बहु दृष्टिकोणों और अंत:क्रिया के लोकतांत्रिक रूपों की सराहना करने में।

(d) सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में मुक्त विचार विमर्श और सामूहिक निर्णय निर्माण को सुसाध्य करने में।

(e) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कहानियों, गीतों, उत्सवों, भाषाओं, कृषि कार्यों, प्राकृतिक संसाधनों को शामिल करते हुए स्थानीय संदर्भों का उपयोग करने में।

(f) अधिगमकर्ताओं की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जैसे धार्मिक, सामाजिक, रहन-सहन, अभिभावकों की शिक्षा का एक निर्देशात्मक उपकरण के रूप में उपयोग करने में।

(g) सामाजिक अंत:क्रिया और अधिकांश चिन्तन को सामाजिक विज्ञान के एक प्रभावी शिक्षण-अधिगम सिद्धान्त के रूप में सुसाध्य करने में।

(h) संकल्पनाओं, सामग्रियों और शिक्षण-अधिगम गतिविधियों को पहचानने में जो कि अधिगमकर्ताओं के विकासात्मक स्तर के अनुकूल हो।

(i) अधिगम गतिविधियों का प्रारूप स्थानीय संदर्भों और संसाधनों पर आधारित करने में जो कि संकल्पना निर्माण को सुसाध्य करें।

टिप्पणी

6.2 भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषायी विविधता

भारत अपने जैविक एवं सांस्कृतिक विविधताओं का एक अविश्वसनीय देश है। नृजातीय उत्पत्ति, धर्म और भाषायें सांस्कृतिक विविधता के मुख्य स्रोत हैं। इस देश में 4635 चिह्नित समुदाय है जिनमें से अधिकांश के अपने अद्भुत, पहनावे, भाषायें, पूजा का विधियां, व्यवसाय, भोजन की आदतें और गोत्र हैं। कुछ अन्य भिन्न देशों जहां प्रभावी मानवीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों को निकाल देती है किंतु भारत की प्रकृति विविधताओं को पोषित करने की है। इसके बावजूद उनकी भिन्न पहचानों को बनाये रखना, उनकी जातियों, वर्गों और समुदायों का एक क्षेत्र में अन्य खण्डों की जनसंख्या के साथ एक जैविक जुड़ाव है। भारत में समुदायों के बीच एक सतत अंत:क्रिया है और उन्होंने विशेष रूप से संसाधनों, विशेषताओं और स्थान को साझा कर सांस्कृतिक जुड़ावों को संरक्षित रखा है। ये प्रवृतियां सचमुच में भारत की मिस्र पैतृक और सांस्कृतिक एकता को एक आकार प्रदान करती हैं। शोध प्रकट करता है कि लोकप्रिय सांस्कृतिक विशेषतायें जैसे–भोजन आदतें, शादी के तरीके, सामाजिक रीतियां, सामाजिक संगठन, अर्थव्यवस्था और व्यवसाय सीमाओं को दूर कर देती है। हिन्दू 96.77% विशेषताओं को मुस्लिमों के साथ, 91.19% बौद्धों के साथ, 89.99% सिखों के साथ और 77.46% जैनों के साथ साझा करते हैं। मुस्लिम 91.18% विशेषतायें बौद्धों के साथ, 89.95% सिखों के साथ साझा करते हैं।

जैन 81.34% विशेषतायें बौद्धों के साथ साझा करते हैं। अनुसूचित जनजातियां 96.61% विशेषतायें अन्य पिछड़ा वर्ग के साथ, 95.82% मुसलमानों के साथ, 91.69% बौद्धों के साथ, 91.29% अनुसूचित जातियों के साथ, 88.20% सिखों के साथ साझा करती हैं (K.S. Singh, 1996: ww.islamzl.net/page/keyissues/key 3-21.htm)। अन्तत: इस पर बल दिया जा सकता है कि हमारी संस्कृति जो प्राय: एक ध्रुवीय पहचान प्रदान करती है, एक बहुवादी संस्कृति है। हमने प्रत्येक को विशेषत: प्रत्येक क्षेत्र में गंभीरता से प्रभावित किया है।

आपको अपने क्षेत्र में जातियों/सामाजिक समूहों, जनजातियों, भाषाओं, धर्मों या व्यवसायों पर आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को अवश्य अवलोकित करना चाहिए। क्रियाकलाप-1 आपके क्षेत्र के भिन्न सामाजिक संदर्भों के बारे में आपकी समझ का मूल्यांकन करने के लिए दी गई है।

क्रियाकलाप-1

1. धर्म, जाति, जनजाति और व्यवसाय पर आधारित अपने क्षेत्र या अन्यत्र के सामाजिक समूहों, समुदायों का नाम लिखें और प्रत्येक के आधारभूत लक्षणों को बतायें। एक आपके लिए की गयी हैं:–

सामाजिक समूह	*आधारभूत लक्षण*
(a)	

(b)

(c)

2. अपने क्षेत्र या अन्यत्र के सामाजिक समूहों, समुदायों को पहचानें जिनकी सामान्य सांस्कृतिक विशेषतायें (जैसे पहनावा, भोजन आदतें, भाषा) हैं और समूहों की विशेषताओं को वर्णित करें।

सामाजिक समूह *आधारभूत विशेषतायें*

(a)

(b)

6.2.1 धार्मिक विविधता

भारत की जनसंख्या की धार्मिक विविधता के लक्षण सदियों से सुनिश्चित किये जा चुके हैं। संभवत: पृथ्वी के किसी क्षेत्र की अपेक्षा भारत में अधिक धार्मिक विविधता है। यह हिन्दूवाद, बौद्धवाद, जैनवाद और सिक्खवाद का जन्म स्थान है। यह विश्व के कुछ स्थानों में है जहां पारसी लोग रहते हैं। जबकि भारत हिन्दूवाद, बौद्धवाद, जैनवाद और सिक्खवाद का उद्गम स्थल है, इस्लाम का भी एक लम्बा अस्तित्व है। अत:भारत में यहूदी धर्म, इसाई और बहाई धर्म के अनुयायी भी हैं। भारत का कोई औपचारिक राज्य धर्म नहीं है किन्तु यह भारतीयों के दैनिक जीवन में अपने उत्सवों, त्योहारों, तीर्थ स्थानों, पारिवारिक धार्मिक परंपराओं के माध्यम से केंद्रीय भूमिका निभाता है। पश्चिम की अपेक्षा भारत में वस्तुत: समस्त जनसंख्या द्वारा धर्म को अधिक गंभीरता से लिया जाता है। जनगणना 2001 के अनुसार भारत के 81% लोग हिंदू थे, शेष को छोड़कर जो अन्य धर्मों से जुड़े हैं (देखें टेबल-1)। जम्मू और कश्मीर को छोड़कर सभी प्रमुख राज्यों में हिंदू बहुसंख्यक हैं। राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमान अन्य सभी धार्मिक समूहों को एक साथ जोड़कर संख्या में सबसे अधिक बड़े धार्मिक समूह हैं।

टेबल-1 धार्मिक समुदाय के अनुसार भारतीय जनसंख्या (जनगणना-1961-2001)

धार्मिक समुदाय	*जनसंख्या का प्रतिशत*				
	1961	1971	1981	1991	2001
हिन्दू	83.5	82.7	82.6	82.4	80.5
मुसलमान	10.7	11.21	11.4	11.7	13.4
इसाई	2.4	2.6	2.4	2.3	2.3
सिक्ख	1.8	1.9	2.0	2.0	1.9
बौद्ध	0.7	0.7	0.7	0.8	0.8
जैन	0.5	0.5	0.5	0.4	0.4
अन्य	0.4	0.4	0.4	0.4	0.6
धर्म जो नहीं कहे गये				0.1	

टिप्पणी

स्रोतः (i) भारत की जनगणना, श्रृंखला I भारत, भाग II C; (ii) भारत की जनगणना 1981, श्रृंखला-1, पेपर 3, 1984 (iii) भारत की जनगणना, श्रृंखला-1, पेपर 1, 1995 (धर्म) (iv) भारत की जनगणना 2001, धार्मिक डाटा पर प्रथम प्रतिवेदन।

6.2.2 भाषाई विविधता

भाषा जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। भारत जैसे बहुभाषाई और बहु-जातीय देश में इसकी बहुत अधिक सार्थकता और अभियान है। भाषा विविधता का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इस देश में 325 भाषायें और 25 तिथियां प्रयोग में है। ये भाषायें, साथ ही साथ लिपियों विविध भाषाई परिवारों से उत्पन्न हुई हैं:—भारतीय-आर्यभाषा, तिब्बती-बर्मन, द्राविड़, आस्ट्रेलियन-एशियाई, अंडमानी, सेमिटिक, भारतीय-ईरानी, सिन्धु-तिब्बती, भारोपीय, 'हजारों भाषाओं से पृथक। कम-से-कम 65% समुदाय द्वि-भाषाई हैं। अधिकांश जनजातीय समुदाय बहु-भाषी है (http://www.indiachild.com/Indian-languages.htm)। बहुत-सी मातृ-भाषायें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विविधता के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण उपकरण है। द्वि-भाषावाद के माध्यम से भाषा सम्पर्क सामाजिक ओर सांस्कृतिक अंत:क्रिया के लिए महत्वपूर्ण साधन है।

क्रियाकलाप-2

1. अपने विद्यालय में विभिन्न गृह भाषायें बोलने वाले बच्चों की अनुमानित संख्या को लिखें।

गृह भाषायें	विद्यार्थियों की संख्या
(a)	
(b)	
(c)	

2. गृह भाषाओं में विभिन्नता के कारण आपको अपने विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण में उत्पन्न समस्याओं का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 अधिगमकर्त्ता, सामाजिक विज्ञान के मुद्दों को कैसे समझते हैं?

सामाजिक विज्ञान समुदाय में मानव जातियों और मानव समूहों की सामान्यीकृत और विवेचनात्मक

समझ को विकसित करने का लक्ष्य रखता है। वे सामूहिक जीवन में मानवीय व्यवहार के बारे में कल्पनाओं और समुदाय में किये गये अवलोकनों पर आधारित उनके वैधीकरण के साथ समझौता करते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चा, परिवार, समुदाय साथ ही साथ विद्यालय में अपने पारिवारिक सदस्यों, साथियों और शिक्षकों के साथ अन्त:क्रिया के दौरान विविध पहनावों, भोजन आदतों और धार्मिक कार्यों का अवलोकन करता है और अपने वातावरण के बारे में अपनी समझ बनाता है। समझने की प्रक्रिया के संबंध में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान प्राय: एक समान हैं। इसके अतिरिक्त अधिगम के मूल सिद्धान्त सामाजिक विज्ञानों के मूल सम्बद्धों जैसे वर्णन, व्याख्या और सामाजिक संसार की भविष्यवाणी को संबोधित करने में भी उपयुक्त हैं।

मनोविज्ञान के विविध क्षेत्रों में आधुनिक शोध ने अधिगम प्रक्रिया में सामाजिक विज्ञान को शामिल करते हुए विभिन्न विषयों में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। परिणामस्वरूप आज विद्यालयों में पाठ्यचर्या और शिक्षा शास्त्र बदल रहे हैं। इस बदलते परिदृश्य में एक शिक्षक के रूप में आपको वास्तविक जीवन परिस्थितियों से विद्यालय को जोड़ने में और स्मरणीकरण, व्यायाम और अभ्यास की अपेक्षा समझ पर केंद्रित करने में शिक्षक केंद्रित की अपेक्षा अधिगमकर्ता केन्द्रित होना अपेक्षित है। हम चार विस्तृत स्वीकृत सिद्धांतों पर विचार विमर्श के साथ शुरू करते हैं जिस पर आपको अपने विद्यालय का अधिगम वातावरण प्रारूपित करना चाहिए–

(a) अधिगम वातावरण जो कि विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगमकर्ता होने के लिए अपेक्षित है।

(b) अन्य विद्यार्थियों के साथ सहयोग।

(c) सार्थक क्रियाकलापों में भागीदारी।

(d) पूर्व ज्ञान को नई सूचनाओं से जोड़ने।

आपको निर्देश को प्रारूपित करने के क्रम में सोचने समझने में इन सिद्धांतों को अपनाना जरूरी है ताकि विद्यार्थियों के अधिगम को सुसाध्य कर सकें। इन सिद्धांतों का विवरण आगामी सेक्सनों में विचार-विमर्श किया जाना है।

6.3.1 सक्रिय सम्मिलन : अधिगम के लिए अधिगमकर्त्ता का सक्रिय, संरचनात्मक सम्मिलन अपेक्षित है।

विद्यार्थियों को उनके अपने अधिगम के लिए विद्यालय में ध्यान देना, अवलोकन करना, स्मरण करना, समझना, लक्ष्य निर्धारित करना, उत्तरदायित्व मानना अपेक्षित है। ये संज्ञानात्मक योग्यतायें अधिगमकर्त्ता के सक्रिय सम्मिलन और व्यस्तता के बिना विकसित नहीं हो सकती।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को क्रियाकलापों में शामिल होना चाहिए जो कि उन्हें प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण की समझ विकसित करने में सहायक होगा। इस स्तर पर समझ संक्षेपीकरण की अपेक्षा अवलोकन और स्पष्टीकरण पर आधारित होना चाहिए। स्पष्टीकरण बच्चों के जीवन के शारीरिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू से संबंद्ध होने जरूरी हैं। इस स्तर पर

टिप्पणी

एक सक्रिय अधिगमकर्त्ता होने के लिए अवलोकन, एकीकरण और वर्गीकरण कौशल महत्त्वपूर्ण हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय के क्षेत्र इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से लिये जाते हैं। इस स्तर पर गरीबी, अशिक्षा, बाल श्रम, जातिवाद, पर्यावरण प्रदूषण जैसे मुद्दों पर बल दिया गया है जो कि विद्यार्थियों को इन मुद्दों के अन्वेषण करने और समझने में सहायक हैं।

अत: प्रारंभिक विद्यालय स्तर पर एक सामाजिक विज्ञान शिक्षक के रूप में आप न केवल विद्यार्थियों के अवलोकन, एकीकरण, वर्गीकरण और समकालीन मुद्दों की व्याख्या करने के कौशलों को विकसित करने में सहायता करने की चुनौतियों बल्कि उन्हें भाषा और गणित जैसे अन्य विषयों के शिक्षण में एकीकृत करने की चुनौतियों का भी सामना करते हैं। आपके विद्यार्थियों को इन कौशलों को सीखने में मदद करने में आप के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:–

कक्षाकक्ष/विद्यालय में

- ऐसी स्थितियों से बचें जहां विद्यार्थी एक लंबे समय तक निष्क्रिय स्रोता बने हों।
- विद्यार्थियों को सक्रिय क्रियाकलाप प्रदान करें जैसे–प्रयोग, अवलोकन, प्रोजेक्ट आदि।
- कक्षा–कक्ष विचार विमर्श और अन्य सहयोगी क्रियाकलाप में विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करें।
- संग्रहालयों, चिड़ियाघर और तकनीकी पार्कों की यात्रा का आयोजन करें।
- क्या सीखें? कैसे सीखें? के बारे में विद्यार्थियों को निर्णय लेने की स्वीकृति दें।
- अधिगम उद्देश्यों को सूत्रबद्ध करने में विद्यार्थियों की सहायता करें जो कि उनके पूर्व अनुभवों रूचियों और आकांक्षाओं से संगत हैं।

क्रियाकलाप–3

कार्यक्रम/गतिविधियों के नाम लिखें जिन्हें आप सामाजिक विज्ञान विषय को सीखने में बच्चों की सक्रिय भागीदारी प्रोन्नत करने के लिए आयोजित करते हैं।

कक्षाकक्ष आधारित क्रियाकलाप	*कक्षाकक्ष के बाहर के क्रियाकलाप*

क्रियाकलाप–4

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी के लिए अपनी पसंद के किन्हीं तीन प्रसंगों के लिए क्रियाकलापों या अधिगम परिस्थितियां का सुझाव दें

प्रसंग/विषय	*क्रियाकलाप/अधिगम परिस्थितियां*

6.3.2 सामाजिक भागीदारी

प्राथमिक रूप से अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया है और विद्यालय के सामाजिक जीवन में भागीदारी अधिगम प्रक्रिया का केंद्र है।

सामाजिक भागीदारी मुख्य गतिविधि है जिसके माध्यम से अधिगम होता है। सामाजिक प्रक्रिया में भागीदारी उसी समय शुरू होती है जब अभिभावक अपने बच्चों के साथ अंत:क्रिया करते हैं। इन अंत क्रियाओं के माध्यम से बच्चे एक आचरण अर्जित करते हैं जो कि उन्हें समाज के प्रभावी सदस्य होने में समर्थ करते हैं।

Lev Vygotsky (1978) के अनुसार गतिविधियों, आदतों, शब्दकोश और बच्चे जिस समुदाय में बढ़ते हैं उस समुदाय के सदस्यों के विचारों के अन्त:करण के द्वारा बच्चा सीखता है। एक लाभदायक सहयोगी और सहकारी वातावरण की स्थापना विद्यालय अधिगम का एक अनिवार्य अंग है।

सामाजिक विज्ञान में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया इस प्रकार प्रारूपित होनी चाहिए कि अधिगमकर्ता एक पारस्परिक वातावरण में ज्ञान और कौशलों को अर्जित करने में सहायक हो। इसे शिक्षकों और विद्यार्थियों को एक साथ सीखने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। सूचना के शुद्ध प्रेषण को, समूह कार्य, वाद-विवाद और विचार विमर्श की व्यस्तता में स्थानान्तरित करना जरूरी है। अधिगम का यह उपागम अधिगमकर्ता और शिक्षक दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति सचेत रखता है।

सामाजिक विज्ञान में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहभागी बनाने में निम्नलिखित सुझाव आपकी सहायता कर सकते हैं:–

- विद्यार्थियों को समूह में कार्य करना सुनिश्चित करें और एक प्रशिक्षक/समन्वयक की भूमिका अपनायें।
- एक कक्षा-कक्ष वातावरण सृजित करें जो कि समूह कार्यस्थलों को शामिल करता है जहां संसाधनों को साझा किया जाता है।
- विद्यार्थियों को पढ़ायें कि कैसे प्रत्येक दूसरे के साथ सहयोग किया जाता है।
- बच्चों को उनके विचारों को व्यक्त करने और अन्य विद्यार्थियों के तर्कों को मूल्यांकित करने के लिए परिस्थितियां सृजित करें।
- विद्यालय को समुदाय से विस्तारपूर्वक जोड़े, उदाहरणार्थ भोजन आदतों या बिजली के प्रयोग के बारे में गांवों से डाटा एकत्र करने के लिए विद्यार्थियों को शामिल करें।
- उभरते सामाजिक मुद्दों पर वाद-विवाद, संवाद, विचार-विमर्श व्यवस्थित करें। उदाहरणार्थ-दहेज प्रथा, जनसंख्या वृद्धि, बाल-विवाह।
- स्थानीय साधन सेवियों और लोक पदाधिकारियों के साथ विद्यार्थियों का विचार-विमर्श व्यवस्थित करें। उदाहरणार्थ–शिल्पकार, कलाकार, डाकिया, बैंक पदाधिकारी, पुलिस अधिकारी, किसानों आदि।

टिप्पणी

बॉक्स-2 में सामाजिक प्रक्रिया में एक बच्चे की भागीदारी का केस दिया गया है:

सर्व-शिक्षा अभियान, कोरापुट (उड़ीसा) की भागीदारी में यूनीसेफ और बच्चों के विकास के लिए लोगों के समूह के द्वारा बाल संवाददाताओं के प्रोजेक्ट को 2005 में प्रवर्तित किया गया था–बच्चों और संबंधित मुद्दों के साथ कार्यरत एक नागरिक समुदाय। कोरापुट जिले के 10 प्राथमिक विद्यालयों के 100 बच्चों के प्रशिक्षण के साथ प्रोजेक्ट शुरू हुआ। वर्ष 2010 के अंत तक जिले के बाहर 600 विद्यालयों के 6 हजार बच्चे उसमें शामिल हो गये। बाल संवाददाताओं ने चारों ओर लोगों के साथ पारस्परिक क्रिया किया और इन मुद्दों का अवलोकन किया तथा उनको उनके समाचार पत्र 'Ankurodgam' के माध्यम से मुद्दों को संप्रेषित किया, जिसे राज्य के बाहर एक उड़िया दैनिक 'अनुपम भारत' में प्रकाशित एवं वितरित किया गया है। उन्होंने अवलोकन में उनको उनके अभिभावकों, समुदायों और उनके गांव को प्रभावित करने वाले मुद्दों और अनुमानों को अवलोकन में पाया। क्षेत्र अवलोकन और आमोद-प्रमोद बताते है कि वे स्वस्थ आचरण करते हैं और वे प्रभावी संप्रेषक में बदल चुके हैं तथा वे उनके समुदाय के बदलाव के एजेंट हैं।

क्रियाकलाप-5

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के संदर्भ में क्या आप कोई गतिविधि आयोजित करते हैं जो कि सामाजिक भागीदारी/अंत:क्रिया को सुसाध्य करे? यदि हां तो विवरण नीचे दें:

प्रकार/गतिविधि का नाम	गतिविधि का विवरण
1.	
2.	
3.	

क्रियाकलाप-6

दो विद्यार्थी 'x' और 'y' समुदाय में लैंगिक मुद्दों के बारे में विचार विमर्श में संलग्न हैं, जबकि 'x' लैंगिक समानता के पक्ष में हैं, 'y' इसके विरुद्ध है। एक दूसरे के दृष्टिकोणों को प्रदर्शित करते हुए विचार-विमर्श को संवाद के रूप में तैयार करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.3.3 सार्थक क्रियाकलाप

बच्चे अच्छा सीखते हैं जब वे गतिविधियों में भागीदारी करते हैं जो कि वास्तविक जीवन में लाभदायक प्रतीत होते हैं और सांस्कृतिक रूप से सार्थक हैं।

विद्यालय की बहुत सी गतिविधियां सार्थक नहीं हैं क्योंकि विद्यार्थी न तो उसे समझते हैं और न ही वे उसके उद्देश्य और लाभ के प्रति जागरूक होते हैं। कभी-कभी विद्यालय गतिविधियां सार्थक नहीं होती हैं क्योंकि वे सांस्कृति रूप से उपर्युक्त नहीं है। हमारे देश के बहुत से विद्यालयों में विविध संस्कृतियों के बच्चे एक साथ सीखते हैं। आचरणों में, आदतों में, सामाजिक भूमिकाओं आदि में सांस्कृतिक विभिन्नतायें हैं जो अधिगम को प्रभावित करती हैं। कभी-कभी एक सांस्कृतिक समूह से संबद्ध विद्यार्थी के लिए सार्थक गतिविधियां दूसरे सांस्कृतिक समूह से संबद्ध विद्यार्थी के लिए सार्थक नहीं होती हैं।

क्रियाकलाप-7

अपने विद्यालय के बच्चों के बीच सांस्कृतिक विविधता का एक परिदृश्य तैयार करें:

आयाम	चारित्रिक लक्षण
1. भाषा	
2. धर्म	
3. भोजन आदतें	
4. सामाजिक को	
5. सामाजिक भूमिका	
6. त्योहार	

व्यक्ति संदर्भ से सीखते हैं। प्राथमिक संदर्भ से तात्पर्य बच्चे का समुदाय और स्थानीय वातावरण से है जिसमें अधिगम स्थान लेता है। पेड़, पक्षियां, फल, त्योहार, धार्मिक प्रवृतियां आदि जिन्हें बच्चे अपने संसार के चारों ओर अवलोकित और अनुभव करते हैं तथा ज्ञान जिन्हें पहले ही पा चुके और जिन्हें वे कक्षाकक्ष में ले आते हैं, जो बच्चों को सामाजिक विज्ञान की समझ/अधिगम के लिए आधार प्रदान करते है।

शिक्षण अधिगम क्रियाकलाप को एक प्रामाणिक संदर्भ में स्थित कर आप उन्हें अधिक सार्थक बना सकते हैं। प्रामाणिक संदर्भ का एक उदाहरण वह है जिसमें गतिविधि वास्तविक जीवन में आयोजित होती है। उदाहरण के लिए, 'हमारा पर्यावरण' अध्याय शुरू करने से पहले आप अपनी कक्षा को विद्यालय के नजदीक बाहर ले जा सकते हैं और वापस आकर बच्चों से सजीव और निर्जीव चीजों की सूची बनाने को कहें जिन्हें उन्होंने अवलोकित किया। दूसरा उदाहरण है–विद्यार्थियों को कलाकार के कार्यशाला को देखने की स्वीकृति देने से पहले आप स्थानीय कलाकार/शिल्पकार को उनके कार्य प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-8

1. अपने आस-पास के क्षेत्र के संसाधनों की सूची बनायें जो सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए आधार के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं। (जैसे–वस्तुएं, जानवर, नदी)
2. अपने आस-पास के क्षेत्र के दो संस्थानों की सूची बनायें जो अधिगम संसाधनों के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं (डाकघर) और वर्णन करें कि कैसे उनका उपयोग अधिगम संसाधन के रूप में हो सकता है।
3. स्थानीय त्योहारों का नाम लिखो जो सामाजिक विज्ञान की समझ के लिए सार्थक है।
4. अपने क्षेत्र के लोगों की गतिविधियों की सूची बनायें जो सामाजिक विज्ञान शिक्षण के दौरान उदाहरण के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं। (उदाहरण–जलावन की लकड़ी एकत्र करना, मछली पकड़ना)।

6.3.4 नयी सूचना को पूर्व ज्ञान से संबद्ध करना

पहले ही समझे और विश्वास किये जा चुके ज्ञान के आधार पर नया ज्ञान संरचित होता है।

आधुनिक शोध उपलब्धियां दिखाती हैं कि नयी सूचना को पूर्व ज्ञान से संबद्ध करने की योग्यता अधिगम के लिए विवेच्य है। अधिगमकर्ता सामग्रियों और उन्हें दी गयी गतिविधियों के आधार पर नये विचारों को वर्तमान विचारों के साथ जोड़ते हुए सक्रिय रूप से अपना ज्ञान संरचित करते हैं। किसी एक के लिए समझना या कुछ सीखना संभव नहीं है जो कि पूर्णत: अनभिज्ञ है। कार्य को समझने के लिए कुछ पूर्व ज्ञान आवश्यक है। उदाहरण के लिए आप ज्ञात कहानियां या विद्यार्थियों को लेकर 'पल्ली सभा'/ग्राम सभा का अवलोकन कर सकते हैं तथा प्रजातंत्र को समझने में विद्यार्थियों की सहायता के लिए विचार विमर्श के साथ युग्मित कर सकते हैं। उसी प्रकार आप परिवहन व्यवस्था को समझने के लिए तस्वीरों का समूह या परिवहन व्यवस्था पर वीडियो प्रस्तुती का प्रयोग कर सकते हैं।

कृपया अपने विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से संबंधित और सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तक से संबद्ध विषयों को चित्रित करने के लिए कुछ अधिक उदाहरण उद्घृत करें।

क्रियाकलाप-9

प्रारंभिक सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों से विषय चुनें जो कि आपके स्थानीय संदर्भ में अच्छे से पढ़ायी जा सकें और कहानियों के रूप में बच्चों के पूर्वज्ञान को उद्घृत करें।

विषय का नाम	बच्चों के पूर्व ज्ञान से उद्धरण
1. प्रजातंत्र	(i) बच्चों को पल्ली सभा/ग्राम सभा का अवलोकन करने की अनुमति दें। या पल्लीसभा/ग्राम सभा की वीडियो प्रस्तुती

(ii) प्रश्नोत्तर के द्वारा प्रजातांत्रिक सिद्धांतों को चित्रित करने वाली कहानी का वर्णन करें।

2.

3.

विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को उनके कार्य से संबद्ध करने में उनकी सहायता करने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं:

- विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान को सुनिश्चित करने के क्रम में एक अध्याय को शुरू करने से पहले उसके विषय-वस्तु पर विचार-विमर्श करना आवश्यक है।
- प्राय: विद्यार्थियों का पूर्वज्ञान अपूर्ण होता है या झूठी मान्यताओं या गलत अवधारणाओं पर होता है। अत: विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान की विस्तृत जांच करें ताकि झूठी मान्यतायें या गलत अवधारणायें पहचानी जा सकें।
- विद्यार्थियों को उनके अपने ऊपर कुछ प्राथमिक कार्य करने को कहें।
- विद्यार्थियों को पढ़ाये जाने वाले विषय और वे पहले से क्या जानते हैं के बीच संबंध को देखने में सहायता के लिए भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछें।
- विषयों के अतिरिक्त ज्ञान के परस्पर संबंधों को बाहर लायें।
- सामाजिक मुद्दों पर संवाद, वाद-विवाद, तर्कों और प्रश्नों को प्रोत्साहन दें।

6.4 संज्ञानात्मक विकास और संकल्पना निर्माण

सामाजिक विज्ञानों का विषय वस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे विषयों की संकल्पनाओं को स्पष्टत: आवृत्त करने के लिए इन विषयों से लिये गये हैं। उदाहरण के लिए समुदाय, जनसांख्यिकीय, संस्कृति, विकास, पर्यावरण और उपयोगिताआदि। ये संकल्पनायें बच्चों की गतिविधियों, अनुभवों और दृष्टांतों में व्यस्तता के माध्यम से गठित की गयी हैं। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण इन व्यस्तताओं पर आधारित है। अधिगमकर्ताओं की विकसित संज्ञानात्मक योग्यतायें जैसे अवलोकन, पहचान, वर्गीकरण जो कि सामाजिक मुद्दों को समझने के मौलिक तत्व हैं जैसे–गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, संप्रदायवाद आदि। संज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास निश्चित स्तरों का अनुकरण करता है। अत: पाठ्चर्या का संघटन और सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियां शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर संज्ञानात्मक विकास के स्तरों के अनुकूल होनी चाहिए।

एक सामाजिक विज्ञान के अध्यापक के रूप में आपको समझना जरूरी है कि कैसे विभिन्न संज्ञानात्मक योग्यतायें विभिन्न आयु स्तरों पर विकसित होती हैं। संज्ञानात्मक विकास के मुख्य

टिप्पणी

विचारक Piaget, Gessel, Erikson और spock मानते हैं कि विकास के स्तर या समय हैं, किन्तु प्रत्येक एक बच्चे की चिन्तन और अधिगम विधियों के अध्ययन के विभिन्न उपागमों पर बल डालते हैं। संभवत: बच्चे में संज्ञानात्मक विकास का सबसे उद्घृत सिद्धांत Jean Piaget का सिद्धांत है। यहां हम Piaget के सिद्धांत के बारे विचार-विमर्श करते हैं जो कि प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या और शिक्षा-शास्त्र की योजना के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

जीवन के विभिन्न स्तरों पर बच्चों की संज्ञानात्मक योग्यताओं के विकास के बारे में सीखने से पहले हम बच्चों के व्यवहार के बारे में हमारे अवलोकनों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देते हैं:

क्रियाकलाप-10

1. एक वर्ष का बच्चा उनको दी गयी वस्तुओं जैसे–खिलौने, कलम या पेन्सिल या पुस्तक का क्या करता है?

   .....

   .....

   .....

2. एक दो वर्ष का बच्चा कैसे अपने आस-पास के लोगों के साथ पारस्परिक क्रिया करते है?

   .....

   .....

   .....

3. कुत्ता, गधा और घोड़ा के बीच विभिन्न अंतरों के वर्गीकरण में 5 वर्ष और 10 वर्ष के बच्चे की योग्यताओं के अंतर के संबंध में अपने अवलोकनों को लिखें।

   .....

   .....

   .....

इन प्रश्नों का उत्तर देते समय आपको अपने बच्चों या आपके आस-पास के बच्चों की गतिविधियों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। स्वीट्जरलैण्ड के मनोवैज्ञानिक Jean Piaget ने अपने स्वयं के बच्चे की गतिविधियों का 16 वर्षों तक अवलोकन कर संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत को विकसित किया है।

6.4.1 Piaget का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

Piaget ने बच्चों के विकास के चार स्तरों का वर्णन किया है:–संवेदी गति, पूर्व-परिचालन, प्रत्यक्ष परिचालन, और औपचारिक परिचालन। ये चार स्तर एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं, प्रत्येक एक भिन्न तरीके को प्रकट करता है जिसमें एक व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। हम इन पर प्रत्येक स्तरों पर चर्चा करें:–

संवेदी गति

इस स्तर का प्रसार जन्म से दो वर्षों तक है उदाहरणार्थ–भाषा के अर्जन तक। इस स्तर में शिशु अनुभवों के संमन्वयन जैसे शारीरिक एवं गति क्रियाओं द्वारा देख और सुनकर संसार की समझ संरचित करता है।

शिशु शारीरिक क्रियाओं द्वारा संसार का ज्ञान अर्जन करते है और वे उस पर निष्पादन करते हैं। एक शिशु की प्रगति आभासी और जन्म पर करने वाले नैसर्गिक क्रियाओं से शुरू होकर स्तर के अंत पर सांकेतिक विचारों की शुरूआत तक होता है। इसका अर्थ है कि वह क्रमश: अधिक संघटित हो जाता है और उसकी गतिविधियां कम बेहतरीन हो जाती हैं। पर्यावरण से उसके सामना के माध्यम से उसकी प्रगति आभासी स्तर से जांच और त्रुटि अधिगम तथा सामान्य समस्या समाधान तक होती है।

पूर्व परिचालन

प्रौढ़ मानक के अनुसार पूर्व परिचालन स्तर (2 से 7 वर्ष) के प्रमाण चिह्न हैं–असंगत मानसिक परिचालन और स्वयं पर पूर्ण रूप से केंद्रित। इस स्तर के दौरान वह वस्तुओं, स्थानों और लोगों को व्यक्त करने के लिए संकेतों जैसे–तस्वीरों, शब्दों और चित्रकलाओं का प्रयोग शुरू कर देता है। बच्चा स्थायी अवधारणाओं के साथ-साथ मानसिक तर्कणा की रचना करने में सक्षम होता है। वह तथापि परिचालनों/कार्यों के निष्पादन में सक्षम नहीं है। यद्यपि बच्चा शारीरिक की अपेक्षा मानसिक कार्य कर सकता है। चिंतन फिर भी आत्मकेंद्रित है। बच्चे को दूसरों का दृष्टिकोण लेने में परेशानी होती है।

प्रत्यक्ष परिचालन

यह स्तर 7 वर्षों से 11 वर्षों के बीच आता है और यह तार्किक सोच की योग्यता से चरित्र चित्रित है तथा अवधारणाओं को समझने में बच्चा तात्कालिक वातावरण का उपयोग करता है। इस स्तर के दौरान महत्त्वपूर्ण प्रक्रियायें हैं:

- **क्रमबद्ध करना :** वस्तुओं को माप, आकार या किसी अन्य चरित्र के अनुसार एक क्रम में छांटने की योग्यता।
- **संक्रामकता :** एक क्रम में तत्वों के बीच तार्किक संबंध को पहचानने की योग्यता। उदाहरण के लिए यदि 'A', B की अपेक्षा लम्बा है और 'B', C की अपेक्षा लम्बा है तो 'A' अवश्य 'C' से लम्बा होगा।

टिप्पणी

- **वर्गीकरण :** आविर्भाव, आकार या अन्य लक्षणों के अनुसार वस्तुओं के समूह को नाम देने व पहचानने की योग्यता।
- **संवाद :** समझने की योग्यता कि वस्तुओं की मात्रा, लम्बाई और संख्या उनकी व्यवस्था और उपस्थिति से असंबद्ध है।
- **आत्मकेंद्रिकता को छोड़ना :** दूसरे परिप्रेक्ष्य से वस्तुओं को देखने की योग्यता।

इस स्तर पर बच्चे यद्यपि केवल समस्याओं को हल नहीं कर सकते बल्कि वास्तविक वस्तुओं या घटनाओं को लागू कर सकते हैं, काल्पनिक कार्य की अमूर्त्त संकल्पनाओं को नहीं।

औपचारिक परिचालन : इस स्तर की शुरूआत 11 वर्ष की आयु से होती है और यह प्रौढ़ता तक चलती है। इस स्तर पर व्यक्ति मूर्त अनुभवों से बाहर चला जाता है और अमूर्त चिन्तन शुरू कर देता है साथ-ही-साथ मूत रूपों, तार्किक कारण और उपलब्ध सूचना से सारांश निकालता है। बाल्यावस्था अधिक सोचने से शुरू होता है जैसे कि एक वैज्ञानिक सोचता है, समस्याओं का समाधान करने के लिए योजनायें खोजता और समाधानों का व्यवस्थित जांच करता है। वे कल्पनायें विकसित करते हैं या अनुमानों को जांचते हैं और व्यवस्थित रूप से निष्कर्ष निकालते हैं जो कि समस्या समाधान में उन्हें रास्ते का अनुकरण करता है।

इससे गुजरने के पश्चात् विभिन्न स्तरों पर बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के चरित्रों को हम समझें कि सामाजिक विज्ञान को सीखने में बच्चों की सहायता करने में उनका कैसे उपयोग करें।

क्रियाकलाप-11

1. कक्षा VII के विद्यार्थियों को ''शिल्प और उद्योग'' विषय पढ़ाने के लिए गतिविधि यां/अधिगम स्थितियां सुझायें। Piaget की संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के संदर्भ में अपने सुझावों को न्याय संगत ठहरायें।

   .....

   .....

   .....

2. Piaget की संज्ञामात्मक विकास के सिद्धांत के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के लिए अधिगम गतिविधियों में विस्तृत अन्तरों को चित्रित करें।

   .....

   .....

   .....

6.4.2 अधिगमकर्ताओं में संकल्पना निर्माण

संकल्पना निर्माण मान्यता की प्रक्रिया को शामिल करना है कि कुछ वस्तुएं या घटनायें साथ रहें जबकि दूसरे ऐसा नहीं करते हैं। आधार का निर्णय करना बच्चों के लिए अपेक्षित हैं जिस पर वे श्रेणी बनाते हैं। दूसरी तरफ संकल्पना प्राप्ति के लिए अपेक्षित है कि एक बच्चा एक वर्ग की विशेषताओं का आकलन करे जो कि दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में पहले ही बन चुका है। यह उदाहरणों की तुलना और विषमता दिखाकर किया जाता है जो कि लक्षणों को धारण करता है। यहां हमारा उद्देश्य है समझना कि बच्चों के बीच संकल्पना निर्माण कैसे आता है और कैसे हम प्रक्रिया को सुसाध्य कर सकते हैं।

निम्नलिखित गतिविधि, संकल्पना निर्माण की प्रक्रिया को समझने और प्रक्रिया को सुसाध्य करने में भी आपकी सहायता करेगी।

क्रियाकलाप-12

1. बच्चों के खेल पर आपके अवलोकन के आधार पर निम्नलिखित वस्तुओं का जवाब दें:–

(i) दो परिस्थियां उद्घृत करें जिनमें बच्चे एक दूसरे को पढ़ाने में सम्मिलित हैं।

(a) .....

(b) .....

(ii) दो उदाहरण दें कि खेल के दौरान बच्चे कैसे एक दूसरे से सीखते हैं?

(a) .....

(b) .....

2. कक्षाकक्ष या घर में बच्चों के व्यवहार के अवलोकनों के आधार पर निम्नलिखित वस्तुओं का जवाब दें:

(i) दूसरों को देख या सुनकर बच्चे क्या सीखते हैं? दो उदाहरण दें:

(a) .....

(b) .....

(ii) वातावरण सीखने में बच्चों की कैसे सहायता कर सकता है?

उपर्युक्त वस्तुओं का जवाब देते समय आपको अवश्य अनुभव करना चाहिये कि बच्चे का तात्कालिक वातावरण संकल्पना निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संकल्पना निर्माण बच्चों को सूचना की वस्तुओं के निर्माण द्वारा विचारों के अन्वेषण का अवसर प्रदान करता

टिप्पणी

है। संकल्पना निर्माण में आप अपने बच्चों की सहायता कर सकते हैं। यहां आप के लिए कुछ सुझाव हैं:

- लिखित सामग्रियों या वास्तविक वस्तुओं (बीज, पत्तियां) की एक संख्या विद्यार्थियों को दें। यह बेहतर है कि विद्यार्थी वास्तविक वस्तुओं के साथ कार्य करें।
- विद्यार्थियों को एक छोटे समूह में रखें और उन्हें, सामग्रियों को वर्गीकृत या समूह में करने को कहें जो कि समझ बनाता है।
- विद्यार्थियों को उनके समूहों को वर्णनात्मक स्तर देने को कहें।
- विद्यार्थियों को साक्ष्यों या उदाहरणों के साथ वर्णन करे को कहें कि कैसे उन्होंने सामग्रियों को संघटित किया?

संकल्पना निर्माण की शिक्षण रणनीति

प्रत्येक विद्यार्थी या विद्यार्थियों के समूह को एक समान वर्गाकार में कटे तस्वीरों के साथ एक लिफाफा दें। उन्हें नीचे कई श्रेणियों में रखने को कहें जैसा वो चुनते हैं। वे श्रेणियों को एक नाम दें और श्रेणियों के नामकरण के आधार को तर्कसंगत ठहरायें। शिक्षक विद्यार्थियों को कह सकता है कि एक साथ सम्बद्ध वस्तुओं को एक कागज पर चिपकायें। फिर वे प्रत्येक वस्तु को विशिष्ट श्रेणी में स्थान देने के लिए चुन सकते हैं जबकि शेष कक्षा अवलोकन करती है।

6.5 शिक्षा-शास्त्र के उपागम

सामाजिक विज्ञान शिक्षण को विकास के स्तर के साथ-साथ बच्चे के पर्यावरण का लेखा-जोखा रखना जरूरी है। इस पर आधारित शिक्षण बच्चे में संज्ञानात्मक क्षमता सृजित कर सकता है जो कि समाज की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को समझने में उनकी सहायता करता है। हमारे देश में बच्चे तीन मुख्य सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों जैसे–शहरी, ग्रामीण और जनजातीय से जुड़े होते हैं और जो विभिन्न सामाजिक मुद्दों, संकल्पनाओं को प्रदर्शित करते हैं और उनके संकल्पना निर्माण का अद्भूत तरीका है। शिक्षण के उपागम शिक्षाशास्त्र और संसाधनों को सम्मिलित करते हैं अत: तद्नुसार शिक्षण के उपागम परिवर्तित होने चाहिए।

पहले हम सामाजिक विज्ञान शिक्षण के शिक्षा शास्त्र पर विचार विमर्श करें फिर अपने अवलोकनों/अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों को करें और उनके प्रभाव के बारे में सोंचे।

क्रियाकलाप-13

1. उन परिस्थितियों/संकल्पनाओं को सूचीबद्ध करें जिन्हें एक शहरी बच्चा अधिकांश प्रदर्शित करता है (उदाहरण–होटल, सिनेमा, सड़क दुर्घटना)

.....

.....

.....

2. उन परिस्थितियों/संकल्पनाओं को सूचीबद्ध करें जिन्हें एक ग्रामीण बच्चा अधिकांश प्रदर्शित करता है (उदाहरण–गाय, बैलगाड़ी)

.....

.....

.....

3. उन परिस्थितियों/संकल्पनाओं को सूचीबद्ध करें जिन्हें एक जनजातीय बच्चा अधिकांश प्रदर्शित करता है। (उदाहरण–जंगली जीव, जंगल, जनजातीय त्योहार)

.....

.....

.....

6.5.1 डिजाइन करने के निर्देश : विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र का उपयोग

विद्यार्थी अपनी परिस्थितियों, जरूरतों और मुद्दों के आलोचनात्मक प्रेक्षक हैं। आपको उनके लिए समाधान की युक्ति या प्रस्ताव नहीं करना चाहिए। आपको उनकी योग्यताओं के प्रति उन्हें थोड़ा जागरूक करना चाहिए और उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक सोचने और कारण जानने को प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ-साथ उन्हें विभिन्न चीजों पर उनके दृष्टिकोण व्यक्त करने की स्वीकृति होनी चाहिए। आपको उन्हें सुनने और उनके दृष्टिकोणका सम्मान करने के लिए अपने मस्तिष्क को खुला रखना चाहिए फिर भी आप उनमें से अधिक को स्वीकार नहीं करते। इनका एक अद्भूत शिक्षा शास्त्रीय मूल्य है और जब इनका व्यवस्थित उपयोग होता है तो इसे आलोचनात्मक शिक्षा शास्त्र कहा जाता है।

आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र

विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र सोचने या मुद्दों को विवेचनात्मक रूप से प्रवृर्तित करने का अवसर प्रदान करता है जैसे–जनसंख्या वृद्धि, बाल विवाह, औद्योगिकरण, विभिन्न कोणों से

टिप्पणी

राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक आदि। यह मुक्त प्रजातांत्रिक पारस्परिक क्रिया और बहु दृष्टिकोणों की स्वीकृति पर विचार करता है। दूसरे शब्दों में विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र मुक्त निर्णय और बहु दृष्टिकोणों को पहचान और प्रोत्साहित कर सामूहिक निर्णय निर्माण को सुसाध्य करता है। इस शिक्षा शास्त्र में शिक्षक की भूमिका स्वतंत्र चिन्तन को प्रोत्साहित करने, विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से चिन्तन की अनुमति, विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करना, विचारों/दृष्टिकोणों को विश्लेषित करने और सामूहिक निर्णय पर पहुंचने में महत्त्वपूर्ण है।

क्रियाकलाप-14

अपने क्षेत्र के दो उभरते सामाजिक मुद्दों को चुनें और प्रत्येक पर अधिगमकर्ताओं के उनके सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर संभावित दृष्टिकोणों की सूची बनायें।

(a) .....

(b) .....

केस अध्ययन : उड़ीसा का एक जनजातीय बच्चा कैसे सीखता है?

उड़ीसा के एक ठेठ जनजातीय गांव का एक बच्चा सुबह उठता है और अपने सहोदर भाई-बहनों या पालतू जानवरों जैसे सुअर, मुर्गी, बकरी आदि के साथ खेलना शुरू कर देता है। सुबह 7 बजे वह अपने घर के नजदीक झरने पर शौच के लिए जाता है और एक घण्टे के बाद वापस रास्ते में उपलब्ध फलों को लेकर आता है (जैसे–आम, इमली)। 8 बजे से 9 बजे वह भोजन करता है और पास के जंगलों में वृक्षों की कटाई के लिए अभिभावकों का साथ देता है। मैदान में वह अपने साथ लाया भोजन करता है, लकड़ियाँ, फल, पत्तीदार सब्जियां, जड़ आदि एकत्र करता है और अपने छोटे सहादरों का ध्यान रखता है जबकि उनके अभिभावक कार्य कर रहे होते हैं। वह लगभग 5 बजे वापस घर आता है। ऐसी स्थिति में वह अपने अभिभावकों को साथ नहीं देता है। शिक्षक विद्यालय में उपस्थित हैं, वह विद्यालय जाता है और वहां 2-3 घण्टे से अधिक नहीं रुकता है। यदि शिक्षक अनुपस्थित है (जो प्राय: होता है) तो, वह साथियों के साथ खेलने का अवसर पा जाता है या पास के जंगलों में लकड़ी, फल, पत्तीदार सब्जियां, मटर आदि एकत्र करने चला जाता है। लगभग 7 बजे शाम वह अभिभावकों को मादक पदार्थ पीते देखता है और प्राय: समूह में उन्हें अपने साथियों के साथ समूह में नाचते देखता है। वह कभी-कभी साथ भी देता है।

साप्ताहिक बाजार के दिन वह अभिभावकों के साथ कृषि उत्पादों को बेचने के लिए बाजार ले जाता है और दैनिक जरूरतों के सामान जैसे–नमक, किरासन तेल, माचिस, वस्त्र आदि खरीदता है। चैता पर्व, पस पर्व, दशहरा आदि त्योहारों के दौरान वह न तो कभी विद्यालय जाता और नही मैदान में जाता है, बल्कि अपने परिवार और दोस्तों के साथ प्रत्येक स्थिति में लगभग 10 दिनों तक अच्छे भोजन, नये वस्त्र, नृत्य, संगीत का आनंद लेता है। बच्चे के

केस में, वह 'पुश पर्व' के दौरान जंगलों की प्रार्थना के लिए अभिभावकों का साथ देता है। अभिभावकों या अन्यों द्वारा कभी उन पर विद्यालय जाने के लिए दबाव नहीं डाला जाता है।

उड़ीसा के जनजातीय की कहानी का अध्ययन करें ओर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:

1. कहानी में दिये स्थिति/घटनाओं का नाम दें जो कि जनजातीय बच्चों को सामाजिक अध्ययन शिक्षण/अधिगम के लिए आधार बनाया जा सके।
2. जनजातीय बच्चों को सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि का नाम लिखें।
3. संकल्पनाओं/वस्तुओं की सूची बनायें जो कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए अधिगम सामग्रियों या संसाधनों के रूप में प्रयुक्त की जा सकें।

6.6 सारांश

भारत अपनी विविधताओं के लिए एक अविश्वसनीय देश है। नृजातीय उत्पत्ति, धर्म और भाषायें सांस्कृतिक विविधता के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इस देश में 4635 समुदाय पहचाने गये हैं, इनमें से अधिकांश के अपने पहनावे, भाषायें, पूजा के तरीके, व्यवसाय, भोजन आदतें और संबंध है। इसके बावजूद कुछ जातियों, वर्गों और समुदाय एक भिन्न पहचान रखते हैं और इनके अन्य खण्डों की जनसंख्या के साथ जैविक जुड़ाव है। वे विशेषत: संसाधनों, विशेषताओं और स्थानों को साझा कर सांस्कृतिक जुड़ावों को बनाये रखते हैं। इन प्रवृत्तियों ने भारत के संचित संपत्ति और सांस्कृतिक एकता को एक अद्भूत आकार दिया है। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक विज्ञान के विषय वस्तु और शिक्षा शास्त्र के विशेषत: प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या डिजाइन करने वालों और शिक्षकों के समक्ष असंख्य चुनौतियां है।

सामाजिक विज्ञान का विषय वस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से लिये गये हैं। समुदाय, जनसांख्यिकी, संस्कृति, विकास, पर्यावरण ओर उपयोगिता आदि बच्चों की गतिविधियों, अनुभवों और दृष्टांतों में व्यवस्तता के माध्यम से बनी हैं। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण इन पर आधारित है, अधिगमकर्त्ताओं की संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे, अवलोकन, पहचान और वर्गीकरण को सृजित करता है जो कि सामाजिक मुद्दों जैसे गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, संप्रदायवाद की समझ के लिए मौलिक तत्व हैं। अत: शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों के संघटन का लेखा-जोखा रखना चाहिए और बच्चे के विकास के स्तरों के साथ-साथ उसके पर्यावरण का भी लेखा-जोखा रखना चाहिए।

इस पर आधारित शिक्षण बच्चों में संज्ञानात्मक क्षमता सृजित कर सकता हैं जो कि उन्हें समाज की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को समझने में उनकी सहायता करता है। हमारे देश में बच्चे मुख्यत: तीन सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों जैसे शहरी, ग्रामीण, जनजातीय से संबंध रखते

हैं और जो विभिन्न सामाजिक मुद्दों, संकल्पनाओं को प्रदर्शित करते हैं तथा इनका संकल्पना निर्माण का एक अद्भुत तरीका है। शिक्षण के उपागम शिक्षा शास्त्र और संसाधनों को शामिल करते हैं अत: इन्हें तद्नुसार परिवर्तित होना चाहिए।

विद्यार्थी उनकी अपनी स्थितियों, जरूरतों और मुद्दों के आलोचनात्मक प्रेक्षक हैं। आपको उनके लिए समाधान की युक्ति या प्रस्ताव नहीं करना चाहिए। आपको उनकी योग्यताओं के प्रति उन्हें थोड़ा जागरूक करना चाहिए और उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक सोचने और कारण जानने को प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें व्यक्त करने की स्वीकृति दें। साथ-साथ आपको उन्हें सुनने और उनके दृष्टिकोण का सम्मान करने के लिए अपने मस्तिष्क को खुला रखना चाहिए और फिर भी आप उनमें से बहुतों को स्वीकार नहीं करते। इनका एक अद्भुत शिक्षा-शास्त्रीय मूल्य है और अब इनका व्यवस्थित उपयोग होता है तो इसे आलोचनात्मक 'शिक्षा-शास्त्र' कहा जाता है।

6.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

भारतीय भाषायें प्राप्त करें–http.//www.indianchild.com/Indian languages.htm. on 09/11/03

Joyce, B.et.al. (2009): शिक्षण के प्रारूप (8 प्रकाशन), PHI Learning Pvt. Ltd N. Delhi P.P. 103-124

NCERT (2005 : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा कार्य (2005), नई दिल्ली

NCERT (2005) : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा कार्य (2005) : प्रारंभिक स्तर पर कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम, भाग I, नई दिल्ली।

NCERT (2006) : Position Paper : National Focus Group on teaching of social Sciences. New Delhi.

K.S. Singh (1996) : Identity, Ecology, Social Organization, Economy, Linkages and Development Process : A quantitative Profilo New Delhi Oxford University Press and ASI.

L.S. Vygotsky (1978) : Mind in Society: The Development of Biger Psychological Process. Cambridge. MA, Haward University Press : In S. Vosniadou (----) Ed. How children learn, Educational Proctice Series-7, [AE-IBE UNESCO, Switzerland : Available at www.ibe.unesco.org.

6.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों का जवाब दें:

1. एक एकान्तिक संदर्भ (एक या सीमित पृष्ठभूमि वाले बच्चों की कक्षा) की अपेक्षा समावेशी, संदर्भ (विविध पृष्ठभूमियों वाले बच्चों की कक्षा) की कक्षा प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान अधिगम में अधिक सार्थक होती है। दृष्टान्त देकर समझायें।

टिप्पणी

2. प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के प्रभावी शिक्षण अधिगम के लिए संज्ञानात्मक स्तर के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए परिस्थितियों की सूची बनायें जिन्हें आप महत्त्वपूर्ण समझते हैं।

3. स्थितियों/संकल्पनाओं की सूची बनायें जो कि प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक विज्ञान के अधिगम को सुसाध्य करती हैं।

4. स्थितियों/संकल्पनाओं की सूची बनायें जो कि प्राथमिक स्तर पर जनजातीय क्षेत्रों में सामाजिक विज्ञान के अधिगम को सुसाध्य करती हैं।

5. स्थितियों/संकल्पनाओं की सूची बनायें जो कि प्राथमिक स्तर पर शहरी क्षेत्रों में सामाजिक विज्ञान के अधिगम को सुसाध्य करती हैं।

इकाई–7 शिक्षण–अधिगम रणनीतियां

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 अधिगम उद्देश्य

7.2 एक अधिगमकर्ता केंद्रित सामाजिक विज्ञान कक्षा के अपेक्षित सामान्य लक्षण

7.3 एक रणनीति का चयन निर्धारित करने वाले कारक

7.4 शिक्षण–अधिगम रणनीतियां

- *7.4.1. भूमिका निर्वाह*
- *7.4.2. परियोजना विधि*
- *7.4.3. नाटक (ड्रामा)*
- *7.4.4. सहयोगी अधिगम*
- *7.4.5. संकल्पना चित्रण*
- *7.4.6. विवेचनात्मक शिक्षा–शास्त्र*
- *7.4.7. समस्या समाधान*
- *7.4.8. प्रयोगात्मक अधिगम*
- *7.4.9. वृतान्त/कथा वाचन*
- *7.4.10. क्षेत्र का दौरा*
- *7.4.11. विचार–विमर्श विधि*
- *7.4.12. मानचित्र आधारित अधिगम*

7.5 सारांश

7.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.7 अन्त्य इकाई अभ्यास

7.0 प्रस्तावना

हम जानते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विद्यालय का एक विषय है और यह समाज के विविध सम्बद्धों को आवृत करता है तथा इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान

अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, मानव विज्ञान जैसे विषयों से विस्तृत विषय वस्तु को शामिल करता है। सामाजिक विज्ञान का ज्ञान एक शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए अपरिहार्य है। हम जैसे एक बहुलवादी समाज में यह महत्त्वपूर्ण है कि सभी धर्म एवं सामाजिक समूह सामाजिक विज्ञान में पाठ्यपुस्तकों को जोड़ने में सक्षम है। NCF (2005) कहता है कि विषय वस्तु स्थानीय संसाधनों से लिये गये गतिविधियों के माध्यम से संप्रेषित होनी चाहिए।

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण अधिगमकर्ताओं में मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता, विश्वास, आपसी सम्मान तथा विविधता के लिए सम्मान की एक मजबूत समझ सृजित करता है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण विद्यार्थियों में एक विवेचित, नैतिक तथा मानसिक ऊर्जा उत्पन्न करने पर लक्षित होना चाहिए तथा उन्हें सामाजिक शक्तियों के प्रति सजग करने वाला होना चाहिए जो कि इन मूल्यों को धमकाते हैं।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को एक अंत: क्रियात्मक पर्यावरण में संघटित किया जाना जरूरी है ताकि यह अधिगमकर्ता को ज्ञान, अपेक्षित कौशलों एवं मनोवृत्तियों को अर्जित करने में सहायता करें। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के शिक्षाशास्त्र और संसाधनों के उपागमों पर चर्चा करते समय NCF (2005) उन विधियों पर प्रकाश डालता है जो कि सृजनात्मकता, सौंदर्यात्मक एवं विवेचित परिप्रेक्ष्यों को प्रोन्नत करते हैं। यह समस्या समाधान, नाटक तथा भूमिका निर्वाह एवं दृश्य-श्रव्य सामग्रियों के साथ फोटो ग्राफ्स, चार्ट और मानचित्रों तथा भूतात्विक प्रतिकृति एवं द्रव्यात्मक संस्कृतियों के अभिष्टतम उपयोग जैसी शिक्षण-विधियों के उपयोग का सुझाव देता है।

सामाजिक विज्ञान की कक्षा जैसी अन्य दूसरी कक्षा में विविध जरूरतों वाले अधिगमकर्ता होते हैं। अधिगमकर्ता विविध प्रकार की विभिन्न अशक्तताओं, विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों, अल्पसंख्यकों, अपने क्षेत्र में अंतरों या प्रदत्त या असहाय समूहों से हो सकते हैं। जैसाकि प्रत्येक बच्चे को गुणवत्ता शिक्षा का अधिकार है, यह प्रत्येक शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है कि इन अंतरों का सम्मान करें एवं सामाजिक विज्ञान में प्रत्येक अधिगमकर्ता की जरूरतों का पोषण करने में सामाजिक विज्ञान में गुणवत्ता शिक्षा के लिए प्रयास करना उत्तरदायित्व है। अधि गमकर्ताओं का उनके अंतरों का ध्यान दिये बगैर शिक्षक द्वारा देखभाल किया जाना चाहिए।

अत: वह एक अधिगम वातावरण सृजित करता है जो कि एक सामाजिक विज्ञान कक्षा में सभी अधिगमकर्ताओं की देखभाल करता है। यह इकाई सामाजिक विज्ञान में शिक्षण अधिगम की कुछ रणनीतियों के निरूपण का प्रयास करती है।

7.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप सक्षम होंगे:

- एक अधिगमकर्ता केंद्रित सामाजिक विज्ञान कक्षा के लक्षणों का वर्णन करने में।
- एक रणनीति के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों को पहचानने में।

टिप्पणी

- एक दी गई इकाई में शिक्षण के लिए समुदाय में उपलब्ध संसाधनों को पहचानने में।
- एक चयनित विषय को पढ़ाने में प्रयुक्त होने वाले शिक्षण अधिगम सामग्रियों की सूची बनाने में।
- भूमिका निर्वाह के लक्षणों का वर्णन करने में।
- परियोजना विधि के लाभों को पहचानने में।
- एक चयनित विषय पर एक परियोजना के लिए एक योजना को लिखने में।
- नाटक में एक शिक्षक की भूमिका का वर्णन करने में।
- एक संकल्पना मानचित्र के लक्षणों का विश्लेषण करने में।
- विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र का उपयोग करने के लिए एक योजना लिखने में।
- समस्या समाधान में चरणों का वर्णन करने में।
- एक दिये गये विषय पर आनुभविक अधिगम के लिए जरूरत को न्यायसंगत ठहराने में।
- विषयों या विषयों के एक अंग को पहचानने में जो कि कहानियों के वर्णन के माध्यम से पढ़ाये जा सकते हैं।
- कथा वाचन विधि के माध्यम से विषय वस्तु का वर्णन करने में।
- मैदानी दौरा आयोजित करने के लिए जरूरत का वर्णन करने में।
- विद्यार्थियों मे मानचित्र पठन कौशलों का विकास करने के लिए जरूरत की व्याख्या करने में।
- मानचित्रों से अनुमान के कौशल को विकसित करने का निरूपण करने में।
- (मुझे सभी उपर्युक्त उद्देश्यों को संगठित कर एक उद्देश्य लिखने को कहा गया था। मैंने पाया कि यह बहुत मुश्किल है क्योंकि इनके विभिन्न लक्षण है। कृपया इसे इसमें देखें)।

7.2. एक अधिगमकर्ता केंद्रित सामाजिक विज्ञान कक्षा के सामान्य लक्षण

सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले एक शिक्षक का उत्तरदायित्व है कक्षा को रुचिकर बनाना। यह तभी संभव है जब अधिगमकर्ता शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। सामान्य लक्षण जो एक सामाजिक विज्ञान की कक्षा में अपेक्षित हैं पर निम्नलिखित अनुच्छेद में चर्चा किया गया है।

(i) **अधिगमकर्ताओं के अनुभवों का उपयोग करना**–प्रत्येक अधिगमकर्ता समाज का एक सदस्य है और अपने वाातवरण से सक्रियता से अंत:क्रिया करता है। अधिगमकर्ताओं के

अनुभव शिक्षण के लिए अच्छे संसाधन हैं। अधिगमकर्ताओं के अनुभवों का उपयोग करना अधिगमकर्ताओं को व्यक्त करने के साथ-साथ कक्षा-कक्ष प्रक्रियाओं में भाग लेने का एक अवसर देता है।

उदाहरण–जब आप कृषि में प्रयुक्त प्रक्रियाओं को पढ़ाते हैं, आप विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि किसने उन प्रक्रियाओं को देखा हैं, उन्हें वर्णन करने को कह सकते हैं।

(ii) **पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पढ़ना**–एक संसाधनपूर्ण शिक्षक विषय वस्तु को हमेशा अधिगमकर्ताओं के ज्ञान वातावरण से संबद्ध करता है। यह विषय वस्तु की समझ को आसान बनाता है।

उदाहरण–जब आप भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में बात करते हैं तो आप अधिगमकर्ताओं को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के राज्य के क्षेत्र का पता लगाने को कह सकते हैं।

(iii) **समुदाय के संसाधनों का उपयोग करना**–समुदाय दोनों प्रकार के संसाधनों मानवीय एवं प्राकृतिक का एक भंडार गृह है। विद्यालय एवं समुदाय के बीच एक मजबूत जुड़ाव की जरूरत है। इसे विद्यालय गतिविधियों में समुदाय को शामिल करके ही प्राप्त किया जा सकता है। इसे दो तरीके से किया जा सकता है। पहला अधिगमकर्ताओं के समुदाय के अनुभवजन्य अधिगम को लेता है और दूसरा समुदाय को विद्यालय में आमंत्रित करता है।

उदाहरण–जब समुदाय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है तो विद्यालय के छात्र कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं। यदि विद्यालय स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर कोई परिचर्चा आयोजित करना चाहता है तो बच्चों को संबोधित करने के लिए स्थानीय कार्यकर्ताओं को आमंत्रित कर सकता है।

क्रियाकलाप-1

कृपया अपने पड़ोस में समुदाय के संसाधनों को पहचानें जो सामाजिक विज्ञान कक्षा में प्रयुक्त हो सकते हैं तथा उन्हें कक्षा के किसी एक अध्याय में सूचीबद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

.....

(iv) **सामाजिक मुद्दों में अन्वेषण के लिए स्थान सृजित करना**–सामाजिक विज्ञान शिक्षण का एक उद्देश्य है बच्चों को समाज की चुनौतियों एवं समस्याओं के प्रति

टिप्पणी

संवेदनशील बनाना। शिक्षक जब तक स्थानीय मुद्दों को पाठ से नहीं जोड़ते हैं, बच्चे अपने समाज के मुद्दों को तब तक समझ नहीं पाते हैं। इसलिए आपसे सामाजिक विज्ञान कक्षा में सामजिक मुद्दों के अन्वेषण के अवसरों को सृजित करना अपेक्षित है।

उदाहरण–लैंगिक भेदभाव हमारे देश के अधिकांश भागों में प्रचलित सामाजिक मुद्दों में से एक है। लैंगिक भेदभाव में किये जाने वाले कार्यों का पता लगाने के लिए बच्चों द्वारा उनके पड़ोस के घरों में दौरा कर एक अध्ययन किया जा सकता है। आप बच्चों के साथ एक अध्ययन की योजना कर सकते हैं कि लैंगिक भेदभाव पर क्या सूचना एकत्रित करना जरूरी है, कितने घरों से, कहां से तथा डाटा को कैसे संकलित किया जाता है तथा खोजों को लिखा जाता है। बच्चों को उन्हें स्वयं कार्य को साझा करने को कहा जाना चाहिए।

क्रियाकलाप-2

अपने क्षेत्र से कोई एक सामाजिक मुद्दा चुनें। मुद्दे के बारे में अधिक सूचना अन्वेषित करने के लिए बच्चों को शामिल करते हुए एक योजना बनायें।

.....

.....

.....

.....

.....

(v) **मानव अधिकारों की चर्चा करना**–सामाजिक विज्ञान एक विषय है जिसमें मानव अधिकारों की चर्चा के लिए प्रचुर विस्तार है। अधिगमकर्ताओं को एक समाज को सृजित करने में इन अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया जाना चाहिए जो कि लोगों को सम्मान करते हैं।

उदाहरण–आधारभूत स्वास्थ्य सेवायें एक मानवाधिकार है। राज्य की नीति के निर्देशक सिद्धांतों के बारे में चर्चा करते समय आप चर्चा कर सकते हैं कि कैसे मानवाधिकार इन नीतियों में प्रदर्शित होता है।

(vi) **जीवन कौशलों को विकसित करने के लिए स्थान सृजित करना**–सामाजिक विज्ञान सीखने की प्रक्रिया में अधिगमकर्ताओं को शामिल कर, शिक्षकों से अपेक्षित है कि वे जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सशक्त हैं। उन्हें सशक्त करने के तरीकों में से एक है उनमें जीवन कौशलों को विकसित करना। जीवन कौशल अनुकूली एवं सकारात्मक व्यवहार के लिए योग्यतायें हैं जो कि एक व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों एवं चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में समर्थ करता है।

उदाहरण–प्रभावी संप्रेषण जीवन कौशलों में से एक है। आप सामाजिक विज्ञान की कक्षा में अधिगमकर्ताओं से चयनित विषय पर बोलने को कहकर, विषय से संबंधित पाठ्यसहगामी गतिविधियों को आयोजित कर, वर्तमान यात्रा खातों, विद्यालय सूचना बोर्ड का रख-रखाव आदि कर अवसरों को सृजित कर सकते हैं।

(vii) **दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का उपयोग कर**–हम सभी जानते हैं कि जो हम देखते और अनुभव करते हैं, हमारी स्मृति में जो हम सुनते है की अपेक्षा अधिक लम्बे समय तक बनी रहती हैं। यह अधिगम को भी अच्छी प्रकार पकड़े रहता है। जैसा कि सामाजिक विज्ञान में अध्ययन के लिए प्रचुर विषय वस्तु है। यदि शिक्षक केवल चॉक और वाचन विधि का उपयोग करता है तो यह विशेष रूप से मूर्त संकल्पना को समझने में बच्चों के लिए मुश्किल है। दृश्य श्रव्य सामग्रियों में सामाजिक विज्ञान की कक्षा को जीवन देने की शक्ति है। यद्यपि NCF 2005 ने दृश्य-श्रवय सामग्रियों के संसाधनों के अधिकतम उपयोग का सुझाव दिया है।

उदाहरण–कपास/सिल्क/जूट उद्योग के बारे में शिक्षण करते समय, आप एक वीडियो क्लिप का उपयोग कर सकते हैं जो कृषि जीवन से लेकर तैयार सामग्रियों के विपणन तक उद्योग के विभिन्न चरणों को दिखाता है। यदि यह संभव नहीं है तो कम-से-कम औद्योगिक केंद्रों की स्थिति को दिखाने वाले चार्ट एवं नक्शों को अधिगमकर्ताओं को दिखा सकते हैं। जब कभी भी संभव हो देखने एवं अनुभव प्रदान करने के लिए कक्षा में सैम्पल भी लाये जा सकते हैं।

(vii) **बहु दृष्टिकोण के लिए सम्मान**–भारत एक प्रजातांत्रिक देश है और नागरिकों को उनके दृष्टिकोणों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। इस मूल्य को अधिगम वातावरण सृजित कर विद्यालय में बोया जाता है। सामाजिक विज्ञानों में आप जब कुछ मुद्दों पर चर्चा करते हैं तो विद्यार्थियों को उनके दृष्टिकोणों को व्यक्त करने की अनुमति दें। प्रत्येक को समान अवसर प्रदान करें। यह प्रत्येक अधिगमकर्ता को अन्यों के दृष्टिकोणों को सम्मान प्रदान करेगा, एक भय मुक्त वातावरण सृजित करेगा जो अधिगम में सहायक है।

उदाहरण–हम सभी जानते हैं कि बांध का निर्माण सैकड़ों गांवों के विनाश में परिणत हो जाता है, लोगों के विस्थापन, वनों के विनाश आदि में परिणत हो जाता है। यह एक मुद्दें को जन्म देता है कि क्या हमें बांध के निर्माण को प्रोत्साहित करना चाहिए? वाद-विवाद के लिए आप द्वारा एक प्लेटफार्म सृजित हो सकता है जो दूसरे के दृष्टिकोणों पर बिना टिप्पणी किये अधिगमकर्ताओं को उनके दृष्टिकोण व्यक्त करने की स्वीकृति देता है।

क्रियाकलाप-3

अपने परिवेश के एक महत्त्वपूर्ण मुद्दे के बारे में सोचें और वर्णन करें कि कैसे आप अधिगमकर्ताओं को उनके दृष्टिकोणों को व्यक्त करने का एक वातावरण सृजित करेंगे?

टिप्पणी

.....

.....

.....

.....

.....

(ix) **बहुभाषावाद का उपयोग**–एक सामान्य अर्थ में दो से अधिक भाषाओं के उपयोग को बहुभाषावाद के रूप में जाना जाता है। विद्यालय प्रणाली में हमारे जैसे देश में जहां हमारी हजारों बोलियां है, संभव है कि बच्चे की मातृभाषा निर्देश के लिए प्रयुक्त भाषा से भिन्न हो। ऐसे विद्यालयों में अधिगमकर्ताओं को भाषा की बाधा के बगैर संकल्पना को समझने में सहायता के लिए एक शिक्षक बच्चे की मातृभाषा का उपयोग कर सकता है। यह बच्चों के बड़े समूह को जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है उसका शब्दशः अनुवाद नहीं है। किन्तु कभी-कभी बच्चे की भाषा में शब्दों के अर्थ को समझाना है। यह केवल तभी संभव है जब शिक्षक बच्चे की भाषा जानता है। कभी-कभी दूसरे बच्चों से भी सहायता ली जा सकती है यदि शिक्षक आत्मविश्वास अनुभव करता है कि बच्चा अन्य बच्चे की भाषा में सही शब्द देगा।

उदाहरण–इतिहास में महत्त्वपूर्ण शब्दों जैसे स्मारकों, शिलालेख, भूतात्विक साधनों आदि का परिचय कराते समय आप बच्चे की भाषा में शब्द ढूंढ़ने की कोशिश कर सकते हैं तथा उनका कक्षा में उपयोग कर सकते हैं। आप भविष्य में उपयोग के लिए स्वयं के शब्दकोश को तैयार करने में बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। सभी के फायदे के लिए कक्षा में सामाजिक विज्ञान में बहुभाषा के चार्ट प्रदर्शित हो सकते हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि उपर्युक्त सभी लक्षण सामाजिक विज्ञान की प्रत्येक कक्षा में प्रदर्शित होने चाहिए। किन्तु आप के द्वारा कक्षा में जितना अधिक संभव है ये प्रदर्शित करने के प्रति एक प्रयास किया जाता है।

7.3. एक रणनीति के चयन को निर्धारित करने वाले कारक

यद्यपि सामाजिक विज्ञान के शिक्षण अधिगम में बहुत सी रणनीतियां हैं किन्तु शिक्षक निर्णय लेता है कि दी गयी कक्षा में उपयुक्त रणनीति क्या है। अब हम उन कारकों पर चर्चा करते हैं जिन पर एक रणनीति का चयन करते समय विचार करना जरूरी है।

(i) **उद्देश्य**–प्रत्येक इकाई बच्चों को कुछ उद्देश्य के साथ पढ़ायी जाती है। उद्देश्य के प्रकार-ज्ञान, समझ, कार्यान्वयन कौशल आदि पर निर्भर रणनीति का चयन आप करते हैं।

(ii) **विषयवस्तु**–प्रत्येक विषय वस्तु भिन्न रणनीतियों की मांग करता है। मान लें विषयवस्तु भूत (बीते हुए) को दृश्य कराने की मांग करता है तो रणनीति होनी चाहिए कथा वाचन।

इसी प्रकार आप विषय वस्तु का विश्लेषण करते हैं और फिर रणनीति पर निर्णय लेते हैं।

(iii) **संसाधनों की उपलब्धता**–रणनीति के निर्णय में संसाधन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक एक अच्छी रणनीति को सोचता है किन्तु यदि संसाधन उपलब्ध नहीं हैं तो नियत रणनीति का अनुकरण करना शिक्षक के लिए संभव नहीं है। अन्यथा रणनीति संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर निर्धारित होती है।

(iv) **विद्यार्थियों की योग्यता**–किसी निर्णय के लिए विद्यार्थी केंद्र बिन्दु हैं। विद्यार्थियों की रूचि, कौशल और योग्यता के आधार पर आपको रणनीति का चयन करना पड़ता है।

(v) **शिक्षक की संसाधन सम्पन्नता**–शिक्षण रणनीति के निर्धारण एवं संसाधनों के दोहन में शिक्षक एक बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। यद्यपि रणनीति के निर्धारण की प्रक्रिया में विद्यार्थियों से भी सलाह ली जाती है। यदि शिक्षक एक निश्चित रणनीति के अनुकरण को नियत करता है तो यह होगा क्योंकि यह वही है जो कक्षा का निदेशक है।

क्रियाकलाप-4

शिक्षण रणनीति के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की सूची बनायें।

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 शिक्षण-अधिगम रणनीतियां

सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखने को प्रेरित होते हैं और अधिगम में सक्षम हैं तथा यह विद्यालय के बाहर और भीतर दोनों जगह होता है। यद्यपि बच्चे व्यक्तिगत एवं समूह में भिन्न तरीकों से सीखते हैं। NCF 2005 कहता है कि बच्चों को चीजों को बनाने और करने, अनुभव करने, प्रयोगीकरण, पढ़ने, विचार विमर्श, सुनने, सोचने, प्रदर्शित करने और स्वयं को वाणी, गति और लेखन में व्यक्त करके सीखने के अवसरों की अपेक्षा है। यहां तक कि नई शिक्षा नीति 1986 'बच्चा केंद्रत एवं गतिविधि आधारित अधिगम की प्रक्रिया' की वकालत करती है। इसलिए उपयुक्त रणनीतियों के अनुकरण द्वारा एक अधिगम वातावरण सृजित करना तथा बच्चों को उसका ज्ञान बनाने में सहायता करना एक शिक्षक का उत्तरदायित्व हो जाता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि आपको अपनी कक्षा में इन्हें अभ्यास नहीं करना है। जानते हुए या

टिप्पणी

अज्ञानतावश एक अनुभवी शिक्षक के रूप में आपको विषय को पढ़ाते समय उन्हें अवश्य अभ्यास करना चाहिए। किन्तु उनकी समझ निश्चित रूप से आपकी ज्ञान की सीमा को उन्हें एक बेहतर तरीके से लागू करने में विस्तृत करेगा। कुछ रणनीतियां जो सामाजिक विज्ञान के शिक्षण और अधिगम में प्रयुक्त हो सकती है निम्नलिखित उप-खण्डों में वर्णित की गई हैं।

7.4.1 भूमिका निर्वाह

'भूमिका' शब्द एक क्रम में एक भाग की स्वीकृति को अंतर्निहित करता है तथा निर्वाह का अर्थ है अभिनय करना। भूमिका निर्वाह एक ड्रामा की तुलना में अधिक नमनीय है। ड्रामा का एक निश्चित प्रसंग होता है, संवाद पूर्व निर्धारित होते हैं, घटनाओं के क्रम का सख्ती से पालन होता है आदि। भूमिका निर्वाह इनमें से कोई नहीं है।

भूमिका निर्वाह में प्रसंग हो सकता है किन्तु संवाद विद्यार्थियों या अभिनेताओं के एक समूह द्वारा विकसित होगा। कभी-कभी भूमिका निर्वाह बिना आवश्यक पूर्वाभ्यासों के आयोजित होते हैं।

भूमिका निर्वाह के चरण

1. प्रसंग को निश्चित करना या एक प्रसंग पर निर्णय लेना जो पाठ्य वस्तु से संबंधित है।
2. भूमिकाओं के प्रकार, विद्यार्थियों की अपेक्षित संख्या पर निर्णय लेना तथा एक नमनीय तरीके से संवाद विकसित करना।
3. एक छोटा पूर्वाभ्यास आयोजित हो सकता है, यदि संवाद शामिल हो गये हों।
4. भूमिका निर्वाह का सामान्य पोशाकों के साथ या उसके बिना अभिनय करना।
5. शिक्षक एवं सहपाठियों के द्वारा प्रतिपुष्टि।

आप जब एक पाठ्य वस्तु पर विचार करते हैं तो चरण परिवर्तित हो सकते हैं। भाषा की पाठ्य पुस्तक में सामाजिक विज्ञान विषय वस्तु पर नाटक के रूप में अध्याय हो सकते हैं। उदाहरण के लिए जब आप पाठ में दिये गये संवादों का अभ्यास करने विद्यार्थियों को करवाना चाहते हैं तो वहां बदलाव के लिए अधिक स्थान नहीं होता है।

निदर्शन–पंचायत अध्यक्ष की भूमिका का निर्वाह करें जो ग्राम सभा के सदस्यों को संबोधित कर रहा है।

भूमिका निर्वाह विद्यार्थियों को निश्चित मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने में सहायक है तथा उन्हें दी गयी भूमिकाओं में रखकर शामिल परेशानियों को समझने में सहायक है। यह उनमें आत्मविश्वास, संवाद कौशल आदि विकसित करता है जो जीवन कौशलों का एक अंग है।

ली जाने वाली सावधानियां–भूमिकाओं का चयन करते समय ध्यान देना चाहिए कि किसी की भावनायें आहत न हों। यहां तक कि इनके लिए अभ्यास अपेक्षित नहीं होता है, यह बेहतर है कि उनके स्तर पर कम से कम एक बार अभ्यास हो।

7.4.2. परियोजना विधि (छोटे समूहों में कार्यरत)

क्रियाकलाप-5

एक विषय पहचानें जिसमें भूमिका निर्वाह के लिए स्थान है। भूमिकाओं को लिखें और विद्यार्थियों को भूमिकाओं के लिए चुनें। भूमिका निर्वाह का अभिनय करने में आप विद्यार्थियों को क्या दिशा निर्देश देना चाहेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

एक परियोजना एक गतिविधि आधारित विधि है जो अधिगमकर्ताओं को वास्तविक जीवन के अनुभवों को प्रदान करता है। यह एक समस्यात्मक कार्य है जो प्राकृतिक व्यवस्था में होता है। यह विधि अन्य विधियों जैसे मैदानी दौरा, गतिविधि आधारित विधि, सहयोगात्मक अधिगम, संकल्पना चित्रण, मानचित्र आधारित अधिगम आदि के लक्षणों को एकीकृत करने का अवसर प्रदान करती है।

परियोजना विधि के मुख्य सिद्धांत

(i) **उद्देश्य का सिद्धांत**–उद्देश्य का ज्ञान एक बड़ा उत्प्रेरण है जो बच्चे को उसके लक्ष्य को साकार करने में प्रेरित करता है। विद्यार्थी के पास एक उद्देश्य अवश्य होना चाहिए कि 'वह निश्चित चीजों को क्यों कर रहा है?' उद्देश्य अधिगम को प्रेरित करता है। लक्ष्यहीन एवं निरर्थक गतिविधियों से रूचि जाग्रत नहीं हो सकती है।

(ii) **गतिविधि का सिद्धांत**–विद्यार्थियों को अवसर प्रदान किये जाने चाहिए जो उन्हें सक्रिय बनाते हैं और चीजों को करके सीखते हैं। उन्हें शारीरिक के साथ-साथ मानसिक गतिविधियां भी दी जाती हैं। वे करने की स्वीकृति देती हैं और करने के माध्यम से जीने की स्वीकृति देती हैं।

(iii) **अनुभव का सिद्धांत**–अनुभव सर्वोत्तम शिक्षक है। जो सीखा जाता है उसे अवश्य अनुभूत होना चाहिए। बच्चे अनुभव के माध्यम से नये तथ्यों और सूचनाओं को सीखते हैं।

(iv) **सामाजिक अनुभव का सिद्धांत**–बच्चा एक सामाजिक जीव है और हमें विद्यार्थी को

टिप्पणी

सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना है। उसे एक व्यावसायिक जीवन के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। परियोजना विधि में विद्यार्थी समूहों में कार्य करते हैं।

(v) **वास्तविकता का सिद्धांत**–जीवन वास्तविक है और शिक्षण सार्थक होती है तथा वास्तविक भी। परियोजना विधि बच्चे को शिक्षा देने की एक विधि है और इसलिए इसे भी वास्तविक होना चाहिए। वास्तविक जीवन की स्थितियां विद्यालय जीवन में प्रस्तुत होनी चाहिए।

(vi) **स्वतंत्रता का सिद्धांत**–एक गतिविधि की इच्छा स्वत: प्रवर्तित होनी चाहिए, शिक्षक द्वारा बल पूर्वक नहीं। विद्यार्थी आरोपण, बाध्यताओं या बाधाओं से मुक्त होने चाहिए ताकि वे पूर्ण एवं मुक्त रूप से स्वयं को व्यक्त कर सकें। उन्हें एक गतिविधि चुनने, अपनी रूचियों, जरूरतों एवं क्षमताओं से गतिविधि करने की स्वतंत्रता अवश्य दी जाये।

(vii) **उपयोगिता का सिद्धांत**–ज्ञान तभी लायक होगा जब यह केवल लाभप्रद एवं व्यवहारिक हो। यह विधि विविध मनोवृतियों एवं मूल्यों की विकसित करता है जिनकी व्यवहारिक दृष्टिकोण से बहुत सार्थकता है।

एक अच्छी परियोजना के लक्षण–एक अच्छी परियोजना वह है जिसपर कार्य करना विद्यार्थियों को रूचिकर लगता है तथा जो चुनौतीपूर्ण है। इसे साथ कार्य करने और सहयोगी भावना विकसित करने का समृद्ध अनुभव प्रदान करना चाहिए। एक परियोजना जो उपयोगी है और एक तर्क संगत समय पर पूर्ण होती है हमेशा सराही जाती है।

चरण–सामूहिक स्थिति में परियोजना कार्य में अपनाये जाने वाले चरण दिये गये हैं। कृपया देखें कि परियोजना कार्य के प्रत्येक चरण पर निर्णय में विद्यार्थी सम्मिलित है।

- समूहों की संरचना
- एक विषय का चयन
- उप विषयों को पहचानना
- प्रत्येक उप विषय के अंतर्गत होने वाले कार्य को सूचीबद्ध करना
- उप विषय का चयन
- समूह के प्रत्येक सदस्य द्वारा एक विशिष्ट कार्य की स्वीकृति (समूह में चर्चा के द्वारा)
- संसाधनों एवं सूचना का संग्रहण
- प्रस्तुती के लिए तैयारी
- समूह प्रस्तुतीकरण
- विचार विमर्श और साथी/शिक्षक प्रतिपुष्टि

टिप्पणी

अच्छाइयां–यह हमेशा जीवन से संबद्ध अधिगम के सिद्धांतों पर आधारित होता है तथा जितना संभव है विद्यालय के सभी विषयों से जोड़ता है। यह विद्यार्थियों के सम्मान को श्रम के साथ और जीवन के प्रजातांत्रिक तरीके से बनाये रखने के लिए अवसर प्रदान करता है। समस्या समाधान कौशल का विकास करने के लिए प्रचुर विस्तार है।

खामियां–परियोजना विधि का अनुकरण करते समय नियमित समय सारणी को अस्त-व्यस्त करने के अवसर रहते हैं तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारी से सहयोग प्राप्त करने में मुश्किल होती है। यदि शिक्षक उपयुक्त योजना करने में असफल रहता है तथा विद्यार्थियों को उपयुक्त दिशा निर्देश देने में असफल रहते हैं तो संदेह हो सकता है और समय एवं श्रम की बर्बादी हो सकती है।

शिक्षक की भूमिका–परियोजना का सफल होना निश्चित प्रक्रिया पर आधारित होना चाहिए। विद्यार्थियों को वैसी स्थितियां जिसमें उनकी कुछ व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने के लिए एक स्वत: आग्रह अनुभव होना चाहिए को प्रदान करने का पहला और मुख्य उत्तरदायित्व शिक्षक का है। शिक्षक को उनकी रूचियों, पसंद, प्रवृति तथा जरूरतों के अन्वेषण की पहरेदारी अवश्य करनी है। स्थितियां प्रदान करने की विभिन्न विधियां हैं। जितना संभव हो समस्यायें एवं स्थितियां जो विद्यार्थियों को प्रदान की गई हैं सामाजिक होनी चाहिए। यह बेहतर सामाजिक प्रशिक्षण प्रदान करता है और अधिक संतुष्टि देता है।

शिक्षक उनकी रूचि के विभिन्न विषयों पर कक्षा के साथ बातचीत कर सकता है। उन्हें विभिन्न दृश्यों की तस्वीरें दिखायी जा सकती हैं। स्थानीय स्थितियों का सर्वेक्षण किया जा सकता है। शिक्षक लाभप्रद स्थितियां प्रदान करने में सभी संसाधनों को जोड़ता है। अधिकांश शिक्षकों का दृष्टिकोण है कि विद्यार्थियों को स्वयं परियोजनाओं का चयन करना चाहिए। वे सोचते है कि ये छात्रों को उद्देश्य बनाने में प्रेरित करेगा और वे अपने कार्य में अधिक रूचि लेंगे यदि वे जो कार्य कर रहे हैं उसका निर्धारण करने में साझा करते हैं। अन्य जो सोचते हैं कि शिक्षकों को परियोजनाओं का चयन करना चाहिए तर्क देते हैं कि यह विधि सुनिश्चित करेगी कि विद्यार्थी केवल उन परियोजनाओं को अपनाते हैं जो उनकी पहुंच में हैं। विद्यार्थी अपरिपक्व हैं और उन्हें उनकी परियोजनाओं का चयन करने में प्रर्याप्त दिशा निर्देश अपेक्षित है।

निरूपण

विषय : हमारी कृषि

विद्यार्थियों की संख्या : 40

समूहों की संख्या : 8

प्रत्येक समूह में सदस्यों की संख्या : 5

उप विषय

समूह 1 : कृषि का अर्थ एवं प्रकार

टिप्पणी

समूह 2 : स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय कृषि की स्थिति

समूह 3 : स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय कृषि की स्थिति

समूह 4, 5, 6 : खाद्य फसलें

समूह 7 एवं 8 : नगदी फसलें

प्रत्येक समूह द्वारा निष्पादित होने वाली अपेक्षित गतिविधियां :

1. सूचना संग्रह करना
2. चार्ट एवं नक्शा तैयार करना
3. नमूना संग्रह करना (जहां संभव हो)
4. इंटरनेट से तस्वीरें डाउनलोड करना या तस्वीरें संग्रह करना
5. विवरण तैयार करना
6. प्रस्तुतीकरण एवं विचार विमर्श

तैयारी के लिए दिया गया समय : दो सप्ताह

कक्षा में गतिविधियों के निष्पादन के लिए दिया जाने वाला समय (अंतिम रूप) : 4 शिक्षण घंटे (लगभग) विचार विमर्श द्वारा अपनाये गये कार्य के समूह प्रस्तुतीकरण के लिए किया जाने वाला समय : 30 मिनट प्रत्येक समूह (लगभग)

समूह कार्य के समाप्त होने के बाद उत्पाद को शेष कक्षा के साथ साझा किया जाता है। यह साझा पढ़ने के माध्यम से/दृश्यों के साथ कार्य के एक प्रतिवेदन को प्रस्तुत कर किया जा सकता है। समूह के प्रत्येक सदस्य कक्षा में कार्य के कुछ भाग को प्रस्तुत करेंगे और चर्चा में भाग लेंगे। शिक्षक एवं साथी भविष्य में बेहतर निष्पादन के लिए प्रतिपुष्टि देंगे।

प्रगति जाँच-1

1. परियोजना कार्य में एक समूह के लक्षणों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

2. परियोजना कार्य की अच्छाईयां क्या हैं?

.....

.....

.....

क्रियाकलाप-6

एक विषय चुनें जिसका समूहों में परियोजना कार्य के लिए विस्तार हो। लिखें कि कैसे आप कार्य को बांटना चाहेंगे और विद्यार्थियों को कार्य पूर्ण करने का निर्देश दें। वर्णन करें कि आप कैसे प्रस्तुतीकरण सत्र को संगठित करेंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

7.4.3 नाटक (ड्रामा)

हममें से सभी ने नाटक देखे हैं–पारंपरिक एवं आधुनिक दोनों। मंच प्रस्तुतीकरण के विभिन्न प्रकार हैं जैसे निरर्थक थियेटर, नुक्कड़ नाटक, यक्षगान आदि। हम सभी जानते हैं कि नाटक के मनोरंजन के मूल्य हैं। क्या उनके शैक्षिक मूल्य भी है? क्या हम कक्षाकक्ष अधिगम को बढ़ाने के लिए थियेटर तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं।

नाटक का अर्थ है पूर्व निर्धारित संवादों का समुच्चय जो बोले जाते हैं, अभिनेताओं के अभिनय के साथ भंगिमाओं, संगीत एवं नृत्य तथा जैसा मामला हो सकता है के विशेष प्रभाव के साथ-साथ चलता है।

नाटक स्थिर रूप से पूर्व निर्धारित लिखित अंग हैं। बने-बनाये नाटक हैं किन्तु वे अध्याय के विषय और विद्यार्थियों के स्तर को नहीं अपना सकते हैं। यह एक रूचिपूर्ण शिक्षक की मांग करता है जो अध्याय में थियेटर के अंग को पहचानता है और कभी-कभी वह संवादों को भी विकसित करता है। वह विद्यार्थियों को पहचानता है जिनके पास अभिनय के लिए एक कौशल होता है और उन्हें भूमिकायें देता है या जरूरतों पर निर्भर पसंद की स्वीकृति देता है। पूर्वाभ्यास संगीत या पोशाक के साथ या बिना, अधिक संख्या में होते हैं। शुरू करने के लिए वहां उपकरणों में संगीत नहीं हो सकता है किन्तु धीरे-धीरे वे सभी प्रवर्तित हो जाते हैं।

नाटक के आयोजन के चरण

- पाठ में रंगमंच के तत्वों का निर्धारण करना
- पाठ में उस विषय से संबद्ध एक नाटक को ढूंढ़ना एवं पता लगाना
- पाठ के उपयुक्त होने के लिए नाटक को परिवर्तित करना
- विद्यार्थियों का निर्णय करना जो ड्रामा में विभिन्न भूमिकाओं में सही होंगे।

टिप्पणी

- विभिन्न विद्यार्थियों को भूमिकायें आवंटित करना तथा उन्हें संवाद के अंग की नकल करने को कहना।
- विद्यार्थियों को संवादों को दुहराने का समय देना एवं नाटक के विषय को समझना।
- जितने अधिक अपेक्षित हो पूर्वाभ्यासों को करना।
- नाटक का अभिनय करना।
- नाटक की भाषा, विषय, अभिनय, संवाद आदि की उपयुक्तता पर प्रतिपुष्टि देना।

नाटकों में पोशाक, परंपरा से बने या एक रंगमंच कम्पनी से नहीं होते हैं। वे व्यावसायिक नाटकों की तुलना में बहुत सामान्य और कामचलाऊ होते हैं।

कुछ नाटक एक्शन उन्मुख होते हैं किन्तु अन्य बोली उन्मुख होते हैं। आपको विषय एवं विद्यालय में उपलब्ध अभिनेताओं के प्रकार से संबद्ध निर्णय लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'कृष्ण एक बच्चा' नाटक में अधिक क्रिया और विशेष प्रभाव होंगे जबकि 'छत्रपति शिवाजी' नाटक में शब्दों पर अधिक बल होगा।

शिक्षक को नाटक के मंच का निर्धारण करने से पूर्व लागत मूल्य, उपलब्ध समय और विद्यालय के दर्शन को मस्तिष्क में रखना पड़ता है।

बहुत से नाटकों को मूल लेखकों से अनुमति लेना अपेक्षित है। शिष्टाचार मांगता है कि अग्रिम में लेखक से अनुमति ली जाये और यदि कोई रायल्टी हो तो भुगतान कर सकते हैं।

यह हमेशा सलाह योग्य है कि आप नाटक को विद्यार्थियों को शामिल करते हुए लिखें। यह विद्यार्थियों में सम्बद्धता को विकसित करता है साथ ही साथ नाटक लेखन कौशल को भी विकसित करता है।

प्रगति जाँच-2

एक नाटक के लक्षणों की सूची बनायें।

.....

.....

.....

एक शिक्षक कम लागत, बिना लागत का नाटक कैसे बना सकता है?

.....

.....

.....

नाटक भूमिका निर्वाह से कैसे भिन्न है?

.....

.....

.....

क्रियाकलाप-7

अध्यायों को चुनें जिनमें रंगमंचीय घटक हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

कोई एक विषय चुनें और लिखें आप कैसे विद्यार्थियों के अधिगम को सशक्त करने में नाटक का आयोजन करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

7.4.4 सहयोगी अधिगम

सहयोगी अधिगम एक सफल शिक्षण रणनीति है जिसमें छोटे दलों, प्रत्येक में विभिन्न योग्यता के स्तरों के विद्यार्थी है, एक विषय की उनकी समझ को सुधारने में अधिगम गतिविधियों के एक प्रकार का उपयोग होता है। दल के प्रत्येक सदस्य जो पढ़ाया गया है न केवल उसके अधिगम के लिए उत्तरदायी हैं बल्कि सहयोगियों की सहायता करने के लिए भी, इस प्रकार उपलब्धि का एक वातावरण सृजित करता है। विद्यार्थी तब तक नियत कार्य के माध्यम से कार्य करते हैं जब तक समूह के सभी सदस्य सफलतापूर्वक समझ और इसे पूर्ण नहीं कर लेते।

सहयोगी प्रयास आपसी लाभ के लिए भागीदारी के प्रतिस्पर्धा करने में परिणत हो जाता है ताकि समूह के सभी सदस्य:

टिप्पणी

- प्रत्येक के प्रयासों से ग्रहण करे। (आपकी सफलता मुझे लाभ देती है और मेरी सफलता आपको)।
- पहचानें कि समूह के सभी सदस्य एक सामान्य भाग्य को साझा करते है। (हम सभी साथ डूबते और तैरते हैं)।
- जानें कि एक निष्पादन स्वयं और एक दल के सदस्यों द्वारा आपस में उत्पन्न हुए हैं। (हम आप की सहायता के बिना नहीं कर सकते)।
- गर्व अनुभव करें और जब समूह का एक सदस्य उपलब्धि के लिए जाना जाता है तो संयुक्त रूप से आनंद मनायें। (हम सभी आपको आपकी उपलब्धि पर बधाई देते है।)

सहयोगी अधिगम के तत्व

प्रिय शिक्षक यह केवल निश्चित स्थितियों के अंतर्गत है कि सहयोगी प्रयास प्रतिस्पर्धात्मक एवं वैयक्तिक प्रयास की अपेक्षा अधिक उत्पादी होना अपेक्षित हो सकता है। वे स्थितियां हैं :

(i) **सकारात्मक अंतर्निभरता**–समूह के प्रत्येक सदस्य के प्रयास अपेक्षित हैं और समूह की सफलता के लिए अपरिहार्य है। समूह के प्रत्येक सदस्यों का संयुक्त प्रयास बनाने में उनके संसाधनों या भूमिका और कार्य के उत्तरदायित्वों के कारण एक अद्‌भूत योगदान है।

(ii) **मुखाभिमुख अंत:क्रिया**–शिक्षक को कहना है कैसे कार्य करें और सीखी संकल्पनाओं पर चर्चा कर उनकी समझ को कैसे जाँचे। बीते अधिगम से नये अधिगम को जोड़ना भी जरूरी है।

(iii) **व्यक्तिगत एवं सामूहिक उत्तरदायित्व**–शिक्षक को समूह जितना छोटा हो रखना है और तब उत्तरदायित्व उतना बड़ा होता है। यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थी को मौखिक रूप से जांचे और उनके अधिगम को प्रस्तुत करें। जब कक्षा को कुछ संदेह होता है तो सभी समूह को कक्षा को जवाब के पक्ष में तार्किक व्याख्या देनी चाहिए।

(iv) **अर्न्तवैयक्तिक एवं छोटा समूह कौशल**–सामाजिक कौशल जैसे नेतृत्व, निर्णय-निर्माण, विश्वास निर्माण, संप्रेषण एवं विवाद प्रबंध कौशल विद्यार्थियों के बीच अवश्य विकसित हो।

(v) **समूह संशोधन**–समूह के सदस्य चर्चा करते हैं कैसे वे अच्छी तरह उनके लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे हैं और प्रभावी कार्यरत संबंधों को बनाये रखे हैं। वे वर्णन भी करते है कि सदस्यों के कौन से कार्य सहायक हैं और कौन नहीं। यह व्यवहारों को दिखाने में सहायता करता है जो उन्हें या तो जारी रखने या बदलने में सहायता करता है।

सहयोगी अधिगम की अच्छाईयां–सहयोगी अधिगम की कुछ अच्छाईयां नीचे वर्णित की गई हैं। यह–

- विद्यार्थी के अधिगम और शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करता है।
- विद्यार्थी के धारण को बढ़ाता है।
- विद्यार्थी को उसके अधिगम अनुभव के साथ संतुष्टि को बढ़ाता है।
- मौखिक संप्रेषण में कौशलों को विकसित करने में विद्यार्थियों की सहायता करता है।
- विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों को विकसित करता है।
- विद्यार्थी के आत्म-सम्मान को प्रोन्नत करता है।
- सकारात्मक जाति संबंधों को प्रोन्नत करने में सहायता करता है।

निरूपण

विषय : जल

आप विषयों को चिह्नित कर सकते है जैसे–जल का स्रोत, जल प्रदूषण के कारण, जल को प्रदूषण से बचाने के तरीके, जल का संरक्षण, जल के उपयोग।

कक्षा को समूहों में बांटे–अधिक से अधिक उप-विषयों में।

समूह को उप विषय छांटने की स्वीकृति दें।

समय सीमा की घोषणा करें।

प्रत्येक समूह पृथक बैठें और चुने हुए उप-विषय पर कार्य करें।

समय सीमा के पश्चात् विद्यार्थी अपनी जगह पर बैठें।

प्रस्तुतीकरण और चर्चा की स्वीकृति दें।

क्रियाकलाप-8

सहयोगी अधिगम के माध्यम से पढ़ायें जाने वाले विषय को पहचानें, विषय को पढ़ाने के लिए सहयोगी अधिगम गतिविधि को संगठित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

टिप्पणी

प्रगति जाँच-3

(1) सहयोगी अधिगम क्या है?

.....

.....

.....

(2) सहयोगी अधिगम के तत्वों की सूची बनायें।

.....

.....

.....

(3) सहयोगी अधिगम की किसी चार अच्छाईयों को लिखें।

.....

.....

.....

7.4.5 संकल्पना चित्रण

सार्थक अधिगम शिक्षण के उद्देश्यों में से एक है। विद्यार्थियों के अधिगम को सुधारने के कुछ प्रयास हैं। कुछ प्रयासों में से एक है कुछ निर्देशात्मक रणनीतियों की कोशिश करना। संकल्पना चित्रण उनमें से एक है। यह विद्यार्थियों में संकल्पनाओं में अंत:संबंधों के साथ संकल्पनात्मक समझ को विकसित करने में सहायता करता है। यह एक प्रक्रिया है जो संकल्पना चित्र में परिणत हो जाता है।

संकल्पना चित्र के लक्षण

(i) संकल्पना चित्र आरेखीय प्रस्तुती हैं जो पूर्वसर्गों के रूप में संकल्पनाओं के बीच सार्थक संबंध दिखाता है।

(ii) पूर्वसर्ग संकल्पनाओं के बीच जुड़ावों का वर्णन करता है।

(iii) प्राय: संकल्पनायें एक वृत्त या एक बॉक्स के अंदर लिखे होते हैं, जो संबद्ध शब्दों के साथ रेखा से जुड़े होते हैं।

(iv) संकल्पनायें ऊपर से नीचे एक श्रेणीबद्ध क्रम में व्यवस्थित हैं जो सबसे सामान्य संकल्पना को ऊपर रखते हुए नीचे आता है।

(v) संकल्पनाओं को साथ संबद्ध कर पार्श्विक रूप से भी जोड़ा जा सकता है।

(vi) विषयों के चारों ओर संकल्पनाओं के एकीकरण को दिखाना भी संभव है। चित्र-1 संकल्पना चित्र के लक्षण को दिखाता है।

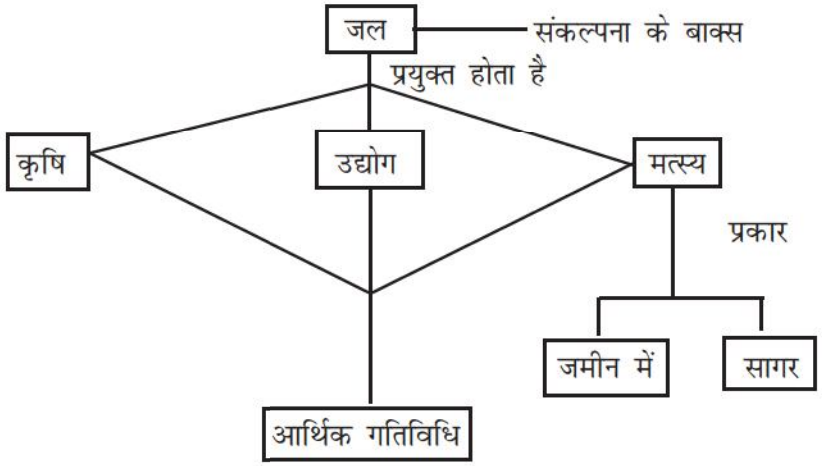

चित्र : 1 संकल्पना चित्र का लक्षण

संकल्पना मानचित्रण में चरण–संकल्पना चित्र की संरचना में निम्नलिखित चरण अपनायें जाते हैं। संकल्पना मानचित्रण के प्रत्येक चरण में विद्यार्थियों को शामिल करना उचित है।

चरण 1–चयनित पाठ में से संकल्पनाओं को चिह्नित करें। उन्हें श्याम पट्ट पर सूचीबद्ध करें।

चरण 2–संकल्पनाओं को एक श्रेणीबद्ध क्रम में सामान्य से विशिष्ट की ओर ऊपर से नीचे व्यवस्थित करें।

चरण 3–संकल्पनाओं को चुनें जो पार्श्विक रखी जानी हैं।

चरण 4–सभी सार्थक संकल्पनाओं को श्याम पट्ट पर रखें।

चरण 5–वृत/बॉक्स खींचे (संकल्पनाओं के चारों ओर) और संकल्पनाओं को जोड़ने के लिए रेखा खींचे।

चरण 6–जोड़ने वाले शब्दों को लिखें। संकल्पना चित्र तैयार है।

चरण 7–संपूर्ण संकल्पना चित्र को पढ़े और देखें कि सभी जोड़ संबद्ध शब्दों से जुड़े हैं।

ऐसे मामले में जब संकल्पना चित्र अत्यधिक भीड़-भाड़ वाला दिखे, इसे पुन: बनाया जा सकता है। संकल्पना चित्र श्याम पट्ट पर खींचने के पश्चात् विद्यार्थियों को शामिल करें, उन्हें अपना स्वयं खींचने को प्रोत्साहित करें। इससे शुरू कर वे एक अपूर्ण संकल्पना चित्र को पूर्ण कर सकते हैं। बाद में उन्हें अपना मानचित्र बनाने को कह सकते है। चित्र-2 उद्योगों के प्रकारों को संकल्पना चित्र दिखाता है।

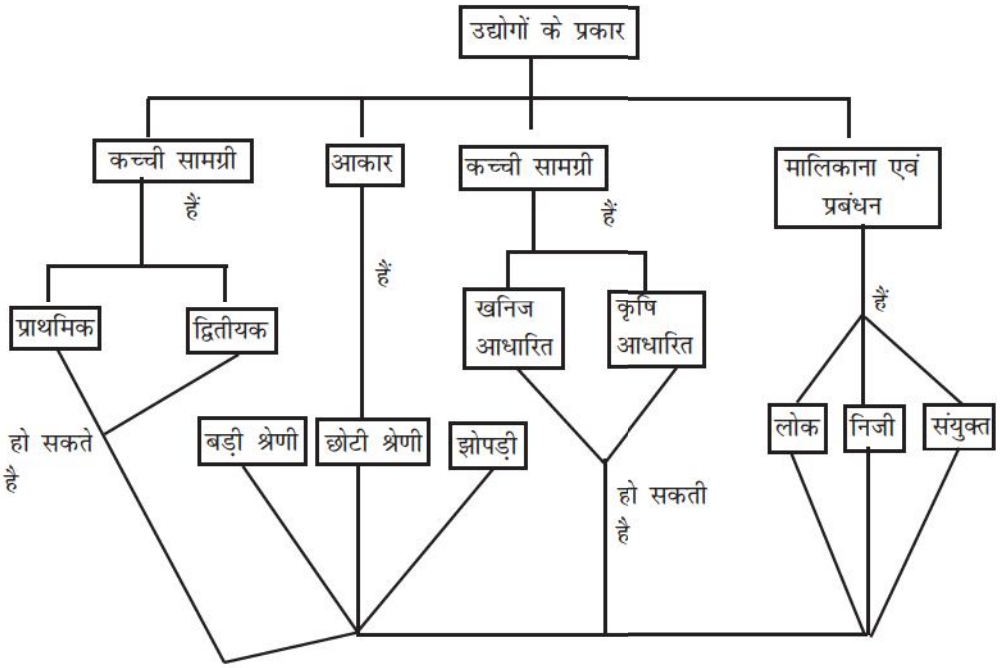

चित्र-2 उद्योगों के प्रकार पर संकल्पना चित्र

संकल्पना चित्र के उपयोग–संकल्पना चित्र अध्याय के किसी स्तर पर प्रयुक्त हो सकता है। जब यह प्रारंभिक स्तर पर प्रयुक्त होता है तो बच्चों को एक पूर्ण तस्वीर प्राप्त होती है कि वे क्या सीखने जा रहे हैं। यदि यह विकासात्मक स्तर पर प्रयुक्त होता है तो विद्यार्थी कोमलता से एक संकल्पना से दूसरी संकल्पना ले लेते हैं। जब यह मूल्यांकन के स्तर पर प्रयुक्त होता है तो यह विद्यार्थियों के समझ के स्तर का मूल्यांकन कर सकता है। ये अधिगमकर्ताओं ने जो कुछ भी सीखा है उसका सार प्रस्तुत करने में सहायता करता है।

प्रगति जाँच-4

संकल्पना चित्र क्या है?

विद्यार्थियों के अधिगम के मूल्यांकन में आप संकल्पना चित्र का उपयोग कैसे करेंगे वर्णन करें?

.....

.....

.....

.....

.....

टिप्पणी

क्रियाकलाप-9

तस्वीर-2 का अध्ययन करें और उस संकल्पना चित्र के चरण 1.2 और 3 पर कार्य करें। अपनी पसंद का कोई विषय चुनें और संकल्पना चित्रण के सभी चरणों का अनुकरण करते हुए एक संकल्पना चित्र बनायें।

.....

.....

.....

.....

.....

7.4.6. विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र

ज्ञान गतिशील और विस्तृत है। यह जांचना प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है कि सही क्या है और गलत क्या, क्या जरूरी है क्या नहीं। NCF 2005 चिह्नित करता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली इतनी नमनीय नहीं है। यह बच्चों के अनुभव से पृथक है जो सृजनात्मकता, विवेचनात्मक सोच और बच्चों की अंत: दृष्टि को हतोत्साहित करता है। जैसे-जैसे समाज अधिक जटिल होते जाते हैं, बच्चों को ऐसे समाजों का सामना करने को तैयार करना जरूरी है। विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र बच्चों को उनके दृष्टिकोणों को व्यक्त करने, अंत:क्रिया एवं समस्याओं के समाधान करने के पर्याप्त अवसरों को प्रदान करता है। ऐसी प्रक्रियायें एक व्यक्ति के साथ-साथ समाज के रूपान्तरण का नेतृत्व करेंगी।

विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र एक शिक्षण उपागम है जो विद्यार्थियों के प्रश्नों, प्रभुत्व को चुनौती देने, विश्वासों और कार्यों जो शासन करते हैं के प्रयासों में सहायता करता है। यह विद्यार्थियों को विवेचनात्मक चैतन्य प्राप्त करने में सहायता करता है। जैसा कि NCF 2005 में प्रदर्शित है विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र मुद्दों को उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं के संदर्भ में विवेचनात्मक रूप से प्रदर्शित करने का एक अवसर प्रदान करता है। यह सामाजिक मुद्दों पर बहु दृष्टिकोणों की स्वीकृति को अपरिहार्य बनाता है और अंत:क्रिया के प्रजातांत्रिक रूपों के वचनबद्धता की स्वीकृति को अपरिहार्य बनाता है।

चरण जिन्हें आप एक कक्षा में विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र के अनुकरण में अपना सकते हैं नीचे दिये गये हैं:

(i) विद्यार्थियों को मुद्दों के विवेचनात्मक विश्लेषण के लिए अभिष्टतम अवसरों को सृजित करना।

(ii) कक्षा में मुद्दों की घोषणा करना और चर्चा के लिए एक तिथि निश्चित करना।

टिप्पणी

(iii) आप मुद्दे के संबंध में अग्रिम में सूचना संग्रह करने को भी कह सकते हैं।

(iv) विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से भाग लेना पड़ेगा जब वे मुद्दे पर या उसके विरुद्ध अपने दृष्टिकोण देते हैं और प्रश्नों पर चर्चा करते हैं।

अपनाये जाने वाले सुझाये गये चरण नीचे दिये गये हैं :

विषय : लोग एवं पर्यावरण

शिक्षण बिन्दु : वनों के बढ़ते विनाश के कारण, वनों की कटाई के प्रभाव, वनों को बचाने के तरीके

शामिल मुद्दे : बढ़ती वनों की कटाई

प्रश्न : क्या हमें वनों की बढ़ती कटाई के लिए जाना चाहिए?

विभिन्न दृष्टिकोण :

शहरीकरण, भूजल की क्षीणता, प्रकृति में असंतुलन, पर्यावरणीय क्षरण के लिए।

विवेचनात्मक प्रश्न जिन पर चर्चा होनी है :-

क्या है जो हमें वनों की कटाई की ओर ले जाती है?

वनों की कटाई किये बिना हम बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों को कैसे पूरा कर सकते है?

यदि यहां वन नहीं हों तो पृथ्वी केसी होगी?

वनों की कटाई मानवों को कैसे प्रभावित करती है?

किन तरीकों से हम वनों को बचा सकते हैं?

शिक्षक विद्यार्थियों को प्रिन्ट, दृश्य, श्रव्य आदि स्रोतों को बताकर सूचना संग्रह करने में उनकी सहायता करता है। सारांश पर पहुंचना जरूरी नहीं है। उपागम विद्यार्थियों को समाज में हावी होने वाले मुद्दों को विवेचनात्मक रूप से देखने के लिए एक प्लेटफार्म सृजित करने पर लक्षित करता है।

क्रियाकलाप-10

सामाजिक और राजनीतिक जीवन से एक मुद्दा चुनें। विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र के अनुकरण के लिए एक योजना लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रगति जाँच-5

1. विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र के क्या उद्देश्य है?

.....

.....

.....

2. इस उपागम में विद्यार्थियों की भूमिका का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

7.4.7 समस्या समाधान

(यह शिक्षण और अधिगम के 'शर्मा और संतोष' (2006) के संरचनात्मक उपागमों का अनुकूलित संस्करण है– नई दिल्ली NCERT)

समस्या समाधान एक निर्देशात्मक रणनीति है जो संकल्पनात्मक समझ और स्थानान्तरण की योग्यता को विकसित करने तथा उन समझों को नई परिस्थितियों में लागू करने में प्रयुक्त होती है। जब विद्यार्थियों को इस विधि से पढ़ाया जाता है तो वे तार्किक रूप से सोचने एवं चिन्तन कौशलों को विकसित करने के अवसर पाते हैं। चिन्तन एक आधारभूत कौशल है जो समस्या समाधान में अपेक्षित है जिससे विद्यार्थी अपने अनुभवों की समझ बनाते हैं। चिन्तन कौशल एवं समस्या समाधान दोनों विद्यार्थियों को समस्यात्मक परिस्थितियां देकर पढ़ाई जा सकती है और इन समस्याओं को हल करने के अवसरों को देकर पढ़ाई जा सकती हैं।

समस्या समाधान के चरण

बहुत से लोग हैं जिन्होंने समस्या समाधान विधि पर काम किया है और उन्होंने विभिन्न चरणों को निरूपित किया है। किन्तु सामान्य चरण जो सामान्यत: प्रयुक्त होते हैं निम्नलिखित अनुच्छेदों में विचारित किये गये है :

चरण 1 : समस्याओं को चिह्नित करना–पहले शिक्षक और विद्यार्थियों को पता लगाना है कि वस्तुत: समस्या क्या है। तब फिर उन्हें समस्या की समझ को परिभाषित करना है। समस्यायें

टिप्पणी

विद्यार्थियों के वर्तमान ज्ञान से संबंद्ध होनी चाहिए तथा वास्तविक जीवन स्थितियों में घनिष्टता प्रयुक्त होनी चाहिए।

चरण 2 : समस्या समाधान विधि का प्रारूपण–समस्या को विद्यार्थियों द्वारा समझे जाने के पश्चात्, वे समस्या के समाधान की प्रक्रिया का प्रारूपण करते हैं। एक बार जब वे समाधान की विधि पर निर्णय ले लेते हैं तब वे व्याख्या करते हैं कि क्यों उन्होंने इस विशेष विधि को चुना। प्रत्येक चरण की चरणबद्ध योजना और व्याख्या विद्यार्थियों को समस्या समाधान प्रक्रिया के कौशलों को विकसित करने में सहायता करेगा। इस प्रकार वे समस्या समाधान का तरीका सीखते हैं।

चरण 3 : योजना का कार्यान्वयन–समस्या के समाधान की विधि के प्रारूपण के पश्चात् अगला चरण है विधि का कार्यान्वयन। यह विद्यार्थियों से समाधानों तक पहुंचने के लिए डाटा के संग्रह, संगठन और विश्लेषण की अपेक्षा करता है।

चरण 4 : समाधानों का मूल्यांकन करना–यह अंतिम चरण है। इस चरण में विद्यार्थियों को सभी साक्ष्यों और डाटा की जांच करना जरूरी है जो समस्या के समाधान में समर्थन देते हैं। जब भी संभव हो विद्यार्थियों को समाधान को नई या समान स्थिति में लागू करने को प्रोत्साहित करना चाहिए। जो उन्हें समाधान की शुद्धता और वैधता के बारे में विचार देंगे।

समस्या समाधान विधि के अनुकरण द्वारा, अधिगमकर्ताओं में ऐसी योग्यताओं को विकसित करना संभव है जैसे–विश्लेषणात्मक चिन्तन, विवेचनात्मक चिन्तन, कारणों एवं प्रभावों को संबद्ध करना, तार्किकरण, तर्कशक्ति, सामाजिक मूल्यों के विकास के साथ निर्णय देना। शिक्षक से विद्यार्थियों को समस्या समाधान प्रक्रिया में निर्देश देना अपेक्षित हैं।

निरूपण

चरण 1 : समस्या को चिह्नित करना

1857 की क्रांति क्यों असफल हुई थी?

क्रांति क्यों असफल हुई थी पर विद्यार्थी विविध स्रोतों में सूचना संग्रह करते हैं।

चरण 2 : समस्या समाधान विधि का प्रारूपण

कक्षा समूह कार्य के माध्यम से समस्या का समाधान करने का निर्णय लेती है। वे क्षेत्रों को चिह्नित करते हैं जिन पर उन्हें कार्य करना है। क्षेत्र हो सकते हैं :

सामान्य लोगों की भूमिका–क्रांति में निभायी भूमिका एवं इसके प्रभाव।

तरीके जिससे लोगों ने क्रांति किया–लोगों के बीच एकता, प्रयुक्त हाथियार।

परिस्थिति से निपटने के लिए ब्रिटिशों द्वारा अपनायी गयी रणनीति।

चरण 3 : योजना का कार्यान्वयन करना–इस चरण के दौरान विद्यार्थियों का प्रत्येक समूह एक क्षेत्र को चुनता है और समस्या के समाधान के बारे में सबके बीच स्वयं चर्चा करते है।

टिप्पणी

क्रांति पर अधिक सूचना एकत्र करते हैं और क्रांति की विविध घटनाओं को चिहि्नत करते हैं। वे परिस्थितियों का विश्लेषण करते हैं और कारण तथा प्रभाव का पता लगाते हैं। क्रांति की असफलता के लिए क्या सही और क्या गलत हुआ पर एक रिपोर्ट तैयार करते हैं और अन्ततः समाधान पर पहुंचते है।

चरण 4 : समाधान का मूल्यांकन करना–प्रत्येक समूह समाधान के साथ कक्षा में रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। कक्षा संपूर्णता में समाधानों पर चर्चा करती है और विचार रखती है। वे एक समान परिस्थिति पैदा कर सकते हैं और समाधान को वैध करते हैं।

क्रियाकलाप-11

समस्या–'दक्षिण भारत में किसानों की कृषि के लिए मानसून पर निर्भरता।'

आप विद्यार्थियों को उपर्युक्त समस्या पर सोचने के लिए तथा समस्या समाधान विधि के माध्यम से समाधान पर पहुंचने में कैसे मार्ग दर्शन करेंगे?

....

....

....

....

....

प्रगति जांच-6

1. समस्या समाधान विधि के क्या फायदे हैं?

   ....

   ....

   ....

2. समस्या समाधान विधि में विद्यार्थियों की भूमिका को चिहि्नत करें।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

7.4.8. प्रयोगात्मक अधिगम

प्रयोगात्मक अधिगम एक शब्द के रूप में सुझाव देता है–अनुभव के द्वारा अधिगम में प्रयुक्त एक रणनीति का संशोधित किये गये अनुभव के तरीके को अधिगम के केंद्र बिंदु के रूप में विचारित किया गया है। यह रणनीति वास्तविक जीवन परिस्थितियों से जुड़े अधिगम के लिए मैदानी कार्य को स्वीकृति देती है। यहां आप नये विचारों/संकल्पनाओं को समझने के मूर्त अनुभवों का उपयोग कर सकते हैं और नई संकल्पना को वैध बनाने के लिए प्रति पुष्टि का उपयोग करते हैं।

यह प्रत्यक्ष अनुभव से अर्थ बनाने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के लिए अधिगम प्रक्रिया पर केंद्रित करता है। प्रयोगात्मक अधिगम का एक उदाहरण है चिड़ियाघर जाना और अवलोकन के माध्यम से सीखना तथा चिड़ियाघर के वातावरण से अंत:क्रिया करना, एक पुस्तक से जानवरों के बारे में पढ़े हुए को सम्मुख रखें। इस प्रकार कोई भी खोजों एवं प्रयोगों को प्रथमत: ज्ञान से प्राप्त करता है बजाय दूसरे के अनुभवों के बारे में पढ़कर या सुनकर प्रयोगात्मक अधिगम व्यक्ति के प्रत्यक्ष अनुभव के अर्थ बनाने की प्रक्रिया पर अकेले आधारित है।

प्रयोगात्मक अधिगम अत्यधिक प्रभावी शैक्षिक विधि हो सकती है। यह अधिगमकर्ता को नितान्त वैयक्तिक स्तर पर व्यक्ति की जरूरतों और चाहतों को संबोधित कर शामिल करता है। प्रयोगात्मक अधिगम गुणों जैसे स्वयं पहल, और स्व मूल्यांकन की अपेक्षा करता है। प्रयोगात्मक अधिगम की प्रक्रिया किसी को नये कौशलों, नई मनोवृत्तियों या यहां तक कि सोचने के पूर्णत: नये तरीकों की स्वीकृति देता है।

यह सत्य है कि एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अधिगम प्रक्रिया में अनुभवी द्वारा निभायी जाती है। बहुत सारी हंसी और अधिगमकर्ता की योग्यताओं के सम्मान से युक्त मजेदार अधिगम वातावरण, एक प्रभावी प्रयोगात्मक अधिगम वातावरण को पोषित भी करता है। यह मार्मिक है कि विद्यार्थी स्वयं को प्रत्यक्षत: अनुभव में शामिल करने को प्रोत्साहित करते हैं, इस क्रम में वे नये ज्ञान की एक बेहतर समझ प्राप्त करते हैं और सूचना को लंबे समय तक धारण करते है।

आप कैसे एक सुसज्जित अधिगम अनुभव सृजित करते हैं? चाभी सुसाधक में रहती है और वह अधिगम प्रक्रिया को सुसाध्य करता है। जबकि यह अधिगमकर्ता का अनुभव है जो कि अधिगम प्रक्रिया के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है, अनुभव की सम्पति को न भूलना यह भी महत्त्वपूर्ण है, एक अच्छा सुसाधक परिस्थिति को भी लाता है।

एक प्रभावी शिक्षक वह है जो प्रयोगात्मक अधिगम को अपनाता है और अपने कार्य के बारे में भाव प्रवण होता है। वह भागीदारों को अधिगम स्थिति में पूर्णत: तल्लीन करने में भी सक्षम है, उन्हें अपने साथियों और सृजित वातावरण से नये ज्ञान को अर्जित करने की अनुमति देता है। मानक लिखित एवं दृश्य सामग्रियों के अतिरिक्त विभिन्न शैली के अधिगमकर्ता और शक्तियां प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान कर समायोजित हो सकती है।

प्रयोगात्मक अधिगम में शामिल प्रक्रिया

(i) इस रणनीति का उपयोग करते समय, आपको सर्वप्रथम संकल्पना को चिह्नित करना है जिसका मैदानी कार्य या अवलोकन के लिए विस्तार है।

(ii) मैदानी कार्य के लिए योजना और जितना संभव हो विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान करना।

(iii) उनके अनुभवों पर आधारित प्रतिपुष्टि प्राप्त करना और सूचना साझा करना।

(iv) विद्यार्थियों को संकल्पना के अर्थ और यदि कोई प्रक्रियायें हो तो उस पर पहुंचना।

(v) अंततः अर्जित नये ज्ञान की वैधता के लिए एक संदर्भ सृजित करना।

अब नीचे दिये गये निरूपण को देखें :

निरूपण

नई संकल्पना : चुनाव

मूर्त संकल्पना–विद्यार्थी परिषद के चुनाव के लिए विद्यालय में चुनाव का आयोजन करना। प्रत्येक कक्षा को एक चुनाव क्षेत्र मानें, मानो अभ्यार्थी चुनाव के प्रतिभागी हैं। उन्हें प्रतीक प्रदान करें। चुनाव की घोषणा से परिणाम की घोषणा तक आम चुनाव में शामिल प्रक्रियाओं का अनुकरण करें। शिक्षकों में से एक चुनाव अधिकारी होता है। परिणाम की घोषणा के पश्चात् चयनित विद्यार्थियों को शपथ लेने की अनुमति दें तथा उन्हें उनके विद्यालय का नेता चुनने को कहें तथा विद्यालय के कार्यों को देखने के लिए समितियों का गठन करने को कहें।

प्रति पुष्टि प्राप्त करना–सम्पूर्ण कक्षा विद्यार्थी परिषद के चुनाव के आयोजन में सम्मिलित प्रक्रियाओं पर चर्चा करती है।

नई संकल्पना को वैध बनाना–चुनाव की संकल्पना को वैध करने में कई तरीके हैं। आप उनमें से कोई एक को या कुछ दूसरे को अपना सकते है जो भी आपके लिए आसान है।

- देश के किसी भी भाग में चुनाव के विभिन्न चरणों को दिखाने वाले समाचार पत्र के कतरन को प्रदर्शित करें।
- विद्यार्थियों को चुनाव प्रक्रिया पर एक वृत्त-चित्र दिखा सकते हैं।
- स्थानीय सरकार या किसी निकाय के चुनाव का प्रत्यक्ष अवलोकन।

क्रियाकलाप-12

अपनी पसंद का एक विषय चुनें और उस विषय को प्रयोगात्मक अधिगम के माध्यम से पढ़ाने की एक योजना लिखें।

.....

टिप्पणी

.....

.....

.....

.....

प्रगति जांच-7

प्रयोगात्मक अधिगम का तात्पर्य क्या है?

.....

.....

.....

आपके अनुसार प्रयोगात्मक अधिगम की अच्छाईयां एवं बुराईयां क्या है?

.....

.....

.....

7.4.9. कथा वाचन

दादा-दादी विशेषत: दादी मां द्वारा बच्चों को मनोरंजन करने का एक पारंपरिक विधि है कथा वाचन। यह एक कौशल है जिसमें कथा वाचक स्रोताओं को मौखिक और अमौखिक भंगिमाओं के माध्यम से कथा संप्रेषित करता है। यह स्रोताओं के ध्यान को रोके रखता है। वास्तव में यह अपने आप में एक कला है जो बोली के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रस्तुत करने पर केंद्रित करता है जो स्पष्ट, उज्ज्वल और रूचिपूर्ण है। एक तरीके में घटनाओं क्रम के साथ विद्यार्थी इन घटनाओं को दुबारा बनाने में सक्षम होते हैं और वे पुन: दुहराये अनुभवों के माध्यम से अपनी कल्पना में जीते हैं।

एक अभिनेता और वक्ता के रूप में एक शिक्षक की क्षमता अध्याय को जीवंत और रूचिपूर्ण बना सकता है। वे विद्यार्थियों को घटनाओं और संबद्ध व्यक्तियों को लगभग दृश्य बना देते हैं। स्रोता को ट्रैक पर रखने में कथा वाचक बीच-बीच में सामान्य प्रश्न पूछता है जो एक या दो शब्द में उत्तर की अपेक्षा करता है। यह विधि सामाजिक विज्ञान विशेषत: इतिहास को प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाने में उपयुक्त है। यह बच्चों की रूचि जाग्रत करेगा और उन्हें खुशी के माध्यम से कल्पनात्मक समझ के प्रसार प्रदान करता है।

चरित्र के गुणों जैसे दान, भक्ति, सत्यता आदि को विद्यार्थियों के बीच विकसित करने के लिए सर्वोत्तम साथी के रूप में शिक्षक द्वारा कथा वाचन पर भरोसा किया जा सकता है।

लाभ–यह विधि विद्यार्थियों में रूचि सृजित कर सकती है और वे शिक्षक एवं विषय दोनों को पसंद करना शुरू कर देते हैं। यह कल्पना के विकास और दया को मन में बैठाने में सहायता भी कर सकता है, जो सामाजिक जीवन के लिए अपेक्षित है। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक में जो दिया गया है उससे अधिक सीखता है।

सीमायें–शिक्षक एक मुख्य भूमिका निभाता है और यदि कहानी रूचिपूर्ण तरीके से नहीं कही गई तो विद्यार्थी बोर अनुभव करते हैं। यह भी सत्य है कि सभी विषय इस विधि से नहीं पढ़ाये जा सकते। शिक्षक को पाठ्य पुस्तक की अपेक्षा अधिक सूचना एकत्र करनी पड़ती है और इस विधि की सफलता के लिए कथा वाचन में अत्यधिक कुशल होना होता है।

निरूपण–कलिंग युद्ध, डांडी यात्रा, भारत छोड़ो आंदोलन आदि इस विधि के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है। पाठ के विषय वस्तु से रूचिपूर्ण कहानी बुनें और अन्य साधनों से अतिरिक्त विषय वस्तु चुनें। इसे कक्षा में प्रस्तुत करें और वर्णन करें।

क्रियाकलाप-13

सामाजिक विज्ञान से एक अध्याय चुनें जो कि कथा वाचन के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है और कहानी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रगति जांच-8

1. वाचन विधि का प्रयोग करते समय एक शिक्षक द्वारा क्या सावधानी ली जानी चाहिए?

.....

.....

.....

2. कथा वाचन के लिए एक शिक्षक में अपेक्षित कौशलों की सूची बनायें।

.....

.....

.....

टिप्पणी

7.4.10. मैदानी दौरा

एक निर्देशात्मक रणनीति जो अधिगमकर्ताओं के बीच लोकप्रिय है वह है मैदानी दौरा। यह एक दौरा है जो विद्यालय द्वारा अधिगमकर्ताओं के लिए नजदीक के स्थान पर आयोजित की जाती है जिसका एक शैक्षिक मूल्य है। यह एक महत्त्वपूर्ण विद्यालय गतिविधि है जो विद्यालय पाठ्यचर्या का एक अनिवार्य अंग है।

7.4.11. विचार-विमर्श विधि

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में विचार विमर्श विधि महत्त्वपूर्ण विधियों में से एक है। अधिगम प्रक्रिया में प्रत्येक विद्यार्थी को उनके विचारों को व्यक्त करने की स्वीकृति देता है। यह सामूहिक निर्णय बनाने की एक क्रमिक प्रक्रिया है, जो प्रजातांत्रिक मूल्यों को उपजाने में सहायक है। यह समझौता चाहता है किन्तु यदि यह नहीं पाया जाता है तो इसमें स्पष्टीकरण और समझौते की प्रकृति को तीव्र करने का मूल्य है।

एक विचार-विमर्श के लक्षण

जब कभी भी एक समस्या/मुद्दा/एक स्थिति जिसमें मत वैभिन्य के लिए विस्तार हो तो शिक्षण की विचार विमर्श विधि अपनायी जाती है। विचार विमर्श का शिक्षक द्वारा पहल एवं संतुलित किया जाता है तथा विद्यार्थियों द्वारा एक क्रमागत तरीके से जारी रखा जाता है। जो मुद्दे विचार-विमर्श के लिए रखे गये हैं उसके संबंध में विचार व्यक्त करने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी स्वतंत्र है।

विचार विमर्श का आयोजन

विचार विमर्श आयोजित करने के लिए शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों द्वारा योजना की एक अच्छी समझ होना जरूरी है। इसके तीन चरण है: योजना और तैयारी, विचार विमर्श का आयोजन एवं मूल्यांकन।

(i) **योजना एवं तैयारी**–यह विचार विमर्श के पूर्व का चरण है जो विचार विमर्श के रूप में जारी रह सकता है। पहले समूह संपूर्णता में समस्याओं या मुद्दों को चिह्नित करेगा। चयनित मुद्दे विद्यार्थियों द्वारा अवश्य चिह्नित होने चाहिए और उन्हें इस मुद्दे के बारे में पर्याप्त ज्ञान अवश्य होना चाहिए। समूह प्रश्नों को चिह्नित करेगा जिनका जवाब इसके अंतर्गत दिया जाना चाहिए। वे बोर्ड पर क्रम से लिखे होने चाहिए। सूचना संग्रह के लिए पर्याप्त समय दें। विचार विमर्श के लिए तिथि और समय निश्चित करें।

(ii) **विचार विमर्श का आयोजन**–इसमें शिक्षक निर्णायक भूमिका निभाता है। बैठने की व्यवस्था मुखाभिमुख बातचीत को सुसाध्य करनी चाहिए तथा सभी विद्यार्थियों की भागीदारी होनी चाहिए। यह साथ में चिन्तन की जानी चाहिए तथा कुछ एक विद्यार्थियों द्वारा शासित होना चाहिए। शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने की स्वीकृति देते हुए एक मुक्त, शिथिल एवं कक्षा में एक अनौपचारिक वातावरण सृजित करना पड़ता है।

यद्यपि अनुशासन बनाये रखना पड़ता है। जब एक विद्यार्थी अपने विचार व्यक्त कर रहा है तो अन्य विद्यार्थियों को उसे सुनना चाहिए। विचार विमर्श को उद्देश्यों के क्रियान्वयन से नियंत्रित होना चाहिए।

(iii) **मूल्यांकन**–यह अनिवार्य है। विचार विमर्श के अंत पर शिक्षक को पता लगाना पड़ता है कि विचार विमर्श का कितना प्रसार सफलतापूर्वक निर्णय में पहुंचा है। यह समझना भी आवश्यक है कि विचार विमर्श के उद्देश्यों का कितना प्रसार प्राप्त किया जा चुका है। समूह संपूर्णता में विचार विमर्श के आयोजन के ऊपर भी ध्यान रख सकता है, सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं को देखता है तथा भविष्य में सुधारने की कोशिश करता है।

निरूपण

विचार विमर्श के प्रत्येक चरण में आप सभी विद्यार्थियों को शामिल करने के प्रयास करें।

योजना एवं तैयारी–कुछ मुद्दों को पहचाने जो समाज में उठ रहे हैं और जो पाठ्यक्रम से संबंधित है। वे विद्यार्थियों की रूचि के भी होने चाहिए। श्यामपट्ट पर उनकी सूची बनायें।

लैंगिक भेदभाव
कचरा निस्तारण
वृक्षों को काटना
पानी की कमी

किसी एक को चुनें। उदाहरणार्थ–लैंगिक भेदभाव। मुख्य बिन्दुओं को चिह्नित करें। उन्हें श्यामपट्ट पर लिखें। उन बिन्दुओं पर सूचना एकत्र करने को कहें, पर्याप्त समय दें।

अर्थ

ऐतिहासिक कालों में लैंगिक भेदभाव
घर में, विद्यालय में, समाज में लैंगिक भेदभाव
लैंगिक भेदभाव के कारण
लैंगिक भेदभाव पर विजय पाने के तरीके
संवैधानिक प्रावधान

विचार विमर्श का आयोजन–विद्यार्थियों के लिए सुविधाजनक बैठने की व्यवस्था करें। आप एक स्थान लें जहां से आप प्रत्येक विद्यार्थी को दृष्टिगोचर हों। श्यामपट्ट पर विचार विमर्श के लिए लिये जाने वाले मुख्य बिन्दुओं को लिखें। विचार विमर्श की पहल करें और किसी को बिना हतोत्साहित किये सभी विद्यार्थियों को बोलने की स्वीकृति दें। विद्यार्थियों को मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखने को कहें।

मूल्यांकन–इस चरण के चौरान कक्षा में व्यक्त विचारों को बांधे। लैंगिक भेदभाव पर पार पाने के तरीकों तक पहुंचे। सभी सदस्य भी विचार विमर्श के आयोजन पर विचार रखें और अगले विचार विमर्श में नकारात्मक टिप्पणियों को घटाने के तरीके का पता लगायें।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-15

सामाजिक विज्ञान में किसी एक मुद्दे को चुनें और अपनी कक्षा में विचार विमर्श आयोजित करें। विचार व्यक्त करें कि कैसे यह कक्षा शिक्षण के अन्य तरीकों से भिन्न है।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रगति जाँच-10

1. विचार विमर्श विधि के क्या लक्षण हैं?

.....

.....

.....

2. विचार विमर्श विधि में शिक्षक की भूमिका का वर्णन करें।

.....

.....

.....

7.4.12 मानचित्र आधारित अधिगम

मानचित्र एक सपाट सतह पर पृथ्वी का पुनर्प्रस्तुतीकरण है। मानचित्र बहुत अधिक मोटर-चालकों, सुरक्षाकर्मियों, यात्रियों एवं अन्य द्वारा प्रयुक्त होते हैं। किन्तु मानचित्र का उपयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि कोई जानता हो कि मानचित्र कैसे पढ़ते हैं क्योंकि मानचित्र की अपनी भाषा होती है। एक मानचित्र तब तक सार्थक नहीं है जब तक पढ़ने वाला सक्षम न हो कि मानचित्र क्या कहता है। 'मानचित्र साक्षरता' मानचित्रों को समझने के लिए अनिवार्य है।

सामाजिक विज्ञान को रूचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षक कुछ संसाधनों का उपयोग करता है जो अधिगम के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करते हैं। मानचित्र अनिवार्य उपकरणों में से एक है। जैसे कि मानचित्र संपूर्ण संसार को कक्षाकक्ष में ले आता है। यह सामाजिक विज्ञान के विषय वस्तु को समझने में आसान बनाता है जो मानचित्र से संबंधित है। विद्यार्थी मानचित्र को

बेहतर समझ सकते हैं जब वे इसे पढ़ने में सक्षम हों और विभिन्न मानचित्रों के बीच संबंधों का पता लगा लेते हों। इसलिए यह अनिवार्य है कि विद्यार्थी मानचित्र पढ़ना सीखें। अधिगम जो मानचित्र अध्ययन के कारण आती है मानचित्र आधारित अधिगम कहलाता है। बच्चों को मानचित्र पढ़ने में सहायता करने के लिए मानचित्र के तत्वों को समझना अनिवार्य है तथा मानचित्र कौशलों को समझना अनिवार्य हैं।

एक मानचित्र के तत्व–मानचित्र के तत्व हैं:

मानचित्र का शीर्षक–यह मानचित्र का विषय देता है तथा यह मानचित्र के शीर्षक के रूप में दिया गया है।

दिशा सूचक–यह एक तस्वीर है जो कुछ मानचित्र के कोने में दिया गया रहता है जो मानचित्र के दिशा को दिखाता है।

मानचित्र का पैमाना–यह मापने का उपकरण है जो मानचित्र पर दूरी और सतह पर दूरी के बीच अनुपात के रूप में होता है। यह या तो मानचित्र के ऊपर या नीचे होता है।

रंग और प्रतीक–ये मानचित्रों में प्रयुक्त है जिनके अपने अर्थ हैं। उनके अर्थ मानचित्र के एक भाग में दिये गये हैं जो आख्यान कहलाते हैं। इसमें प्रतीकों/रंगों की सूची रहती है जो मानचित्र में दिये गये हैं और इनके अपने अर्थ रहते है।

चित्र : भारत का मानचित्र

मानचित्र कौशल–अब हम जानें कि मानचित्र पढ़ने के लिए क्या कौशल अपेक्षित हैं। ये हैं:

(i) दिशाओं को नोट करना

(ii) मानचित्र के पैमाने को पहचानना और दूरियों की गणना करना

(iii) रंगों को पढ़ना

(iv) प्रतीकों को पढ़ना

(v) विभिन्न मानचित्रों को सम्बद्धकर अनुमानों को बनाना

निम्नलिखित अनुच्छेदों में वर्णन आपको विद्यार्थियों के बीच उपर्युक्त कौशलों को कैसे बढ़ाया जा सकता है बतायेंगे।

(i) **दिशायें नोट करना**–माचित्र हमेशा दिशा के संबंध में खींचा जाता है। मानचित्र के भाग में आप दिशा सूचक देख सकते है।

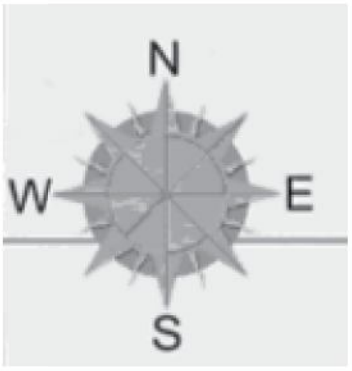

यह दिखाता है कि मानचित्र का ऊपरी हिस्सा उत्तर दिशा में है। एक बार जब हम एक दिशा जान जाते हैं तो अन्य दिशाओं का पता लगाना संभव हो जाता है।

दो प्रकार की दिशायें होती है। ये है मूलभूत दिशायें और मध्यस्थ दिशायें। कुल आठ दिशायें होती हैं चार मूलभूत जो हैं–पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। चार मध्यस्थ दिशायें इन चार मूलभूत दिशाओं के बीच में आती है। ये है–उत्तर पूर्व, उत्तर पश्चिम, दक्षिण पूर्व और दक्षिण पश्चिम।

चित्र 1 मूलभूत दिशायें

चित्र 2 मध्यस्थ दिशायें

अब आप हम भारत का एक राजनीतिक मानचित्र उपयोग करते हैं और अधिगमकर्ता से दिशाओं को चिह्नित करने को कहें। जम्मू और काश्मीर उत्तर में है, तमिलनाडू दक्षिण में, उड़ीसा दक्षिण पूर्व में है। इसी प्रकार अधिगमकर्ताओं से अन्य दिशाओं में स्थित राज्यों को चिह्नित करने को कहें।

विद्यार्थी जब मानचित्र दिशाओं को चिह्नित कर लेते हैं उसके बाद उनसे एक दिये गये स्थान की संगत दिशा का पता लगाने को कहें। उदाहरण– मध्य प्रदेश के पूर्व में कौन सा राज्य है? नागालैण्ड के दक्षिण में कौन सा राज्य है?

क्रियाकलाप-15

किसी मानचित्र का उपयोग कर दिशाओं को दिखाने के लिए दस प्रश्नों को लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

एक मानचित्र का पैमाना और दूरियों की गणना–मानचित्र का पैमाना एक मापक युक्ति है। यह प्रत्येक मानचित्र में दिया गया होता है। प्रत्येक मानचित्र का अपना पैमाना होता है। यह एक मानचित्र पर दूरी और सतह पर दूरी के बीच एक अनुपात होता है। उदाहरणार्थ: 1:10,000 का अर्थ है मानचित्र पर एक इकाई सतह पर 10,000 इकाईयों के बराबर है। मानचित्र का पैमाना सामान्यत: तीन तरीकों से व्यक्त किया जाता है। ये हैं: विवरण रूप : 1 cm = 100 km

प्रतिनिधि भिन्न : 1:10,000

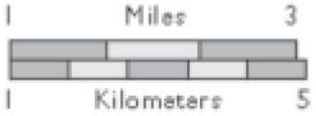

Bar Scale

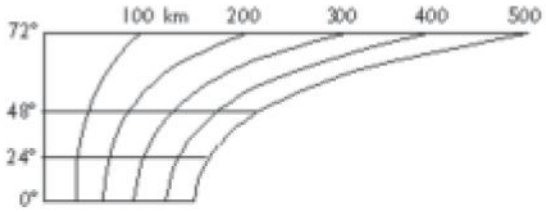

Variable Scale

पैमाना पर ग्राफिक: बार पैमाना, चर पैमाना (variable scale)

एक मानचित्र के पैमाना की सहायता से कोई भी स्थानों के बीच की दूरी, नदी की लम्बाई या सीमा की लम्बाई आदि को माप सकता है।

उदाहरण के लिए–भारत का राजनीतिक मानचित्र विवरण रूप : 1 cm = 500 km में दिये गये पैमाने के साथ है। मुंबई से दिल्ली के बीच सीधी दूरी मापने के लिए मानचित्र पर उपकरण बाक्स के विभाजक का उपयोग करें, इसे मानचित्र पर दो बिन्दुओं (एक मुंबई और दूसरा छोर दिल्ली पर) पर रखें। फिर मानचित्र से विभाजक को हटा लें। इसे एक मापक पैमाना पर रखें और लम्बाई की दूरी से.मी. में पायें। अब आप मानचित्र पर प्राप्त दूरी को 500 से गुणा करें जो 1 cm : 500 kms है, पैमाना के अनुसार। उत्पाद जो आपने पाया है सतह पर मुंबई और दिल्ली के बीच सीधी दूरी है।

मान लें आप एक नदी की लंबाई का पता लगाना चाहते है जिसका चिह्न मानचित्र पर मुड़ा हुआ है आप विभाजक के बजाय धागे के एक टुकड़े का उपयोग करें, नदी के निशान के साथ धागे को घुमायें फिर मानचित्र पर नदी की लंबाई को प्राप्त करें और सतह पर इसकी वास्तविक लंबाई की गणना मानचित्र के पैमाने का उपयोग कर करें।

मानचित्र के पैमाना का उपयोग करना सीख कर विद्यार्थी अनुमानित दूरी/लंबाई की गणना स्वयं कर सकते हैं। यह विद्यार्थियों की रूचि को बढ़ाता है और वे मानचित्र से खेल सकते हैं, समूहों में एटलस का उपयोग कर खाली समय के दौरान दूरी की गणना करते हैं। यह उनके मानचित्र के पैमाना के उपयोग के कौशलों को बढ़ायेगा।

क्रियाकलाप-16

अपनी पसंद का कोई मानचित्र लें। इसके मानचित्र पैमाना को पहचानें। किन्हीं दो स्थानों के बीच दूरी की गणना करें। एक नदी के किसी भाग की लंबाई मापें।

.....

.....

टिप्पणी

.....

.....

.....

रंगों को पढ़ना–मानचित्र में प्रयुक्त रंगों के अर्थ मानचित्र की प्रकृति पर निर्भर करते हैं। यदि यह एक राजनीतिक मानचित्र है तो रंग विभिन्न राजनीतिक इकाईयों को सूचित करते हैं। यदि यह एक भौतिक मानचित्र है तो रंग धरती की ऊंचाई, समुद्र की सतह से ऊपर या पानी की गहराई समुद्र की सतह के नीचे दिखाता है। भौतिक मानचित्र में निश्चित रंग रूढ़िवादी रूप में प्रयुक्त होते हैं और वे सार्वभौमिक रूप से मान्य हैं। उदाहरणार्थ–हरे रंग की छाया नीची जमीन को दिखाता है जबकि गाढ़ा हरा समुद्र की सतह से निम्न भूमि की न्यूनतम ऊंचाई को दिखाता है।

अब हम देखते हैं कि एक दी गयी भूमि या जल की गहराई को वास्तविक ऊंचाई को कैसे पाये। यह नक्शा के एक तत्व का उपयोग कर समझा गया है जहां रंग प्रयुक्त हुए हैं। यह मानचित्र पर एक आयताकार छोटा बॉक्स बना होता है जो छोटे रंगों से युक्त होता है। इसमें विभिन्न रंग होंगे। प्रत्येक छोटा बाक्स ऊंचाई या गहराई को दिखाता है। (रंगों का नमूना आख्यान में दिया गया होता है)

आख्यान को पढ़कर आप दिये गये मानचित्र में प्रयुक्त रंगों के अर्थ को समझ सकते हैं। आप अपने अधिगमकर्ताओं के विभिन्न विषयों के भिन्न रंगों से युक्त मानचित्रों के पढ़ने के कौशल को विकसित करने में सहायता भी कर सकते हैं।

क्रियाकलाप-17

भारत के भौतिक मानचित्र में अपने राज्य और दो पड़ोसी राज्यों को पहचानें। इन राज्यों में प्रयुक्त विभिन्न रंगों को देखें। इन प्रत्येक राज्यों में ऊंचाई की सीमा क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

मानचित्र के प्रतीकों को पढ़ना–सभी मानचित्र पृथ्वी की एक या अन्य सूचना को धारण करते हैं। सूचना विभिन्न मानचित्रों में विभिन्न रूपों में दिखायी गई होती है। यह रंगों या प्रतीकों जो भी उपयुक्त हो के माध्यम से दिखायी जाती है। आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि रंगों को कैसे

पढ़ते हैं। अब हम प्रतीकों के बारे में समझें। प्रतीकों वर्णों या तस्वीरों के रूप में होते हैं। वे मानचित्र में पृथ्वी पर संसाधनों को प्रस्तुत करते हैं।

इन प्रतीकों के अर्थ को समझने में आप जब सक्षम होते हैं तो आप मानचित्रों से सूचनायें प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में आप मानचित्रों में प्रयुक्त प्रतीकों को पढ़ने में सक्षम है।

हम मानचित्र में प्रयुक्त प्रतीकों के अर्थ कैसे जान सकते है? यह ठीक उसी प्रकार है जैसे आपने रंगों को आख्यान का उपयोग कर पढ़ा। किन्तु आख्यान में रंगों की बजाय होंगे। (प्रतीकों का नमूना आख्यान-पारंपरिक और रूढ़िवादी दिये गये हैं।) दो प्रकार के प्रतीक हैं। ये हैं पारंपरिक और गैर पारंपरिक। पारंपरिक प्रतीकों के अर्थ सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य है और ये बहुत लम्बे समय से प्रयुक्त हो रहे हैं। जबकि गैर पारंपरिक प्रतीक मानचित्र बनाने वाले की पसंद के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। एक बार जब आप मानचित्र पर रंगों और प्रतीकों को पढ़ने का कौशल विकसित कर लेते हैं, तो आप मानचित्र को समझने की बेहतर स्थिति में होंगे।

क्रियाकलाप-18

कल्पना करें आप एक मानचित्र निर्माता है। आपको एक स्मारक भारत के पांच राज्यों में प्रत्येक में दिखाते हुए एक मानचित्र तैयार करने को कहा गया है। आप क्या प्रतीक उपयोग करेंगे। एक आख्यान तैयार करें।

.....

.....

.....

.....

.....

विभिन्न मानचित्रों को संबद्ध कर निष्कर्ष बनाना–दिशाओं को सूचित करने, मानचित्र के पैमाना को पहचानने, दूरियों की गणना करने, प्रतीकों को पढ़ने और रंगों को पढ़ने के आप के कौशलों को विकसित होने के पश्चात् निष्कर्ष निकालना बहुत आसान है। आओ हम जाने कि निष्कर्ष है क्या? निष्कर्ष तथ्यों के अवलोकन के तार्किकता के द्वारा एक निर्णय या सारांश पर पहुंचना है। यह अप्रत्यक्ष रूप से सुझाव देता है कि कुछ सत्य है।

सारांश पर पहुंचने के लिए मानचित्रों से सूचना संग्रह करना क्या यह संभव है? हम इसका पता लगाते हैं। मान लो आपको कहवा उपजाने के बारे में पढ़ना है तो भारत का कृषि मानचित्र लें। आख्यान की सहायता लेकर उस स्थान को चिह्नित करें जहां भारत में कहवा उपजाया जाता है। भारत के भौतिक मानचित्र में देखें और उस स्थान पर जहां कहवा उपजाया जाता है की भूमि के प्रकारों को पहचाने। क्या आप अवलोकन के आधार पर सामान्यीकृत करने में सक्षम होंगे कि किस प्रकार की भूमि कहवा उपजाने के लिए अपेक्षित है? आप निश्चयपूर्वक कहेंगे कि इसके लिए उच्च भूमि की जरूरत है। आप उच्च भूमि की ऊंचाई के प्रसार के बारे में भी बता

टिप्पणी

सकते हैं। जलवायु मानचित्र, मिट्टी का मानचित्र, वर्षा का मानचित्र, जनसंख्या का मानचित्र आदि को देखें और पता लगायें उन स्थानों में कहवा उत्पादन के लिए कैसी स्थितियां अनुकूल हैं। यद्यपि आप एक स्थान की भविष्यवाणी कर सकते हैं जहां कहवा उपजाया जा सकता है। यह कैसे हुआ कि आपने एक मानचित्र के कुछ अवलोकनों या एक से अधिक मानचित्र के कुछ अवलोकनों पर आधारित निष्कर्ष बना सकते हैं।

क्रियाकलाप-19

कोई एक अनुमान बनायें और लिखें कि आप कैसे अधिगमकर्ताओं को मानचित्रों पर आधारित उस अनुमान को बनाने के लिए पढ़ायेंगे? क्रम से वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

एक पाठ को पढ़ाते समय एक से अधिक विधियों का उपयोग करना एक शिक्षक के लिए संभव है। नीचे सारणी कक्षा VII के भूगोल की पाठ्यपुस्तक से एक पाठ के विश्लेषण को देती है। (NCERT, 2007) पाठ नं. 6 प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव

विषय वस्तु विश्लेषण	उद्देश्य	रणनीति
प्राकृतिक वनस्पति-अर्थ	'प्राकृतिक वनस्पति' के अर्थ की व्याख्या करें।	विचार विमर्श
प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारक	प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारकों को पहचानना	मानचित्र आधारित अधिगम
प्राकृतिक वनस्पति की श्रेणियां	जंगलों, चारागाहों और झाड़ियों में दिये गये वनस्पतियों को पहचानना	सहयोगी अधिगम
प्राकृतिक वनस्पति के प्रकारों की स्थिति	जंगलों के विभिन्न प्रकारों की स्थिति को पहचानना	मानचित्र आधारित अधिगम
जलवायु	जलवायु और प्राकृतिक वनस्पति के बीच संबंध का पता लगाना	मानचित्र आधारित अधिगम
पेड़ (वृक्ष)	विभिन्न प्रकार के जंगलों के लक्षणों का वर्णन करना।	परियोजना विधि, संकल्पना मानचित्रण
वन्य जीव	प्रत्येक वनों के वन्य जीवों का वर्णन करना	भूमिका निर्वाह
वनों की कटाई	वनों की कटाई के बुरे परिणामों का वर्णन करना।	विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र

प्रगति जाँच-11

1. दक्षिण और पश्चिम के बीच कौन दिशा आती है?

.....

.....

.....

2. सिक्किम के सापेक्ष पश्चिम बंगाल किस दिशा में है?

.....

.....

.....

3. मानचित्र पैमाना क्या है?

.....

.....

.....

4. तीन प्रकार के मानचित्र पैमानों का नाम लिखें?

.....

.....

.....

5. मानचित्र पैमाना का उपयोग कर हमें कौशल को क्यों विकसित करना चाहिए?

.....

.....

.....

6. एक राजनीतिक मानचित्र में रंग क्या करते हैं?

.....

.....

.....

टिप्पणी

7. रंगों को इंगित करने में आख्यान क्या करते है?

.....

.....

.....

8. एक मानचित्र पर प्रतीक क्या प्रस्तुत करते हैं?

.....

.....

.....

9. दो प्रकार के प्रतीक कौन-कौन है?

.....

.....

.....

10. प्रतीक आपको मानचित्र में क्या पढ़ने में सहायता करते हैं?

.....

.....

.....

11. निष्कर्ष से आप क्या समझते है?

.....

.....

.....

12. निष्कर्ष निकालने के लिए कौन से मानचित्र कौशल जरूरी है?

.....

.....

.....

7.5 सारांश

अब तक आपने विविध विधियों के बारे में सीखा जिसका उपयोग आप अधिगमकर्ताओं के लिए अपनी कक्षा को रूचिपूर्ण बनाने में कर सकते हैं। कक्षा में विविधता लाना नीरसता को हमेशा तोड़ती है। इसलिए एक या एक से अधिक विधि चुनें, निर्देशात्मक रणनीति को विकसित करें और अपनी कक्षा को अधिगमकर्ताओं के लिए जीवंत और फलदायी बनायें। जितनी बड़ी अधि गमकर्ताओं की सहभागिता उतनी बड़ी उनकी उपलब्धि। यदि हम कक्षा में अधिगमकर्ता की भागीदारी चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम अधिगमकर्ता केंद्रित उपागमों का अनुकरण करें जैसा कि इकाई में वर्णित है या कोई अन्य विधि जो आपकी जानकारी में हो। आशा हैं आप अच्छी तरह तैयार हो गये होंगे और सामाजिक विज्ञान की कक्षा में जीवन लायेंगे।

7.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

Kochhar, S.K. (1999). Teaching of Social Studies, New Delhi; Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Kochhar, S.K. Methods and Techniques of Teaching. Online book.

Kohli, A.S.(1999) Teaching of Social Studies, New Delhi; Anmol Publications Pvt. Ltd.

Kulkarni, S.P. (2009). Resource Material based on Critical Pedagogy for Teachers at Secondary Level of Kerala State, Mysore: Regional Institute of Education.

NCERT (2005). National Curriculum Framework, New Delhi

NCERT (2006). Position Paper. National Focus Group on Teaching of Social Sciences, New Delhi; NCERT

Sharma, S.(2006). Constructivist Approaches to Teaching and Learning; New Delhi: NCERT

Shaida, B.D. and Shaida, A.K. (2003). Teaching of Social Studies. New Delhi: Arya Book Depot.

Varma, O.P. and Vedanayagam E.G. (1988). Geography Teaching, New Delhi: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

7.7 अन्त्य इकाई अभ्यास

इस इकाई में दिये गये वर्णन पर आधारित कुछ प्रश्न नीचे दिये गये है जिसका जवाब आपको देना है। आशा है आप इनका जवाब देने में सहज अनुभव करेंगे।

टिप्पणी

(a) अधिगमकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञान का ज्ञान क्यों महत्त्वपूर्ण है?

(b) किन्हीं चार लक्षणों पर चर्चा करें जो एक सामाजिक विज्ञान की कक्षा में होनी अपेक्षित हैं?

(c) किस आधार पर शिक्षण के लिए एक रणनीति चुनते हैं?

(d) भूमिका निर्वाह एवं नाटक के बीच अंतर स्पष्ट करें।

(e) अधिगम केंद्रित विधि के रूप में परियोजना विधि पर आप क्या विचार करते है?

(f) सोदाहरण समझायें कि आप एक संकल्पना को सहयोगी अधिगम के माध्यम से कैसे पढ़ायेंगे?

(g) एक संकल्पना मानचित्र तैयार करने में सम्मिलित चरणों को लिखें। सोदाहरण प्रस्तुत करें।

(h) विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र के उपयोग के लिए एक योजना लिखें।

(i) समस्या समाधान विधि को आप कैसे अपनायेंगे?

(j) एक विषय का चयन करें और लिखे कि उस विषय को पढ़ाने के लिए आप अधि गमकर्ताओं को उस विषय को पढ़ाने के लिए कैसे आनुभाविक अधिगम प्रदान करने की कोशिश करेंगे?

(k) सामाजिक विज्ञान के अंग इतिहास को पढ़ाने में कथा वर्णन विधि को आप कैसे अपनायेंगे? एक उदाहरण दें।

(l) मैदानी दौरा के फायदे क्या हैं?

(m) विचार-विमर्श विधि में विद्यार्थियों की भूमिका का वर्णन करें।

(n) विद्यार्थियों में मानचित्र अध्ययन कौशल को विकसित करना क्यों जरूरी है?

(o) मानचित्रों का उपयोग कर अधिगमकर्ताओं को अनुमान के कौशल को आप किस प्रकार विकसित करेंगे सोदाहरण समझायें।

टिप्पणी

इकाई-8 सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 अधिगम उद्देश्य

8.2 अधिगम स्रोत : अवधारणा, आवश्यकता और महत्त्व

8.3 अधिगम संसाधनों के प्रकार

- *8.3.1 Realia और Diorama*
- *8.3.2 मानचित्र और ग्लोब*
- *8.3.3 प्रतिरूप (मॉडल)*
- *8.3.4 ग्राफ़्स, चार्ट्स और कार्टून*
- *8.3.5 कालक्रम*
- *8.3.6 पुस्तकें*
- *8.3.7 समाचार पत्रों की कटिंग*
- *8.3.8 संग्रहालय*
- *8.3.9 चलचित्र*
- *8.3.10 इन्टरनेट*
- *8.3.11 विद्यालय और समुदाय का अधिगम स्रोत के रूप में उपयोग*

8.4 अधिगम संसाधनों का विकास

8.5 अधिगम संसाधनों की व्यवस्था

8.6 सारांश

8.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

8.8 इकाई अन्त्य अभ्यास

8.0 प्रस्तावना

इकाई 7 में, हमने विभिन्न शिक्षण विधियों और व्यूह रचनाओं की चर्चा की जिनका प्रयोग आप सामाजिक विज्ञान के विभिन्न शीर्षकों का शिक्षण करते समय कर सकते हैं। आशा करते हैं कि आप अपनी उन अभिनव शिक्षण विधियों और व्यूह रचनाओं से अवगत हो चुके हैं। अग्रिम चरण में आपके सामाजिक विज्ञान शिक्षण कौशलों को निखारने और विभिन्न संसाधनों का

टिप्पणी

विकास और प्रयोग कर सकने की व्यावसायिक योग्यता के विकास में आपकी सहायता करने के लिये, अधिगम संसाधनों पर एक इकाई प्रस्तुत की जा रही है। आपको कक्षा-कक्ष क्रियाकलापों जैसे निर्देशों की योजना, निर्देशात्मक अधिगम व्यूह रचना और कक्षा व्यवस्था संबंधी निर्देशों के महत्त्व की जानकारी से अवगत होना चाहिये। ये सभी क्रियाकलाप, विभिन्न संसाधनों का प्रयोग, शिक्षक के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। निर्देशों की गुणवत्ता, शिक्षक द्वारा इन संसाधनों के उचित प्रयोग पर निर्भर करती है। इसलिये, इन संसाधनों के बारे में सीखना और उनका निर्देशात्मक उद्देश्यों के हेतु सर्वोत्तम प्रयोग कैसे किया जाए, बहुत ही उचित है। इस इकाई में हम अधिगम स्रोत के अर्थ, एक स्रोत केंद्र, और एक स्रोत केंद्र पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधनों के परीक्षण की चर्चा करेंगे। हम इन संसाधनों की व्यवस्था करने तथा साथ ही साथ सरलता से स्रोत उपलब्ध न होने पाने की स्थिति में आप स्वयं इन संसाधनों की उत्पत्ति कर सकें से संबंधित कुछ सुझावों की चर्चा करेंगे। इन संसाधनों की उत्पत्ति और व्यवस्था करने में अध्यापक और छात्र की भूमिका की भी चर्चा करेंगे। कैसे अध्यापक, छात्र और समुदाय निर्देशात्मक स्रोत के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, पर भी इस इकाई में चर्चा की जायेगी।

8.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त, आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधनों की अवधारणा और अर्थ का वर्णन कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधनों की आवश्यकता की चर्चा कर सकेंगे।
- विभिन्न अधिगम संसाधन को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत कर सकेंगे।
- विभिन्न अधिगम संसाधन का विकास कर सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष निर्देशों के लिये उचित अधिगम संसाधन का चयन कर सकेंगे।
- विभिन्न अधिगम संसाधन को तैयार और उनका प्रयोग कर सकेंगे।
- अधिगम संसाधन केंद्र की व्यवस्था सामाजिक विज्ञान में कर सकेंगे।
- सामुदायिक संसाधन का अधिगम संसाधनों के रूप में प्रयोग सामाजिक विज्ञान में कर सकेंगे।

8.2 अधिगम संसाधन : अवधारणा, आवश्यकता, और महत्त्व

संसाधन, दैनिक बोलचाल में, उपयोगी वस्तु को कहा जाता है, जिसका कुछ उपयोग और मूल्य होता है। सामाजिक विज्ञान की शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में विषय वस्तु के सम्पादन में हम विभिन्न वस्तुओं, पदार्थों, लोगों और भवनों (इमारतों) का प्रयोग करते हैं। ये सभी अधिगम संसाधन कहलाते हैं। इन में से कुछ संसाधनों को निर्देशात्मक सामग्री/निर्देशात्मक माध्यम के

रूप में संदर्भित किया जाता है। अधिगम संसाधनों की अकूत संपदा है जिनका प्रयोग सामाजिक विज्ञान शिक्षण में किया जा सकता है। आप सामान्य अधिगम संसाधन जैसे श्यामपट्ट, चार्ट्स, मॉडल्स, वीडियो फिल्म, रेडियो आदि से भलीभांति परिचित हैं।

किसी भी ऐसे व्यक्ति, पदार्थ, परिस्थिति और नियोजित या सृजित अनुभव को जो छात्र अथवा अधिगमकर्ता को क्रियाकलाप सीखने या निर्देशित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं, अधिगम संसाधन कहलाते हैं। कुछ भी जो विद्यार्थी को सीखने की सुविधा प्रदान करता है, अधिगम संसाधन कहलाता है।

संसाधनों का प्रयोग अध्यापक, शिक्षक अथवा दोनों के द्वारा ही निर्देशन प्रक्रिया के दौरान निर्दिष्ट उद्देश्यों को अधिकतम रूप में ग्रहण करने के लिये किया जा सकता है।

क्रियाकलाप-1

इन संसाधनों के अधिक महत्त्वपूर्ण निवेशों के समक्ष अनावृत्त होने से पूर्व, आइये हम आपके विद्यालय में अधिगम संसाधनों की उपलब्धता के हेतु एक छोटा सा सर्वेक्षण करते हैं। अपने विद्यालय अनुभवों पर आधारित, उनकी उपलब्धता के स्थान के वर्गीकरण के आधार पर वर्गीकृत अधिगम संसाधनों की सूची बनाइये।

अधिगम संसाधनों की उपलब्धता	अधिगम संसाधन का प्रकार
कक्षा कक्ष के अंदर	
पुस्तकालय में	
विद्यालय परिसर में (पुस्तकालय को छोड़कर)	
समुदाय में	

आपने चॉक से लेकर कम्प्यूटर तक के पदार्थों को सूचीबद्ध किया होगा। ये सभी कक्षा निर्देशन के विभिन्न चरणों यथा योजना, प्रस्तुतीकरण और समापन नामक चरणों में प्रयुक्त होते हैं। इनका उपयोग सामाजिक विज्ञान के किसी भी घटक के लिये, किसी आयु अथवा समूह के विद्यार्थियों के साथ किया जा सकता है। परन्तु एक शिक्षक के रूप में आपको अधिगम संसाधनों के चयन में अपनी आवश्यकता और उनकी उपलब्धता के आधार पर बुद्धिमत्ता पूर्ण चयन का निर्णय लेना चाहिये। क्या आप इन अधिगम संसाधनों के चयन हेतु आवश्यक आधार बिंदुओं को सोच सकते हैं?

सामाजिक अध्ययन के Focus Group Paper में अधिगम संसाधनों की महत्ता पर विशेष बल दिया गया। (NCF 2005)

शिक्षण प्रक्रिया में श्रव्य-दृश्य सामग्रियों, चित्रों, चार्ट्स और मानचित्रों, पुरातात्विक प्रतिरूपों और मूर्त संस्कृतियों का अधिकतम प्रयोग किया जाना चाहिये।

टिप्पणी

यदि अधिगम संसाधनों की महत्ता के संबंध में इतना सबकुछ कहा गया है, आप एक प्रश्न कर सकते हैं, कि इन अधिगम संसाधनों को प्रयोग करने की आवश्यकता ही क्या है जबकि शिक्षण अधिगम उनके बगैर भी संभव है। जैसे कि आप शिक्षण कार्य में संलग्न हैं, आप अपने शिक्षण में अधिगम संसाधनों का प्रयोग करने और नहीं करने में अंतर का अनुभव स्वयं ही कर सकते हैं। हमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगम संसाधनों की आवश्यकता और महत्त्व को समझना चाहिये।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगम संसाधनों की आवश्यकता और महत्त्व–शिक्षण अधि गम प्रक्रिया में अधिगम संसाधनों की आवश्यकता और महत्त्व का वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं में दिया गया है:

- इन अधिगम संसाधनों का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाता है।
- अधिगम स्रोत विद्यार्थियों को अधिगम उद्देश्यों को अधिक प्रभावशाली ढंग से और कुशलतापूर्वक प्राप्त करने में सहायता करते हैं।
- अधिगम स्रोत अवधारणाओं को स्पष्ट करने, व्याख्या करने और उन का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं। वे सूचना प्रसारण में स्पष्टता, परिशुद्धता और यथार्थता प्रदान करते है।
- वे विद्यार्थियों को तीव्रता से सीखने, अधिक समय तक याद रखने और अधिक यथार्थ सूचना प्राप्त करने में सहायक होते हैं।
- इन में से कुछ संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव प्राप्त करने की तैयारी में किया जाता है।
- वे दृश्य छवियों का निर्माण करते हैं, जो सीखी गई अवधारणा के पुनर्बलन में सहायक होती हैं। इनमें से कुछ एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों को उत्प्रेरण प्रदान करते हैं। (जैसे वीडियो फिल्म और दूरदर्शन)
- इनमें वास्तविक (सीधे) या लगभग वास्तविक अनुभव प्रदान करने की भी क्षमता होती है।
- कुछ स्रोत विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से स्वयं उनकी गति के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। (उदाहरण के लिये कम्प्यूटर की सहायता से सिखाने वाले निर्देशात्मक कार्यक्रम, और छोटे समूह में (मॉडल, एसाइंगमेंट्स, चर्चा हेतु अखबार की कटिंग्स आदि), या बड़े समूह में (जैसे 35mm पर्दे पर चलचित्र या स्लाइड शो)

प्रगति जांच-1

नोट– अ) आपके उत्तर देने हेतु रिक्त स्थान दिया गया है।

ब) अपने उत्तरों की तुलना इकाई अंत में दिये गये उत्तरों से कीजिये।

1. अधिगम स्रोत क्या होते हैं?

.....

.....

.....

2. अधिगम संसाधनों की आवश्यकता और महत्त्व के पक्ष में तर्क दीजिये?

.....

.....

.....

8.3 अधिगम संसाधनों के प्रकार

सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधनों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है; ये हैं प्रिंट आधारित अधिगम स्रोत और नॉन-प्रिंट आधारित अधिगम स्रोत।

क्रियाकलाप-2

अधिगम संसाधनों की अवधारणा में आप सामाजिक विज्ञान में उपलब्ध अधिगम संसाधनों का सर्वेक्षण पहले ही कर चुके हैं। अधिगम संसाधनों का प्रिंट आधारित और नॉन-प्रिंट आधारित वर्गीकरण कीजिये।

प्रिंट आधारित अधिगम स्रोत	नॉन प्रिंट आधारित अधिगम स्रोत

विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ावा देने के लिये सामाजिक विज्ञान शिक्षक के रूप में आप विभिन्न प्रकार के अधिगम संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। इस भाग में, हम उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थियों में अधिगम को बढ़ावा देने हेतु सामान्यत: प्रयोग किये जाने वाले अधिगम संसाधनों की चर्चा करेंगे।

Realia और चित्रावली–पद Realia पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली से रूपांतरित शब्द है; शब्द Realia का तात्पर्य (संबंध) वास्ताविक जगत की उन त्रिविमीय आकृतियों जैसे सिक्के, औजार, और वस्त्र आदि से है जिनका प्रकाशित सामग्री के क्रम में सरलता से वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। ये या तो मानव निर्मित (शिल्पकृति, औजारों, बर्तन आदि) या प्रकृति प्रदत्त (निदर्श, नमूने आदि), प्राय: पुस्तकालय या संग्रहालय के लिये उधार लिये गये, खरीदे गये या विद्यालय को दान के रूप में प्राप्त, शिक्षक द्वारा, कक्षा शिक्षण अथवा प्रदर्शनी में प्रयोग किये जा सकते हैं। पुरालेख और पाण्डुलिपि संग्रह, प्राय: प्राप्त किये जाने वाले स्मृति चिह्न जैसे बिल्ले (बैज), प्रतीक चिह्न, पदचिह्न, आभूषण, चमड़े का सामान, सूची शिल्प आदि, उपहारों से जुड़े व्यक्तिगत प्रपत्र। अधिकांश सरकारी या संस्थागत अभिलेखागार कानूनी दस्तावेजों के बिना वस्तुओं को स्वीकार नहीं करते हैं, वे उन्हें तब ही स्वीकार करते हैं जब कि उनका वैध ानिकतौर पर मूल्य हो। मिश्रित वस्तुएं सामान्यत: दाता के द्वारा कानूनी तौर पर हस्ताक्षरित दस्तावेजों के साथ पुरातत्वविद को उसके विवेकपूर्ण निर्णय के द्वारा उस पुरातत्व को नष्ट, विनिमय, विक्रया या किसी भी प्रकार से उसका निबटारा करने की अनुमति के साथ दी जाती हैं। तत्पश्चात्, मिश्रित वस्तुओं को प्रयोग करने अथवा न करने का निर्णय पुरातत्वविद के पर निर्भर करता है।

Realia किस प्रकार प्राप्त किये जाते है?

क्षेत्र भ्रमण के आयोजन के समय चट्टानों, मिट्टी, खनिज संसाधनों के नमूनों का संग्रह किया जा सकता है। आप इन्हें समुदाय से प्राप्त कर सकते हैं या इन्हें संग्रहालयों से उधार भी लिया जा सकता है।

Realia की सहायता से शिक्षण, विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न करता है क्योंकि उन्हें सदैव कृत्रिम वस्तुओं की अपेक्षा वास्तविक वस्तुऐं अधिक पसंद आती हैं। स्रोत संबंधी अध्याय का शिक्षण करते समय आप मिट्टी, चट्टानों, खनिजों, कृषि उत्पाद के निदेर्शों (Specimens) का प्रयोग कर सकते हैं। राजनैतिक इतिहास का शिक्षण करते समय सिक्कों, आभूषणों, पोशाकों आदि का प्रयोग किया जा सकता है। कृषि संबंधी अध्याय का शिक्षण करते समय विभिन्न फसलों के नमूनों का प्रयोग छात्रों को वास्तविक अनुभव प्रदान करने के लिये किया जा सकता है।

(अ) पत्थरों से निर्मित औजार

(ब) प्राचीन भारतीय सिक्के

(स) कृषि उपकरण

(द) खनिज संसाधनों के निदर्श (Specimens)

चित्र 8.1 Realia

चित्रावली–पद "Diorama" का तात्पर्य, शैक्षिक या मनोरंजन के उद्देश्य से प्रयोग किये जाने वाले ऐतिहासिक घटनाओं को पारंपरिक रूप से दर्शाने वाले दृश्य, प्राकृतिक दृश्य या नगरचित्र, के अंशत: त्रि-विमीय, पूर्ण आकार प्रतिरूप या मानक प्रतिरूप से लिया जाता है।

Diorama का निर्माण केसे किया जाता है?

Diorama का निर्माण गत्ते, थर्माकोल, मिट्टी, रेडीमेड कृत्रिम सामग्री जैसे पौधे, झाड़ियों, शाकों आदि की सहायता से किया जाता है।

किसी पाठ का नाम बताइये जिसमें Diorama का प्रयोग किया जा सकता है?

.....

.....

.....

भूगोल की अधिकांश पुस्तकों में Diorama के प्रयोग के लिये पर्याप्त संभावनायें उपलब्ध है। उदाहरण के लिये रेगिस्तानों में जीवन (चित्र 8.2), सहारा मरुस्थल में मरीचिका का वर्णन Diarama के माध्यम से किया जा सकता है, इसी प्रकार ठंडे मरुस्थलों में जीवन भी प्रदर्शित किया जा सकता है। ब्रह्मपुत्र घाटी में धान की खेती और आसाम के चाय बागानों का भी सुन्दर Diorama निर्मित किया जा सकता है। वन्य जीवन और पौधों की प्राकृतिक वृद्धि के लिये Diorama तैयार किया जा सकता है।

Diorama के निर्माण में बहुत समय लगता है, अत: विभिन्न कक्षाओं के साथ साझा प्रयोग, और अन्य वर्षों में भी प्रयोग में लाया जाना चाहिये।

इस स्तर पर Diorama और Realia का प्रयोग क्यों?

चूंकि इस स्तर पर बालक अवलोकन द्वारा अधिक सीखते हैं, किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के जीवनशैली की अनुभूति कराने के लिये Diorama का प्रयोग आवश्यक है।

(अ) मरुस्थल में जीवन

(ब) ध्रुवीय प्रदेशों में जीवन

चित्र 8.1 : Diorama

टिप्पणी

8.3.2 मानचित्र एवं ग्लोब

यह कहा जाता है कि ग्लोब एवं मानचित्र सामाजिक वैज्ञानिकों और भूगोल विदों के लिये यंत्र हैं। आप ग्लोब और मानचित्र से पहले ही परिचित हैं। मानचित्र, पृथ्वी की बाह्य सतह या भाग का निर्धारित मानकों के अनुसार समतल सतह पर खींचा गया चित्र या प्रस्तुतीकरण होता है। जबकि ग्लोग पृथ्वी का लघु रूप होता है। ये विभिन्न आकार-प्रकार के होते हैं–इतने बड़े कि जिन्हें सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले नहीं जाया जा सकता, जेब के आकार वाले छोटे ग्लोब, गुब्बारे की तरह के ग्लोब, जिनमें हवा भरी जा सकती है और हाथ में आ सकते हैं और जिन्हें सरलतापूर्वक इधर उधर ले जाया जा सकता है। मानचित्र, एक ग्लोब की अपेक्षा अधिक जानकारी प्रदान करते हैं। मानचित्र विभिन्न प्रकार के होते हैं। पृथ्वी के प्राकृतिक लक्षणों जैसे पर्वत, पठार, मैदान, नदियां, समुद्र आदि को प्रदर्शित करने वाले मानचित्रों को भौतिक या उभार दार मानचित्र कहा जाता है। नगरों, कस्बों विभिन्न गांवों, विभिन्न राष्ट्रों, और विश्व के राज्यों उनकी सीमाओं के साथ प्रदर्शित करने वाले मानचित्रों को राजनैतिक मानचित्र कहा जाता है। कुछ मानचित्र विशिष्ट सूचनाओं पर केंद्रित होते हैं, जैसे तापमान, वर्षा, जंगल, खनिज, उद्योग, जनसंख्या, यातायात आदि को प्रदर्शित करने वाले मानचित्र इन मानचित्रों को प्रासंगिक (Themetic) मानचित्र के रूप में जाना जाता है। मानचित्र अवधारणाओं को सीखने समझने में, विचारों को संश्लेषित और एकीकृत करने, तर्कपूर्ण अनुमान और अवलोकन करने में सहायक होते हैं। आप पूर्व इकाई में मानचित्र के साथ शिक्षण के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं।

(अ) भारत : राजनैतिक मानचित्र

(ब) भारत : भौगोलिक मानचित्र

(स) ग्लोब

टिप्पणी

8.3.3 मॉडल्स या प्रतिरूप

मॉडल्स त्रि-विमीय दृश्य सामग्री होते हैं। वे आकार और बनावट के अतिरिक्त वस्तुओं का सभी संदर्भों में यथार्थ रूप प्रस्तुत करते हैं। बड़ी वस्तुओं को छोटे आकार का कर दिया जाता है जिससे कि विद्यार्थी उनका अवलोकन और अधिक परिशुद्धता से कर सकें। मॉडल्स तीन प्रकार के हो सकते हैं :

(i) **साधारण (स्थैतिक) :** ग्लोब पृथ्वी का नमूना है। मैदानों, पठार, पर्वतों, डेल्टा, घाटियों, दर्रों और तीव्र ढाल वाली गहरी घाटियों के स्थिर मॉडल का प्रयोग कोई भी कर सकता है।

(ii) **खंडीय (Sectional) :** विभागीय मॉडल्स से तात्पर्य किसी विशिष्ट भाग के लक्षणों को प्रदर्शित करने वाले मॉडल से है। ये लम्बवत/क्षैतिज या तिरछे खंड हो सकते हैं। पृथ्वी के आन्तरिक भाग केंद्र, परतों और भू परिपटी को प्रदर्शित करने वाला, एक प्रकार का खंडीय मॉडल है। आप जल प्रपात के खंडीय मॉडल भी प्राप्त कर सकते हैं।

(iii) **क्रियात्मक (Working) :** सौर मंडल, पृथ्वी की गतियां (घूर्णन और परिक्रमण), समुद्र की धारायें और पवनों के मॉडल्स हो सकते हैं। इस प्रकार के मॉडल्स में घटनाओं को मॉडल की क्रियाओं द्वारा समझाया जाता है। ज्वालामुखी, चंद्रमा की कलायें, या भूसतह की परतों में होने वाली गतियों का क्रियात्मक मॉडल बनाया जा सकता है।

साधारणत: मॉडल्स का निर्माण गत्ता कागज, लकड़ी, बांस, थर्माकोल, मोम, प्लास्टर ऑफ पेरिस, प्लास्टिक, धातु, मिट्टी, धागों आदि से किया जाता है। व्यक्ति द्वि विमीय चित्रों पर आधारित या किसी प्राकृतिक अथवा सांस्कृतिक दृश्य का अवलोकन कर के सरलता से मॉडल बना सकता है। Diorama की ही भांति मॉडल निर्माण भी एक अधिक समय लेने वाली प्रक्रिया है इसलिये, इसे भी अन्य कक्षाओं के साथ साझा किया जा सकता है और भविष्य में दीर्घकाल तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

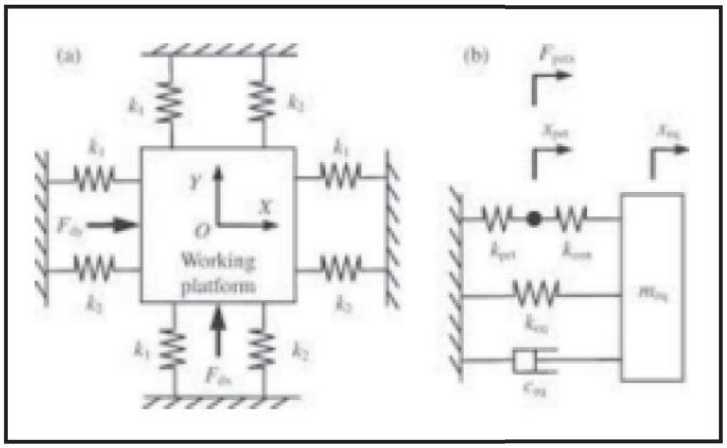

(अ) स्थिर मॉडल

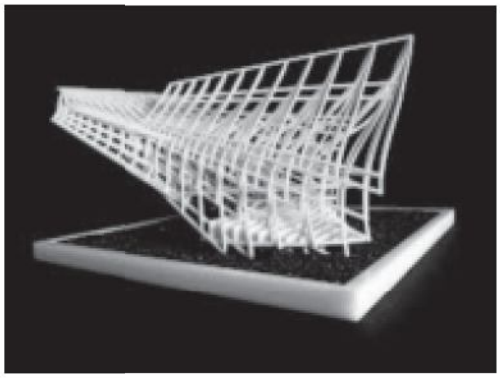

(ब) खंडीय मॉडल

(स) क्रियात्मक मॉडल

चित्र 8.3 मॉडल्स: स्थिर, खंडीय क्रियात्मक

8.3.4 चार्ट्स, ग्राफ्स और कार्टून्स

सर्वाधिक सामान्य रूप में कक्षा में प्रयोग किया जाने वाला अधिगम स्रोत चार्ट है। सामाजिक विज्ञान में चार्ट्स एक महत्त्वपूर्ण यंत्र के रूप में प्रयुक्त होते हैं। चार्ट एक साधारण समतल पर चित्रित दृश्य सामग्री है और, यदि यह उचित ढंग से प्रयोग में लायी जाये, तो दर्शायी गयी जानकारी को यह बहुत ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। चार्ट्स उन महत्त्वपूर्ण जानकारियों को वर्गीकृत करने में जिन्हें कई बार संदर्भित किया जाता है एक अति उत्तम साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। जिन विचारों को पढ़ते समय छात्र जटिलता का अनुभव करते हैं उन्हीं को संक्षिप्त में और सरल करने में चार्ट्स सहायता प्रदान करते हैं।

चार्ट्स के प्रकार

(i) **कथनात्मक :** इस प्रकार के चार्ट्स चित्रों और आकृतियों के द्वारा कहानी कथन करते हैं। इन चार्ट्स के द्वारा ऐतिहासिक विकास या इस की प्रक्रिया के पदों को चित्रित किया जाता है। जैसे–कोई विधेयक कानून कैसे बनता है।

(ii) **सारणिक :** ये चार्ट्स आंकड़ों की तुलना को सरल करने के लिये उन्हें सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं।

टिप्पणी

(iii) **संबंध मूलक** चार्ट्स कारण और प्रभाव के संबंध जैसे पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले घटक, स्रोत और जनसंख्या आदि को प्रदर्शित करते हैं।

(iv) **वंशानुक्रम चार्ट्स** एक ही उत्पत्ति स्रोत से विकसित जैसे परिवार के वंशानुक्रम को प्रदर्शित करते हैं।

(v) **वर्गीकरण चार्ट्स** विभिन्न प्रकार के संबंधों जैसे कृषि, उद्योगों और यातायात के साधनों आदि को इंगित करते हैं।

(vi) **संगठनात्मक चार्ट्स** संस्थानों जैसे किसी निकाय या सरकारी संस्था की आंतरिक संरचना को प्रदर्शित करते हैं।

(vii) **Flow (प्रवाही) चार्ट्स** उत्पादन प्रक्रिया जैसे इस्पात का निर्माण को प्रदर्शित करते हैं। इकाई अध्ययन करते समय ही शिक्षकों और छात्रों द्वारा सूचनाओं जैसे विकासशील मानकों के साधनों या अध्ययन संबंधी सामग्री का सारांश से संबंधित चार्ट्स तैयार किये जाते हैं।

मौखिक एवं चित्र रूप में संदेश पहुंचाने हेतु चार्ट्स का प्रयोग किया जाता है। आकृतियों, चित्रों, ग्राफ़, मानचित्रों, छवियों, आदि को चार्ट्स पर बहुत अच्छी तरह से दर्शाया जा सकता है। आप चार्ट्स या तो खरीद सकते हैं या फिर अपनी आवश्यकतानुरूप उनका निर्माण कर सकते हैं। विद्यार्थियों के अधिगम पर अच्छा प्रभाव डालने हेतु अंग्रेजी या हिंदी में उपलब्ध चार्ट्स को क्षेत्रीय भाषा में अनुवादित किया जा सकता है।

शेक्सपीयर के नाटकों के प्रदर्शनों की आवृति : 1755-1765

विधा	नाटकों की संख्या	प्रदर्शनों की संख्या	प्रति नाटक औसत
इतिहास	6	247	41.2
दु:खान्त	8	328	41
प्रेमकथानक	3	112	37
हास्य	9	161	18
योग	26	848	32.6

(Tabulation (सारणिक) चार्ट्स)

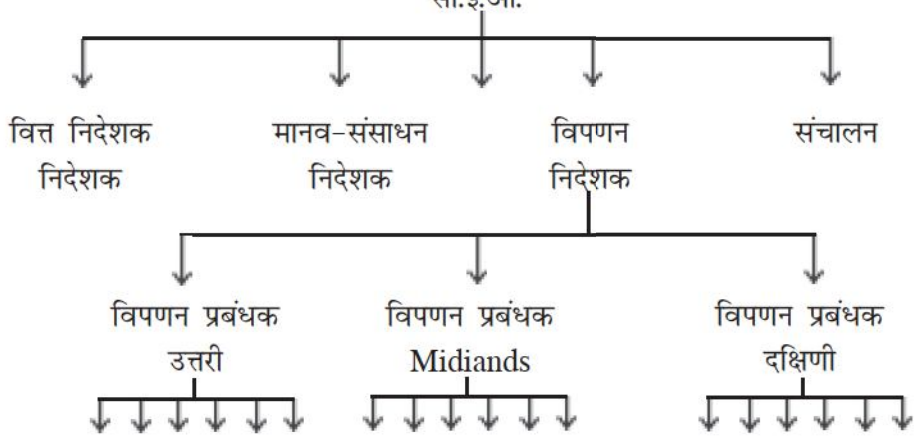

(संगठनात्मक Organisation चार्ट)

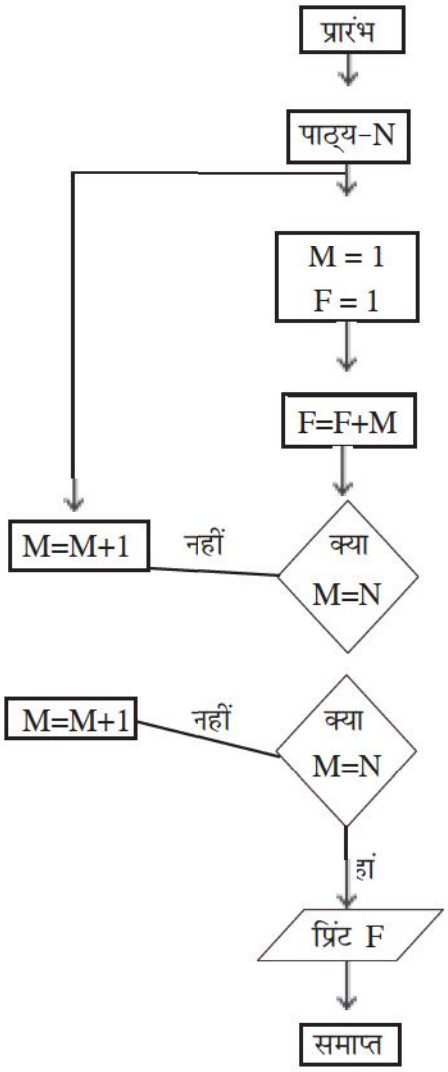

(Flow (प्रवाही) चार्ट

चित्र 8.4 चार्ट्स

ग्राफ़्स–ग्राफ़्स संख्यात्मक आंकड़ों को एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं जिससे छात्रों को मूलभूत या विशिष्ट संबंधों को समझने की योग्यता आती हैं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विभिन्न प्रकार के ग्राफ़्स का प्रयोग होता है। ग्राफ़्स की प्रभावशाली व्याख्या में, बुनियादी कौशल, शीर्षक के महत्त्व की समझ, ग्राफ्स के निर्माण में प्रयुक्त मापक इकाईयों की बुनियादी समझ, दर्शाये गये संबंधों की समझ, आंकड़ों के आधार पर अनुमान लगाना और महत्त्वपूर्ण सामान्यीकरण करना, और ग्राफ़्स से प्राप्त जानकारी को, अध्ययन एवं अन्य सूचना संसाधनों से प्राप्त जानकारी के साथ संबद्ध करना, समाहित हैं। उदाहरण के लिये कक्षा VIII में भूगोल की पाठ्यपुस्तक में जनसंख्या वृद्धि और वितरण को ग्राफ़्स द्वारा चित्रित किया गया है।

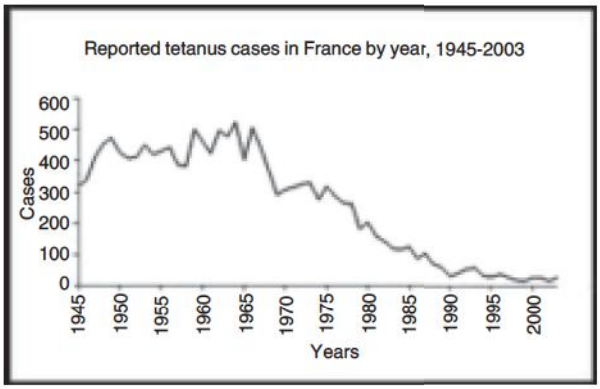

(अ) रेखीय ग्राफ़

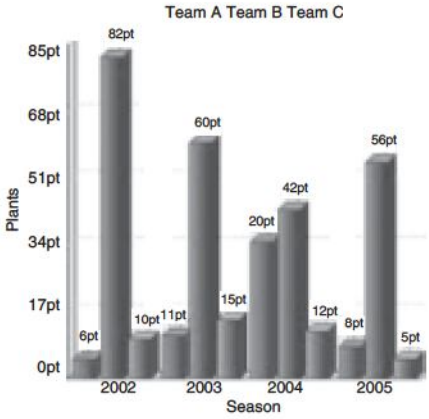

(ब) बार ग्राफ़

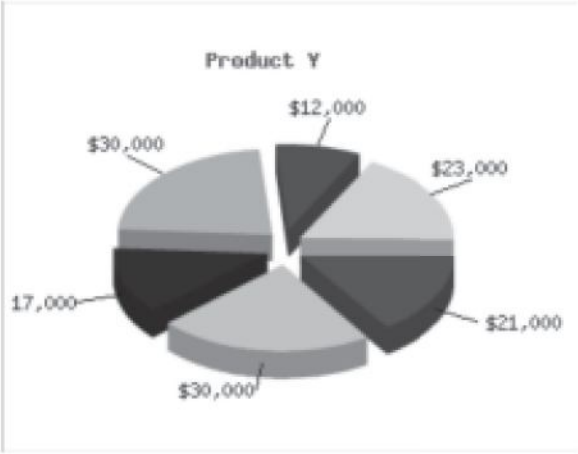

(स) पाइ आरेख

चित्र 8.5 ग्राफ़्स

कार्टून्स–इन दिनों NCF 2005 आधारित सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में बहुत से ग्राफ़्स, चित्र और कार्टून्स दिये गये हैं। अधिगम स्रोत के रूप में कार्टून्स के प्रयोग से दृश्य सुगमता, और कुछ हास्य उत्पन्न हो जाता है। कार्टून्स बहुत से संदेश लिये हुए होते हैं और विद्यार्थी उनके संदेशों की व्याख्या करना भी सीख जाते हैं। आपको एक शिक्षक के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित कार्टून्स का संग्रह करना चाहिये और अपनी कक्षा में इनका प्रयोग बार-बार करना चाहिये। कई बार ये कार्टून्स हमें विषय की गहराई तक पहुंचा देते हैं और विषय चर्चा को मुख्य चर्चा से कहीं अधिक रोचक बना देते हैं। छात्रों को इन कार्टून्स से संबंधित कुछ कार्य करने को सौंपा जा सकता है।

चित्र 8.6 कार्टून्स

प्रगति जांच-2

नोट: आपको उत्तर देने हेतु नीचे स्थान दिया गया है। इकाई अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिये।

1. Realia और Diorama क्या होते हैं?

   .....

   .....

   .....

2. अपनी भूगोल की पाठ्य-पुस्तक से ऐसे पांच विभिन्न विषय बिंदुओं की पहचान कीजिये जहां मॉडल्स का प्रयोग किया जा सकता है? अपने चयन के पक्ष में तर्क भी दीजिये।

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

3. सामाजिक विज्ञान में चार्ट्स, ग्राफ़्स और कार्टून्स का प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है?

.....

.....

.....

8.3.5 काल-रेखा

सामाजिक विज्ञान के इतिहास शिक्षण की दृष्टि से समय-रेखाओं का प्रयोग बहुत प्रभावशाली साधन हैं। उत्पत्ति संबंधी अवधारणा को समय रेखाओं की मदद से बहुत अच्छे तरीके से समझाया जा सकता है। मनुष्य की उत्पत्ति एवं विकास, राज्यों का विकास, छापा खाने की यात्रा, बुनाई जैसी अवधारणाओं को समय-रेखा की मदद से समझाया जा सकता है।

समय रेखाओं के मुख्य उपयोग निम्न प्रकार हैं :

(i) समय संबंधी समझ का विकास करना

(ii) दो काल अवधियों के बीच संबंधों को समझना

(iii) पूरी कक्षा का ध्यान एक दृश्य सामग्री पर केंद्रित करना

(iv) अधिगम पुनर्बलन एवं पुनरावलोकन के उद्देश्य से प्रयोग करना

8.3.6 पुस्तकें

पाठ्य पुस्तकें–सामाजिक विज्ञान में निर्देश प्रक्रिया में आपको पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग करना चाहिये। ये पाठ्य पुस्तकें ज्ञान के अनिवार्य स्रोत के रूप में देखी जाती हैं जिन्हें प्राय: या तो सरकारी अथवा सरकार द्वारा अधिकृत परीक्षण संस्थाओं द्वारा प्रस्तावित की जाती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, पाठ्य पुस्तकों का निर्धारण NCERT द्वारा किया जाता है, जबकि राज्य स्तर पर हमारे पास राजकीय पाठ्य ब्यूरों या SCERT पाठ्य पुस्तकों के विकास के लिये कार्य करते हैं। यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम से संबंधित मानक पाठ्य पुस्तकें, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिये सदैव उपलब्ध हों तथा इनका प्रयोग प्रशिक्षण के दौरान और बहुधा संदर्भ देने हेतु किया जाना चाहिये। निर्देश प्रक्रिया हेतु, पाठ्य पुस्तक, न्यूनतम आवश्यकता है। इसे सुनिश्चित करने के लिये, पाठ्य पुस्तक की कुछ प्रतियों को संदर्भ खंड (reference section) में रखा जाना चाहिये। ये सदैव वहां उपलब्ध होती हैं और इन्हें संसाधन केंद्र के बाहर नहीं निकाला जाता। पाठ्य पुस्तकें उधार रूप में भी उपलब्ध होनी चाहिये। यह कहा जाता है कि ये पाठ्य पुस्तकें अध्येता, शिक्षक तथा विद्यार्थियों दोनों की क्रियात्मक सहभागिता से उत्पन्न होने वाले किसी भी नवाचार पर रोक लगा देती हैं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण करते समय, पाठ्य पुस्तकों को और आगे की खोजबीन करने वाले मार्ग को प्रशस्त करने वाली विधा के रूप में देखा जाना चाहिये।

यह अध्येता को पाठ्य पुस्तक से आगे जाने, आगे अध्ययन और अवलोकन करने को प्रोत्साहित करेगा। हमारी प्रणाली में पाठ्य पुस्तकों को एकमात्र स्रोत और एक निर्देशिका के रूप में प्रयोग किया जाता है।

संदर्भित पुस्तकें और मैन्युअल्स (दिग्दर्शिकायें)–ये प्राय: महंगा स्रोत हैं, जिनका संदर्भ अध्येता को निर्देश प्रक्रिया के दौरान दिया जाता है। सामान्यत: प्रयोक्ताओं की मांग के अनुसार विद्यालय के पुस्तकालय में प्रत्येक खंड की दो या तीन प्रतियां रखी जाती हैं। इन पुस्तकों और दिग्दर्शिकाओं को स्रोत केंद्र से बाहर नहीं ले जाया जाना चाहिये। ये अनुपूरक पुस्तकें विशिष्ट विषय के शब्दकोष, एटलस, विश्वज्ञानकोष, वार्षिक पुस्तकें (yearbooks), सांख्यिकीय सार, सरकारी आलेख, पत्र और पत्रिकायें, पाण्डुलिपियां, सामान्य पुस्तकें, पुनरावलोकन पुस्तकें हो सकती हैं। सृजनात्मकता, सौंदर्यप्रेम, और आलोचनात्मक परिदृश्यों, अवधारणाओं की गहरी समझ की उन्नति के क्रम में सामाजिक विज्ञान अधिगम हेतु अनुपूरक पुस्तकें होनी चाहिये।

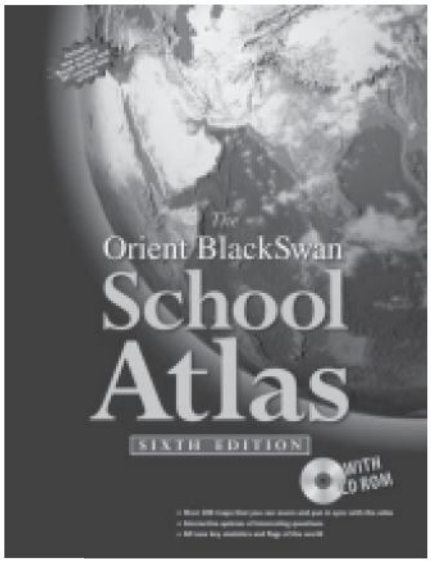

चित्र 8.7: स्कूल एटलस

नियत कालिक, तकनीकी, और व्यावसायिक पत्र और पत्रिकायें–ये संसाधनों के निर्देशक होते हैं जो अध्येता को अत्याधुनिक सूचना के लिए संदर्भ प्रदान करते हैं। यद्यपि ये बहुत महंगे होते हैं परन्तु ये अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों के लिये बहुत उपयोगी होते हैं। सामान्यत: ये प्रयोक्ताओं को उधार उपलब्ध नहीं करवाये जाते हैं।

संग्रह–आप कई आधुनिक सामग्रियों को अपने और विद्यार्थियों के प्रयोग हेतु एकत्र भी कर सकते हैं। पुस्तिकायें, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से लेख, चार्ट्स, और मानचित्र इसी में शामिल होते हैं। ये विविध प्रकार की सामग्रियों से बने होते हैं, कभी ये विषय शीर्षक से बंध होते हैं और कभी मुक्त रखे जाते हैं। संग्रहों में अखबार की कटिंग्स, पत्रिकाओं से काटे गये लेख और खरीदे गये सूचना संग्रह, चित्र, पूर्व अध्येताओं के कार्यों के निष्कर्ष, आरेख, ग्राफ़्स और अन्य प्रकार की लिखित और ग्राफ़ीय सामग्रियां शामिल किये जाते हैं। संग्रहों का निर्माण

टिप्पणी

स्टाफ़ के द्वारा साथ ही विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है और उन्हें (विद्यार्थियों को) स्रोत सामग्रियों के संग्रह करने और बैंक विकसित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। संग्रह एक बहुत आसान कार्य है किन्तु उन्हें सूचीबद्ध करना और उनका भंडारण करना एक समस्या है। संग्रहों के भंडारण और सूची निर्माण के लिये विद्यार्थियों को शिक्षक की सहायता के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

निर्देश सामग्रियां–इसमें स्व-निर्देशक सामग्रियों को शामिल किया जाता है क्योंकि निर्देश प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी इनका प्रयोग स्वतंत्रता पूर्वक करते हैं। बाजार में विभिन्न प्रकार के स्व निर्देशक सामग्रियां उपलब्ध हैं। जैसे योजनाबद्ध अधिगम पाठ, सेमीप्रोग्राम्ड लर्निंग मॉड्यूल्स, कैप्सूल्स (संपुट) आदि।

8.3.7 समाचार पत्रों की कटिंग्स : क्यों और कैसे

आप जानते हैं कि सामाजिक विज्ञान के माध्यम से हम विद्यार्थियों में समाज और इसकी पहलुओं जैसे राजतंत्र और अर्थव्यवस्था के बारे में समीक्षात्मक समझ का विकास करते हैं। ये विमायें बहुत ही गतिशील होती हैं। यद्यपि पाठ्य पुस्तकें ज्ञान का एक अच्छा स्रोत होती हैं परन्तु सदैव परिवर्तनशील समाज के साथ-साथ ही ये परिवर्तित नहीं हो सकतीं, क्योंकि ये लम्बे अंतराल के बाद लिखी जाती हैं और नियमित संशोधित संस्करण अल्प समयावधि में लाना कठिन होता है। इसलिये समाचार-पत्र जो दिन प्रतिदिन की घटनाओं जैसे राजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक आपदा की रिपोर्ट (खबर) लाते हैं।

सामाजिक विज्ञान शिक्षक को वर्तमान घटनाक्रमों की जानकारी बनाये रखने के लिये विभिन्न समाचार पत्रों को पढ़ना चाहिये। समाचार पत्रों को पढ़ना इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न विवादित मुद्दों और दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है।

अध्यापक समाचार पत्रों का प्रयोग कई प्रकार से कर सकता है–

- बुलेटिन बोर्ड के रूप में प्रयोग
- विशिष्ट विषय-वस्तु पर फाइल तैयार करना
- समूह चर्चा, विषय संबंधी गृहकार्य और व्यक्तिगत अध्ययन के हेतु प्रयोग
- कक्षा में शीर्षक का परिचय देने हेतु प्रयोग

8.3.8 संग्रहालय

स्थानीय हस्तशिल्प और संग्रहालय

समाजविज्ञान अधिगम को और अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाने के क्रम में शिक्षण विधियों में नवाचार की आवश्यकता होती है। सामाजिक विज्ञान अधिगम में स्थानीय, राजकीय और राष्ट्रीय संग्रहालयों के भ्रमण को शामिल किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के

निकट के परिवेश में कार्यरत शिल्पकारों को खोजने और उनके विभिन्न शिल्प कार्यों कौशलों और सामग्रियों का अवलोकन करने को कहा जाना चाहिये। विद्यालय के एक छोटे कोने (स्थान) में हस्तकलाओं को प्रदर्शित किया जा सकता है और एक संग्रहालय के रूप में विकसित किया जा सकता है।

विद्यालयों के पास अपने सामाजिक विज्ञान संग्रहालय होने चाहिये। ग्रीष्मावकाश अवधि में, विद्यार्थियों से ऐतिहासिक स्मारकों के मॉडल्स, ज्वालामुखी या भूकंप के प्रभावों को दर्शाने वाले चार्ट्स, शब्द जाल या पहेलियों का निर्माण करने को कहा जा सकता है। प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित गुणों (लक्षणों) पर विद्यार्थियों से चित्रकारी करवाई जा सकती है। पाठ्यक्रम में दिये गये शीर्षकों से संबंधित समाचार पत्रों या पत्रिकाओं की कटिंग्स, या इंटरनेट से डाउनलोड की गई संबंधित जानकारियों को प्रदर्शित किया जा सकता है। इस संग्रहालय में समय-समय पर विभिन्न प्रकार से परिवर्तन किये जा सकते हैं जिससे कि यह पुराना न पड़े। विद्यार्थियों को अन्य क्रियाकलापों में भी शामिल किया जा सकता है।

NCF 2005 Position Paper by National Focus Group on teaching of Social Sciences

विद्यार्थियों की बौद्धिक और सांस्कृतिक वृद्धि में सामाजिक विज्ञान संग्रहालय एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। वे विद्यार्थियों के अनुभवों को समृद्ध बनाते हैं। विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों और कक्षा में किये गये अध्ययन को जोड़ने के लिए अवसर प्राप्त होते हैं जो उनके ज्ञान को दृढ़ और अनुभवों को समृद्ध बनाते हैं। संग्रहालयों का उद्देश्य केवल दृश्य सामग्रियों को प्रस्तुत करना ही नहीं है अपितु उत्सुकता की अनुभूति, सौन्दर्य और इसकी सराहना, प्रकृति और प्राकृतिक गुणों (लक्षणों) की खोजबीन करने की भावना को उत्प्रेरित करना भी है। संग्राहलय में Realia, Diorama मॉडल्स, चार्ट्स, संग्रह पुस्तिकाओं आदि का समावेश किया जाना चाहिये।

8.3.9 चलचित्र

हमारे अधिकांश विद्यालय मूलभूत सुविधाओं जैसे दूरदर्शन, ऑवर हेड प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर, और मल्टीमीडिया आदि से सुसज्जित नहीं है। यदि ये सुविधायें दी भी गई हैं, तो भी अध्यापक इनका प्रयोग एक या अन्य कारणवश मुश्किल से ही कर पाते हैं परन्तु चलचित्र न केवल प्रेरणा और पाठ्यपुस्तक के बिन्दुओं की व्याख्या करने के लिए एक अच्छा स्रात है बल्कि व्यक्तियों, प्रक्रियाओं और परिघटनाओं की समीक्षा और दृष्यावलोकन करने का भी एक अच्छा स्रोत है। आप को कक्षा-कक्ष/मल्टी मीडिया कक्ष में चलचित्र के प्रयोगों के लाभों को जानकारी होनी चाहिये।

ये चलचित्र शिक्षा तकनीकी केंद्रीय संस्थानों, शिक्षा तकनीकी राजकीय संस्थानों, विभिन्न देशों के राजदूतावासों, पर्यावरण एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, राजकीय पर्यटन विभाग से प्राप्त किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कई निजी साझेदार, गैर सरकारी संस्थायें भी हैं जो निर्देश आगतों के रूप में प्रयोग किये जा सकने वाले विविध चलचित्रों का उत्पादन करते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे देश में व्यावसायिक और आर्टसिनेमा भी विभिन्न भौगालिक प्रदेशों में रहने वाले लोगों

टिप्पणी

और प्राकृतिक दृश्यों के साथ प्रस्तुत कर जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं। विभिन्न भौगोलिक विशिष्टताओं जैसे पर्वतों, मैदानों, रेगिस्तानों, नदियों, सागरों, समुद्रों, आयलैण्ड्स और समुद्रतटों को इन चलचित्रों में सरलता से देखा जा सकता है। शिक्षक या तो इन चलचित्रों की छोटी क्लिपिंग दिखा सकता है या फिर अधिगम उद्देश्य पर आधारित पूरी फिल्म भी कभी दिखा सकता है। जब्बार पटेल द्वारा अंबेडकर, रिचार्ड अटैनबोर्फ द्वारा गांधी, श्याम बेनेगल द्वारा सुभाषचंद्र बोस, केतन मेहता द्वारा सरदार पटेल, राजकुमार संतोषी द्वारा द लेजेंड ऑफ भगत सिंह जैसी फिल्में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान का अच्छा स्रोत हैं।

8.3.10 इंटरनेट

इंटरनेट कम्प्यूटर आधारित अद्भुत अधिगम स्रोत है। यह सामाजिक विज्ञान अधिगम का उन्नत स्रोत है। ई-लर्निंग इंटरनेट, इंट्रानेट या सीडी-रोम के प्रयोग द्वारा कम्प्यूटर पर निर्देश जारी करने वाला कार्यक्रम है। यह कम्प्यूटर और इंटरनेट तकनीकी की सहायता से साधारण अधिगम है। ई-लर्निंग तकनीकी आगतों जैसे एनीमेशन्स, मानसिक चित्रण, अनुरूपण, और खेल, पाठ्य, ऑडियो, वीडियो और बहुत सी सृजनात्मक क्रियाओं के द्वारा वेब आधारित प्रशिक्षण होता है। ई-लर्निंग के लिये सबसे बड़ी चुनौती मूलभूत-भौतिक, वित्तीय और विशेषज्ञ मानव संसाधन के प्रावधान की होती है। यद्यपि सरकार द्वारा इन संसाधनों को देश के सभी विद्यालयों में उपलब्ध कराये जाने हेतु कठोर प्रयास किये जा रहे हैं किन्तु अभी इसमें समय लगेगा। NCF 2005 पर आधारित NCERT की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न वेबसाइटों की सूची दी गई है जो शिक्षकों और छात्रों की और अधिक जानकारी करने और प्रभावशाली अधिगम करने में सहायता करती है।

Websites:

National Partal of India : http://india.gov.in

Directory of Indian Government Websites: http://goiderectory.nic.in

http://presidentofindia.nic.in

http://pmindia.nic.in

http://rajyasabha.gov.in

http://loksabha.nic.in

http://supremecourtofindia.nic.in

http://eci.nic.in

http://sciedu/public.html

http://volcanoes.usgs.gov

http://nationalgeographic.com

http://school.discovery.com

http://incredibleindia.org

http://wikipedia.org

http://britannica.com

http://animalplanet.co.uk

http://freefoto.com

http://mnes.nic.in

8.3.11 अधिगम स्रोत के रूप में विद्यालय और समुदाय

सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यालय और समुदाय भी अधिगम स्रोत के रूप में प्रयुक्त किये जा सकते हैं। विद्यालय में विद्यार्थी और शिक्षक प्रभावी संसाधनों को तैयार कर सकते हैं। तत्पश्चात् समुदाय का उपयोग भी अधिगम स्रोत के रूप में किया जा सकता है।

अध्यापक एक स्रोत के रूप में

आप इससे सहमत होंगे कि यद्यपि सामाजिक विज्ञान अध्यापक अपने शिक्षण में स्रोत सामग्रियों का प्रयोग करते हैं, तथापि वे स्वयं भी एक महत्त्वपूर्ण निर्देशात्मक स्रोत होते हैं। जैसे कि अधिकांश कक्षा-कक्षा क्रियाकलाप अध्यापक द्वारा नियंत्रित होता है उनके ज्ञान, कौशल, अनुभवों और क्षमतायें, बहुत सीमा तक शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता का निर्धारण करता है। द्वारा नियंत्रित होते हैं। हम आगे भी सहमत होते हैं कि एक अध्यापक व्यक्तिगत रूप से विशिष्ट होता है। उन्हें विविध सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विभिन्न व्यक्तियों के शिक्षण का अनुभव प्राप्त होता है। एक शिक्षक को अपने बौद्धिक संसाधनों को समय-समय पर समृद्ध बनाने हेतु प्रयास करना चाहिये। इसके लिये, उन्हें अपने ज्ञान और कौशल के अद्यतन के लिये राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, सभाओं, गोष्ठियों आदि में भाग लेना चाहिये। शिक्षक के रूप में आपको अध्ययन के क्षेत्र में हो रहे आधुनिकतम विकास की जानकारी बनाये रखने के लिये आधुनिकतम पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि पढ़ना चाहिये। आपको नैतिक मूल्यों और सकारात्मक व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करने आवश्यकता है। एक अध्यापक के रूप में आपको विद्यार्थियों के लिये आदर्श मनुष्य होना चाहिये और उनके लिये आपको उनका मित्र, दार्शनिक और पथ प्रदर्शक होना चाहिये। ये सभी गुण प्रभावशाली शिक्षण के साथ-साथ चलते रहते हैं।

स्रोत के रूप में विद्यार्थी

निर्देश की प्रक्रिया में, विद्यार्थी एक अध्येता होता है। एक विद्यार्थी निर्देश प्रक्रिया को सुखद, रोचक, उपयोगी और प्रभावशाली बनाने में सहायता कर सकता है। हम अपने अनुभवों के माध्यम से जानते हैं कि बहुलता में हमारी सामाजिक, विज्ञान कक्षायें नीरस होती हैं। विद्यार्थी निर्देशात्मक क्रियाकलापों में भागीदारी नहीं करते हैं। वे मौन प्रेक्षक बने रहते हैं। यदि उनकी

टिप्पणी

समझ में न भी आ रहा हो तब भी वे प्रश्न नहीं पूछते हैं। यदि इस प्रवृत्ति को प्रतिवर्तित कर दिया जाये और निर्देश प्रक्रिया में विद्यार्थियों की क्रियात्मक सहभागिता होने लगे जैसा कि वर्णित नहीं है, शिक्षण-अधिगम को प्रभावशाली और समान रूप से लाभप्रद अनुभव बनाया जा सकता है। कक्षा में विविध प्रकार के व्यक्तित्व, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, और बौद्धिक योग्यता वाले विद्यार्थी होते हैं। उन सभी के पास विविध अनुभव होते हैं। यदि इन सभी का अन्वेषण और एकीकरण शिक्षक द्वारा शिक्षण में कर लिया जाये, तो शिक्षण निश्चित रूप से बहुत प्रभावशाली हो जाती है। इतना ही नहीं, निर्देश जीवन्त हो जाते हैं और विद्यार्थी निर्देश प्रक्रिया में बहुत रूचि लेते हैं। विद्यार्थी प्रायोजित कार्यों, गृहकार्यों या फील्ड वर्क के रूप में, मिले विभिन्न प्रकार की स्रोत सामग्रियों के उत्पादन में सहायक हो सकते हैं। इस स्रोत सामग्रियों को स्रोत केंद्र में विद्यार्थियों की भविष्य में अधिगम क्रियाओं के लिये रखा जा सकता है। इस प्रकार, विद्यार्थी भी निर्देश प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

स्रोत के रूप में समुदाय:

समुदाय जिसमें यह स्थित है, सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिये समृद्ध स्रोत हो सकता है। समुदाय का उपयोग कक्षा अधिगम अनुभवों के अनुपूरक के रूप में किया जा सकता है। आपको एक शिक्षक के रूप में समुदाय से अवगत होना चाहिये। भौतिक वाातवरण, लोगों और उनके सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों, समुदाय में स्थित धार्मिक समूहों और उनके प्रभाव, उनकी आर्थिक गतिविधियों, समुदाय की प्रबुद्ध हस्तियों और उस समुदाय के स्थानीय इतिहास, मनोरंजन केंद्रों, धार्मिक पूजाओं, लोक उपयोगिता, शिक्षा के प्रति समुदाय का रुझान, समुदाय की राजनैतिक व्यवस्था के बारे में आपको जानने का प्रयास करना चाहिये। इन पहलुओं पर व्यापक ज्ञान आपको सामाजिक विज्ञान की आर्थिक क्रियाकलापों, स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता, प्रकृति और मनुष्य संबंधी अवधारणाओं की व्याख्या करने में सहायता प्रदान करता है। स्थानीय समुदाय से लिये जाने वाले उदाहरण विद्यार्थियों में रूचि जगाते हैं, यह वास्तविक परिस्थितियों में सामाजिक विज्ञान सीखने में विद्यार्थियों की सहायता करता है और यह उन मृत प्राय चीजों में भी वास्तविक अर्थों में जीवन फूंक देता है।

पाठ्यक्रम में ज्ञानात्मक पद्धति के संबंध में कुछ सिद्धांत

स्थानीय और प्रासंगिकता को ज्ञान स्थापना तथा इसके अनुकूलन और सार्थकता के प्रत्यक्षीकरण के क्रम में जोड़ना, विद्यालय के बाहर के व्यक्तिगत, अनुभवों को दृढ़ करना, अवलोकन से अधिगम, वार्तालाप वर्गीकरण, श्रेणी विभाजन, प्रश्न क्रिया, तर्क-वितर्क और अनुभवों के संबंध में बहस करना।

स्वयं को स्थानीय ज्ञान/स्वदेशी व्यवहारों के साथ स्थानीय क्षेत्र में संबद्ध करना और इन सब को विद्यालयी ज्ञान से जोड़ना।

सामाजिक विज्ञान निर्देश प्रक्रिया में समुदाय का उपयोग स्रोत के रूप में क्षेत्र भ्रमण के आयोजन, समीपस्थ कृषि क्षेत्र, ईंटों के भट्टे, कारखाने, संग्रहालय, स्थानीय राजनैतिक पार्टियों के

मुख्यालय, धार्मिक स्थल, बाजार और अन्य लोकोपयोगी स्थानों के भ्रमण के लिये किया जा सकता है। इसका प्रयोग समुदाय के अध्ययन जैसे इतिहास, इस के लोग, सामाजिक प्रक्रियायें, व्यवसाय, स्वास्थ्य एवं कल्याण, यातायात और संचार आदि में किया जा सकता है। समुदाय कक्षा कार्य के लिये पुस्तकें, आलेख, चित्र, सरकारी रिपोर्ट आदि स्रोत प्रदान कर सकता है। समुदाय के उत्कृष्ट लोगों को सामाजिक विज्ञान के विभिन्न शीर्षकों पर चर्चा करने हेतु आमंत्रित किया जा सकता है। निसंदेह उन्हें निमंत्रित करने समय चयनित शीर्षक पर उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

प्रगति जाँच-3

नोट : (अ) आप के उत्तरों के लिये नीचे स्थान दिया गया है।

(ब) इकाई अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिये।

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण में समाचार पत्रों की कटिंग्स का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है?

.....

.....

.....

2. सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत के रूप में कम्प्यूटर और इंटरनेट के प्रयोग की क्या सीमायें हैं?

.....

.....

.....

3. क्या आप सहमत हैं कि शिक्षक और विद्यार्थी अधिगम स्रोत होते हैं? कक्षा अनुभवों के आधार पर अपना कारण दीजिये।

.....

.....

.....

8.4 अधिगम संसाधनों का विकास

अब आप सहमत होंगे कि सामाजिक विज्ञान को रोचक बनाने के क्रम में और अवधारणाओं

टिप्पणी

को बेहतर समझने के लिये सामाजिक विज्ञान शिक्षक को विविध संसाधनों के प्रयोग की आवश्यकता होती है। किन्तु तत्काल ही सामाजिक विज्ञान में सामग्रियों को खरीदने हेतु कम बजट का निर्धारण, इसके शिक्षकों के लिये अपने विद्यार्थियों की विषय में रुचि बनाये रखना वास्तव में अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसी स्थिति में किसी को अपना मनोबल नहीं गिराना चाहिये। सीमित संसाधनों के उत्तम प्रयोग के लिये हम आपको कुछ सुझाव देना चाहेंगे।

- पाठ्य पुस्तकों और पुनरावलोकन पुस्तकों में प्राय: चार्ट्स और आरेख दिये हुये होते हैं उनका प्रयोग किया जा सकता है या उन्हें संशोधित किया जा सकता है; प्राय: उन्हें बड़े रूप में विद्यार्थियों से बनवाया जा सकता है।
- कोलाज निर्माण के लिये आप पुरानी पत्रिकाओं के चित्रों का प्रयोग कर सकते हैं।
- समुदाय से मिले संसाधनों का अन्वेषण, इतिहास व्याख्यान के लिये आप विद्वान व्यक्तियों को आमंत्रित कर सकते हैं और उनके कथनों को अपनी शिक्षण विषय वस्तु से संबद्ध कर साझा कर सकते हैं।
- आप शिक्षा संस्थाओं और प्रशिक्षण विद्यालयों से परामर्श ले सकते हैं। उनके पाठ्यक्रम के अंश के रूप में शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा अधिगम-सामग्रियां तैयार की जाती हैं। आपके छोटे से निवेदन पर आपको उनसे बहुत सी अधिगम सामग्रियां प्राप्त हो सकती हैं।
- यदि विद्यालय में इंटरनेट के साथ कम्प्यूटर उपलब्ध है तो विषय संबंधी अधिक उपयोगी चित्रों को डाउनलोड किया जा सकता है। आप विभिन्न open educational resources (OERs) पर भी प्राप्त कर सकते हैं।
- कुछ सरकारी संस्थाओं से आप महंगी सामग्री नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।
- विद्यालय प्रशासन के माध्यम से आप अभिभावक शिक्षक संघ की भी सहायता प्रदान कर सकते हैं।
- दैनिक समाचार-पत्रों की कटिंग्स का संग्रह कर उन्हें फाइल के रूप में सुरक्षित रख सकते हैं।
- आप पुराने कैलेण्डर्स विशिष्ट रूप से लुप्त हो रहे वन्यजीवन, सरकारी पहल और योजनाओं से संबंधित चित्रों को सुरक्षित रख सकते हैं।
- आप कपड़े पर बड़े आकार के मानचित्र बना सकते हैं। यह कार्य स्लाइड प्रोजेक्टर की सहायता से किया जा सकता है।
- छात्रों को प्रायोजित कार्य करने को दिया जा सकता है। प्रयोजित कार्य के अतिरिक्त निर्मित संग्रह पुस्तकों का प्रयोग निर्देश प्रक्रिया में किया जा सकता है।
- बेकार पड़े सामान जैसे गत्ते, थर्माकोल, शीट्स, मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, से मॉडल्स और Diorama का निर्माण किया जा सकता है।

- क्लस्टर विद्यालयों में स्थित स्रोत केंद्रों से आप सामग्रियां साझा कर सकते है या उधार भी ले सकते हैं।
- आप अपनी कक्षा के लिये स्रोत रूप में प्रयोग किए जा सकने योग्य उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों, और समुदाय में उपस्थित अन्य युवकों की सूची बना सकते हैं।

8.5 अधिगम संसाधनों की व्यवस्था

आप सामाजिक विज्ञान में विभिन्न अधिगम संसाधनों के बारे में पढ़ चुके हैं। इनका समुचित सदुपयोग किये जाने के लिये इनका कुशल प्रबंधन किया जाना आवश्यक है। आदर्श रूप में से सभी संसाधन, संसाधन केंद्र या संग्रहालय में रखे जाने चाहिये। क्यों कि संसाधन केंद्रों पर विविध प्रकार के अधिगम संसाधन रखे होते है, इसलिये इन सूची बद्ध तरीके से क्रम रूप में आयोजित किया जाना चाहिये। हमारे विद्यालयों में इन संसाधन केंद्रों की व्यवस्था का उत्तरदायित्व सैद्धान्तिक रूप में शिक्षक पर ही होता है। निसंदेह, विद्यार्थियों की सहायता से इनकी प्राप्ति, प्रयोग और भविष्य में प्रयोग हेतु संरक्षण बेहतर हो सकता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर तकनीकी कमर्चारी वर्ग का होना लगभग अंसभव सा है। अध्यापक के रूप में आपका प्राथमिक उत्तरदायित्व योजना, संगठन और अधिगम संसाधनों के वितरण का होता है। ऊपर वर्णित प्रत्येक अधिगम संसाधन को एक विशिष्ट व्यवस्थापन कौशल की आवश्यकता होती है। मानचित्र, पुस्तकें, समाचार पत्रों की कटिंग्स का बेहतर उपयोग किया जा सकता है यदि वे उचित क्रम में व्यवस्थित की गई हों। अधिगम संसाधनों की व्यवस्था करने में विद्यार्थियों को भी शामिल किया जा सकता है। विभिन्न विद्यार्थियों को विभिन्न सामग्रियों का उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है। विद्यार्थियों को इन संसाधनों को बिना नुकसान पहुंचाये प्रयोग करने संबंधी निर्देश दिये जा सकते हैं।

8.6 सारांश

इस इकाई में, हमने अधिगम संसाधनों की अवधारणा, आवश्यकता और महत्त्व की चर्चा की। आपने अनुभव किया होगा कि सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थियों की रुचि बनाये रखने और सृजनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, तर्क पूर्ण विवेचना की योग्यता के प्रोत्साहन हेतु सामाजिक विज्ञान कक्षा में आपको इन अधिगम संसाधनों का प्रयोग करना चाहिये। तत्पश्चात आपने सीखा कि कक्षा, विद्यालय और समाज में ये अधिगम स्रोत उपलब्ध हैं। उन का वर्गीकरण मुद्रित (Printed) और गैरमुद्रित (Non-printed) सामग्री के आधार पर किया जा सकता है। हमने Realia, diorama, मानचित्र, ग्लोब, चार्ट्स, कार्टून्स, समाचार पत्र, पुस्तकों का अधिगम संसाधन के रूप में उपयोग का भी वर्णन किया। उसी समय ही, सामाजिक विज्ञान कक्षा में अध्यापक और विद्यार्थियों के अधिगम स्रोत भूमिका निर्वाह की भी चर्चा की गई। हमने सामाजिक विज्ञान के शिक्षण अधिगम में, समुदाय के संसाधन रूप में प्रयोग संबंधी चर्चा भी की। इकाई के अंत

टिप्पणी

में हमने इन अधिगम संसाधनों की व्यवस्था करने संबंधी सुझाव दिये और अधिगम संसाधनों की अपर्याप्तता और अनुपयुक्तता की स्थिति में अपनी स्वयं की अधिगम सामग्री उत्पादन करने संबंधी सुझाव भी दिये।

8.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

Abhikari, Sudupta (2004): Fundamentals of Geographic Thought, Chaitanya, Allahabad.

Dikshit, R.D. (2000): Geographical Thought : A contextual History of Ideas, Prentice Hall,

Hartshornl, Richard (1959): Perspectives on the Nature of Geography, Rand, Mc Nally and Co., Chicago

Minshull, R. (1970): The changing Nature of Geography, Hutchinson University Library, London

NCERT (2005): National Curriculam Framework, NCERT, New Delhi

NCERT (2006): Class VI Social Science, the Earth our Habitat, NCERT, New Delhi

NCERT (2006): Class XI, Gegraphy Text Book, Fundamentals of Physical Geography, NCERT, New Delhi

NCERT (2006: Position Paper, National Focus Group on Teaching of Social Sciences, NCERT, New Delhi

NCERT (2007): Class VII, Social Science. Our Environment, NCERT, New Delhi

NCERT (2008): Class VIII, Social Science); Resources and Development, NCERT, New Delhi

Spellman, Frank. R. 2010): Geography for Non geographers, Publish by Government Institutes, Playmoth, United Kingdom. स

8.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

क्रियाकलाप: एक फाइलिंग प्रणाली जिसमें अध्यापक और उसके विद्यार्थियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली अनुपूरक सामग्री सामाजिक विज्ञान शिक्षक के लिये बहुमूल्य होती है। यद्यपि, एक

टिप्पणी

फाइल को आरंभ करने में बहुत समय लगता है, किन्तु दीर्घकाल में यह समय की बहुत बचत करवाती है। इस से भी अधिक यह आपको निर्देश प्रक्रिया में सुविधा प्रदान करती है। सामाजिक विज्ञान के एक घटक के रूप में भूगोल पर इकाई 4 में, हमने विषय वस्तु की रुपरेखा आपको प्रदान की है। आप किसी भी एक इकाई पर अनुकूल सामग्रियों की एक फाइल तैयार कीजिये।

क्रियाकलाप: सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम के लिये सामुदायिक संसाधनों की एक व्यापक सूची बनाइये और इन संसाधनों को निर्देश प्रक्रिया में प्रयुक्त किये जाने हेतु तर्क दीजिये।

इकाई 9 सामाजिक विज्ञान में आकलन

टिप्पणी

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 अधिगम उद्देश्य

9.2 सामाजिक विज्ञान में आकलन-बुनियादी तथ्य

- 9.2.1 बालकों का आकलन क्यों होना चाहिए?
- 9.2.3 आकलन कब होना चाहिये?
- 9.2.4 आकलन कैसे होना चाहिये?
  - 9.2.4.1 बालकों के बारे में सूचना संग्रह करना
  - 9.2.4.2 सूचनाओं का अंकन
  - 9.2.4.3 एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या

9.3 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : पृष्ठ भूमि

- 9.3.1 C.C.E की अवधारणा
- 9.3.2 C.C.E के उद्देश्य
- 9.3.3 विद्यार्थी आकलन के क्षेत्र
  - 9.3.3.1 पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मूल्यांकन
  - 9.3.3.2 अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मुल्यांकन
  - 9.3.3.3 सामाजिक व्यैक्तिक गुणी (SPQ) का मूल्यांकन

9.4 आकलन की विधियाँ

- 9.4.1 आकलन के सूचक
- 9.4.2 वैकल्पिक आकलन
  - 9.4.2.1 सृजनात्मक लेखन, अभिनय और नृत्य के माध्यम से आकलन
  - 9.4.2.2 आकलन के लिये चित्र पठन कार्य
  - 9.4.2.3 बालकों की चित्रकारी
  - 9.4.2.4 क्षेत्र भ्रमण
  - 9.4.2.5 पत्राधान (Partifolio) आकलन
  - 9.4.2.6 प्रदर्शन आधारित आकलन के लिये निर्देश

9.5 ग्रेडिंग बनाम अंकन प्रणाली

- 9.5.1 ग्रेड्स का प्रयोग
- 9.5.2 ग्रेड्स आकलन की विधियाँ

टिप्पणी

9.5.3 सम्पूर्ण प्रदर्शन की तुलना: ग्रेड पॉइंट औसत

9.5.4 प्रभावशाली ग्रेडिंग के लिये नियमावली

9.6 सारांश

9.7 प्रगति जाँच के उत्तर

9.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

9.0 प्रस्तावना

इकाई 7 में आप सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों के बारे में पढ़ चुके हैं। इन सभी विधियों का उपयोग सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम को क्रिया कलाप आधारित, सहभागिता और आनंददायी बनाने और विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान को बेहतर प्रकार से समझने के लिये किया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को और भी अच्छा बनाने के लिये, आपको विभिन्न अधिगम स्त्रोतों के चयन और उनके प्रयोग की आवश्यकता होगी। कुछ स्त्रोत तो बालक के पर्यावरण में ही उपलब्ध होते हैं, जबकि कुछ को विकसित करने की आवश्यकता अथवा बाजार से खरीदने की आवश्यकता पड़ती है। आजकल, विद्यार्थी, इंटरनेट तकनीक की सहायता से पाठ्य, चित्रों, वीडियो सहित अधिगम सामग्री विभिन्न वेबसाइट्स से प्राप्त कर लेते हैं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में बहुधा प्रयोग किये जाने वाले अधि गम स्त्रोतों जैसे मानचित्र, ग्लोब, टाइम लाइन आदि की आवश्यकता, महत्व और विकास का पिछली इकाई में विस्तृत वर्णन किया गया है। विभिन्न निर्देशात्मक व्यूह रचनाओं/या अधिगम स्त्रोतों को, विशिष्ट रूप से सामाजिक विज्ञान शिक्षण में, प्रयोग करने का मुख्य उद्देश्य अधिगम को प्रोत्साहन देना है। लेकिन सामाजिक विज्ञान व शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम के बारे में किस प्रकार आश्वस्त होता हैं? पाठ्य-वस्तु की शिक्षण अवधि में ही वह विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है, गृहकार्य देता है, विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं जैसे क्विज, यूनिट टैस्ट, और सत्रांत परीक्षाओं आदि का आयोजन करता है। इन्हीं क्रियाकलापों के आधार पर वह आकलन और मूल्यांकन करता है। इस इकाई में हम सामाजिक विज्ञान में आकलन और मूल्यांकन करता है। इस इकाई में हम सामाजिक विज्ञान में आकलन और मूल्यांकन की चर्चा करेंगे। सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों के अधिगम आकलन के लिये प्रयोग की जाने वाली विधियों और उपागमों के बारे में सोचिये। क्या वे आपको विद्यार्थियों के अधिगम के बारे में पूर्णत: जानकारी देने में सहायता प्रदान करती हैं? क्या वे बालक के अधिगम में प्रोत्साहन करती हैं? क्या आप मूल्यांकन की कुछ वैकल्पिक विधियों के बारे में सोच सकते हैं? जिन विधियों का आप पालन करते हैं, उन में क्या त्रुटियाँ है? ये कुछ प्रासंगिक प्रश्न हैं, जिनकी इस इकाई में चर्चा की जायेगी।

टिप्पणी

9.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- उच्च प्राथमिक स्तर पर पालन में लायी जा रही मूल्यांकन की विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के लिये प्रयोग कि जा रही विधियों के गुणों और दोषों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन की कुछ नई विधियों काप्रयोग कर सकेंगे जो विद्यार्थियों के अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं।
- सामाजिक विज्ञान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन उपागम की सराहतना कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन सतत रूप से कर सकेंगे।
- अंकन प्रणाली बनाम ग्रेडिंग प्रणाली के गुणों की पहचान कर सकेंगे; और
- विशिष्ट रूप से, सामाजिक विज्ञान में, विद्यार्थियों का अधिगम आकलन ग्रेडिंग प्रणाली में कर सकेंगे।

9.2 सामाजिक विज्ञान में आकलन–बुनियादी तथ्य

जब किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं, तब हम उस व्यक्ति का किसी न किसी का प्रकार मूल्यांकन कर रहे होते हैं। इस प्रकार का विवरण जैसे-मजाकिया, बुद्धिमान, घमंडी, हाजिर जवाब, अशिष्ट आदि, हम लोगों के बारे में प्रयोग करते हैं जिनसे हम मिलते हैं। एक अध्यापक के रूप में हम प्रत्येक वर्ष नये विद्यार्थियों से मिलते हैं और अपनी बातचीत और/या अवलोकन से उनके बारे में छवि निर्माण करते हैं। ये छवियाँ हमारे द्वारा उनकी विशेषताओं के आकलन के अवलोकन या अन्तर्क्रियाओं के निर्धारण से निर्मित होती हैं। बालक विद्यालय में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं, यह जानने के लिये अध्यापक बहुत सा समय बालकों के आकलन में व्यय करते हैं। किन्तु उनमें से बहुत से अध्यापक इस बात को महत्वपूर्ण नहीं समझते कि विद्यार्थी प्रतिदिन अनौपचारिक रूप से क्या (बातचीत या अवलोकन) करते हैं। परीक्षायें विशेष रूप से बोर्ड परीक्षायें, विद्यालय की मूल्यांकन और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सहित सभी क्रियाकलापों को नकारात्मक रूप में प्रभावित करती हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली में, मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और चिंता से जुड़ा हुआ होता है। इससे पहले कि हम उत्तम मूल्यांकन प्रणाली के उद्देश्यों और हमारे लिये आवश्यक रूप में अपनाये जाने वाले आकलन अभ्यासों जिन से विभिन्न विषय क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम को प्रोत्साहित किया जा सके, के बारे में जानें, हमें सामाजिक विज्ञान विषय में अधिगम के आकलन के लिये वर्तमान में प्रचलित विधियों (अभ्यासों) के बारे में सोचना होगा।

क्रियाकलाप-1

1. आप बालकों के अधिगम आकलन के साथ कौन से प्रमुख उद्देश्य को पूरा करना चाहेंगे?
2. विद्यार्थियों के सामाजिक विज्ञान अधिगम का आंकलन करते समय आप क्या-क्या देखते हैं?
3. बालकों के अधिगम आकलन के लिये आपके द्वारा अनुपालित आवर्तिता (जैसे दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, द्वि-मासिक, वार्षिक) बताइये।
4. सामाजिक विज्ञान विषय में बालकों के अधिगम आकलन के लिये आपके द्वारा अपनाये जाने वाले उपकरणों, तकनीकों या व्यूहरचनाओं के नाम बताइये।

उपरोक्त क्रियाकलाप में आपके अधिकांश उत्तरों का संबंध आकलन के निम्न लिखित पहलुओं से है:

- बालकों का आकलन क्यों किया जाना चाहिये?
- क्या आकलन किया जाना चाहिये?
- आकलन कब किया जाना चाहिये?
- आकलन कैसे किया जाना चाहिये?
- आकलन से प्राप्त सूचनाओं का प्रयोग कैसे किया जा सकता है?

इस से पहले कि हम वर्तमान नीतियों की और आकलन की विधियों में परिवर्तन की चर्चा करें, आपके द्वारा कई बार अनुभव की गई एक परिस्थिति पर दृष्टि डालते हैं।

पटकथा: अंक क्या संकेत देते हैं?

किसी विद्यालय में, कक्षा VIII के 40 विद्यार्थी अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होते हैं, उन्हें सामाजिक विज्ञान में 100 में से 20 से 95 के बीच अंक प्राप्त होते हैं। अधिकांश विद्यार्थियों को 50 से 60 के बीच अंक प्राप्त हुये हैं। हरि, जो कि कक्षा में प्रथम स्थान पर है 95 अंक प्राप्त करता है जब कि गीता जो द्वितीय स्थान पर है 91 अंक प्राप्त करती है। गीता की माँ हरि के प्राप्ताकों को समझने का प्रयास कर अपनी पुत्री गीता के प्रगति पत्र में लिखे प्राप्तांको से तुला करती है। उसे पता चलता है कि गीता ने अन्य विषयों और सम्पूर्णांक कुल प्राप्तांकों में हरि से अधिक अंक प्राप्त किये हैं। गीता के इस परीक्षा में कुल प्राप्तांक कक्षा में सर्वाधिक हैं। इतने सब के बावजूद गीता की माँ गीता के प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं हैं। कारण यह है कि सामाजिक विज्ञान में उसे कम अंक प्राप्त हुए हैं, विशिष्ट रूप से हरि से, जो कि पिछली कई परीक्षाओं में द्वितीय स्थान पर रहा है। वह गीता का वार्षिक परीखा में हरि से कम अंक प्राप्त न करने हेतु चेतावनी देती हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि जब कक्षा अध्यापक दो विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की तुलना करके गीता को ताना मारते हुये कहते हैं ''एक बाल्टी पानी में मिट्टी के तेल की एक बूँद''। गीता के अन्य सहपाठी भी हरि के प्राप्तांकों से तुलना कर इसी प्रकार की प्रतिक्रिया देते हैं।

टिप्पणी

कई बार आपने भी इस प्रकार की परिस्थिति का सामना किया होगा। यह स्थिति निसंदेह यह संकेत करती है कि इस प्रकार के मूल्यांकन से बालकों में असुरक्षा, तनाव, चिन्ता और अवमानना की भावना पनपती है जैसा कि गीता के साथ हुआ, यद्यपि उसने 90% से भी अधिक अंक प्राप्त किये हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन से, बच्चा क्या जानता है या वह क्या कर सकता है कि अपेक्षा बच्चा क्या नहीं जानता है या वह क्या नहीं जान सकता, का ही पता लगता है। यह रटकर स्मरण किये गये विषय वस्तु के ज्ञान के आकलन पर केन्द्रित होता है। अधिकांशत: यह बालकों के बीच अस्वस्थ प्रतियोगिताओं और तुलनाओं को बढ़ावा देता है और कुछ मामलों, जिनमें स्थान/श्रेणी या उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण का निर्धारण होता है, में आत्महत्या करने तक की स्थिति में विद्यार्थी को पहुँचा देता है। ऐसी परिस्थितियों के बारे में विचार करें और निम्न प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें:

क्रियाकलाप-2

1. हमें वास्तव में क्या आकलन करना चाहिये?
2. क्या हमें बालक जो नहीं जानता या नहीं जान सकता का आकलन करना चाहिये?
3. क्या परीक्षाओं के अतिरिक्त बालक का आकलन करने की अन्य विधियाँ भी हो सकती हैं?
4. क्या अंकों के रूप में प्रगति सूचना का अंकन पर्याप्त है?
5. क्या हमें बालकों के प्राप्तांकों के लिये एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता की भावना को प्रोत्साहित करना चाहिये?

9.2.1 बालकों का आकलन क्यों करना चाहिये

आकलन का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुधारना और अध्येता की योग्यतायें किस सीमा तक विकसित हुयी हैं का निर्णय लेना, है। इस का अर्थ यह नहीं है कि टेस्ट और परीक्षायें बार-बार आयोजित की जायें। अच्छी प्रकार नियोजित आकलन और प्राप्त सूचनाओं का नियमित रूप से लेखन विद्यार्थियों को पृष्ठ पोषण देने के साथ-2 उन्हें और आगे अधिगम करने को प्रोत्साहित करता है। यह अभिभावकों को उनके आश्रित (वार्ड) की अधिगम गुणवत्ता और प्रगति के बारे में सूचना प्रदान करने का कार्य भी करता है। यह विद्यार्थियों के बीच प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देने का साधन नहीं है। मूल्यांकन द्वारा निदान की पहचान करने संबंधी प्रचलित धारणा भ्रमित करने वाली है। विद्यार्थी जिन्हें साक्षरता। पठन या अंकगणितीय समस्यायें हैं, केवल उन्हीं के संदर्भ में 'निदान' शब्द को सीमित किये जाने की आवश्यकता है। (NCERT, 2005, पृष्ठ 72)

क्रियाकलाप-3

1. सामाजिक विज्ञान में बालकों का आकलन किन उद्देश्यों/कारणों हेतु किया जाता है? वर्णन कीजिये।

यहाँ आकलन के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य दिये गये हैं:

- एक निश्चित काल अवधि में बालक के अधिगम और उस में आने वाले परिवर्तन का पता लगाना।
- व्यक्तिगत आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पहचान करना।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिक सुविधाजनक (उचित) विधि की योजना का निर्माण करना।
- बालक की यह समझने में सहायता करना कि वह क्या जानता/जानती है या क्या कर सकता/सकती है।
- पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति स्तर की जाँच करना।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाना।
- अभिभावकों को बालकों की विषय में प्रगति सूचना देना।
- बालकों को आकलन के भय से मुक्त करना।
- बालकों को साथ-साथ सीखने और परस्पर सहयोग की भावना को प्रोत्साहन देना।

आकलन का उद्देश्य नहीं है:-

- अंकों के लिये विद्यार्थियों में परस्पर प्रतिस्पर्धा कराना।
- बालक को क्या ज्ञात नहीं है या वह क्या नहीं कर सकता की पहचान करवाना।
- बालकों को मन्द अध्येता, या प्रभावशाली विद्यार्थी या समस्यात्मक बालक की उपाधि देना।
- उन बालकों की पहचान करना जिन्हें निदान की आवश्यकता है।
- समस्या क्षेत्रों और अधिगम कठिनाइयों का उपचार करना।
- विद्यार्थियों की परीक्षाओं में अधिक अंक प्राप्त करने में सहायता करना।
- बालकों को परीक्षाओं में स्थान (प्रथम/द्वितीय) प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित करना।

9.2.2 आकलन क्या होना चाहिये?

शिक्षा का सरोकार बालकों को अर्थपूर्ण और उत्पादक जीवन के लिये तैयार करने से है, और इसलिये, इसका सरोकार बालक के सर्वांगीण विकास–शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, बोध ात्मक और नैतिक विकास से है। विद्यालय को बालक के सर्वांगीण या सम्पूर्ण विकास हेतु सहायता और प्रोत्साहन देना चाहिये। हमें स्वयं से पूछने की आवश्यकता है–बालक के अधि गम के किस पहलू का आकलन करना चाहिये? वह क्या है जिसके लिये हमें बालक का

टिप्पणी

आकलन करना है? इस परिप्रेक्ष्य से देखने पर केवल शैक्षिक उपलब्धियों के आकलन करने की अपेक्षा सभी पहलुओं का आकलन करने की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्यवश, मूल्यांकन का वर्तमान प्रक्रिया जो केवल योग्यताओं को आकलन करती है, एक व्यक्ति की योग्यताओं या प्रगति का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती। इसलिये, बालक की उन सब क्रियाकलापों का आकलन करना महत्वपूर्ण होता है जिनमें वह विद्यालय/कक्षा के भीतर और बाहर भाग लेता है।

सामाजिक विज्ञान विषय के बोर में विचार कीजिये और अध्येता की कौन सी क्रियाकलापों को विषय के आकलन की सीमा के अन्तर्गत लाना चाहिये, के संबंध में सुझाव दीजिये। निम्न क्रियाकलाप आपके विचारों की परिशुद्धि और सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन प्रक्रिया में आपकी मदद करेगी।

क्रियाकलाप-4

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में अधिगम के आकलन योग्य बालकों द्वारा विद्यालय या कक्षा के भीतर या बाहर की जाने वाली गतिविधियों का वर्णन कीजिये।

नीचे बालकों की कुछ ऐसी क्रियाकलापों के संबंध में सुझाव दिये गये हैं जिन पर आकलन के संदर्भ में विचार किये जाने की आवश्यकता है।

- विषय क्षेत्रों में बालकों का अधिगम
- बालकों के कौशल, रूचियाँ, व्यवहार और प्रेरणा
- सामाजिक क्रियाकलापों में बालकों की भागीदारी
- विद्यालय के अन्दर तथा बाहर दोनों जगहों पर विभिन्न अवसरों और परिस्थितियों संबंधी प्रतिक्रियायें
- पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में बालकों की भागीदारी

9.2.3 आकलन कब होना चाहिये?

हम सभी एक विवेचनात्मक प्रश्न कर सकते हैं कि प्राय: कब और कैसे हमें बालक का आकलन करना चाहिये। जब कि कई शिक्षकों का मत है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सतत रूप से अधिगम परिणामों का आकलन किया जाना चाहिये, कुछ शिक्षक इस का प्रतिरोध यह कहकर करते हैं कि सतत आकलन अधिगम समय को कम कर देता है और इसलिये, यह समय व्यर्थ करने वाला है। इन दोनों विचारों के बारे में सोचिये। निम्न क्रियाकलाप आपकी विचारधारा को परिशोधित करेगी।

क्रियाकलाप-5

1. आकलन पर नीचे दिये गये विचारों में से आप किसे प्राथमिकता देंगे? (i) या (ii) या दोनों? अपने विचारों को पक्ष में तर्क दीजिये।

(i) विषय क्षेत्रों में अधिगम परिणामों का आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ सतत रूप से होना चाहिये।

(ii) विषय क्षेत्रों में अधिगम परिणामों का आकलन वर्ष में एक बार (वार्षिक) या दो बार (अर्द्धवार्षिक) होना चाहिये।

अधिगम परिणामों के आकलन पर पहले वाले विचार को प्राथमिकता दिये जाने के कई कारण है। एक अच्छा मूल्यांकन अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकता है। और यह अध्येता और अध्यापक दोनों को पृष्ठ पोषण देने में लाभदायक है। यह स्पष्ट है कि प्राय: शिक्षक अपने विद्यार्थियों का अनौपचारिक रूप से नियमित अवलोकन करते हैं। नि:संदेह इन अनौपचारिक अवलोकनों में, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार के लिये असीम निहितार्थ होते हैं, और इसलिये, बालकों के अधिगम में भी सुधार होता है। फिर भी, नियमत कालिक मूल्यांकन शिक्षकों की विद्यार्थियों के बारे में सूचना संग्रह कर उनके संबंध में विचार प्रकट करने में सहायक होता है। इस प्रकार, आकलन दैनिक आधारित और समान रूप से नियत कालिक होना चाहिये।।

आकलन किया जा सकता है:

(i) दैनिक आधारित : बालकों के साथ वार्तालाप और उनका कक्षा के अन्दर और बाहर की परिस्थितियों में सतत आकलन।

(ii) नियत कालिक: उसे 4 महीनों में एक बार, शिक्षक उनकी जाँच कर अपना मत (उनके संबंध में) प्रकट कर सकता है।

स्रोत: NCERT, 2008, पृ. 7

सतत मूल्यांकन प्रत्येक विद्यार्थी का प्रोफाइल (पार्श्वचित्र) बनाने की और संकेत करता है। विद्यार्थियों के संबंध में मत प्रकट करने, पृष्ठ पोषण प्राप्त करने, मापदंडों के निर्धारण और योजना निर्माण के लिये इस की आवश्यकता है, जिस से बालकों के अधिगम में वृद्धि की जा सके। इस लिये सतत आकलन अधिगम और आकलन के चक्र की और संकेत करता है।

9.2.4 आकलन कैसे करना चाहिये?

आप पहले ही जानते हैं कि आकलन की प्रक्रिया सतत और चक्रीय होती है। इसका तात्पर्य यह है कि आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है–जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आरंभ से अंत तक जुड़ा रहता है। आप यह भी जानते हैं कि आकलन में निश्चित चरणों और प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है। आइये उन चरणों के विषय में चर्चा करते हैं:

9.2.4.1 बालकों के बारे में सूचना संग्रह करना:

लोगों और वस्तुओं के विशिष्ट लक्षणों के बारे में अनुमान करने के लिये एकत्रित की जाने वाली सूचना संग्रह की किसी भी प्रकार की चरणबद्ध प्रक्रिया आकलन है। (AERA et al] 1999; Reparted in Reynelds etal. 2009, p.3) बालको के अधिगम और प्रगति के बारे में

टिप्पणी

सूचना संग्रह के सन्दर्भ में, दो चीजें महत्वपूर्ण हैं–प्रथम, विविध स्रोतों से सूचना संग्रह करना, और द्वितीय विभिन्न विधियों, उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करना।

हम इन दो मुद्दों पर चर्चा करने से पूर्व आपके अनुभवों पर आधारित निम्न क्रियाकलाप पर का जवाब दीजिये:

क्रियाकलाप-6

उन स्रोतों के नाम बताइये जिन से आप बालकों के अधिगम और प्रगति के संबंध में सूचना प्राप्त/संग्रह करते हैं; और उन विधियों, उपकरणों या तकनीकों के नाम भी बताइये जिन की सहायता से आप उपरोक्त कार्य सम्पन्न करते हैं।

सूचनाओं के स्रोत	विधि/उपकरण और तकनीक
(i)	
(ii)	

अधिकांश विद्यालयों में यह देखने में आता है कि शिक्षक सूचनाओं का प्राथमिक स्रोत होता है। अन्य महत्वपूर्ण सम्मिलित स्रोत है।

- स्वयं बालक
- अभिभावक
- बालक के मित्र/हम उम्र/सहपाठी
- समुदाय के सदस्य
- प्रधानाचार्य/मुख्य अध्यापक
- विद्यालय आलेख (उपस्थिति पंजिका आदि)

अगला प्रश्न उठता है कि विभिन्न स्रोतों से सूचना संग्रह किस प्रकार किया जाये। सभी विद्यालयों में देखने में आया है कि कक्षा परीक्षायें, गृहकार्य, पेपर-पैन्सिल टैस्ट, लिखित और मौखिक परीक्षायें, चित्र आधारित प्रश्न, विद्यार्थियों से वार्तालाप सामान्यता: प्रयोग में लाई जाने वाली विधियाँ हैं। यह याद रखना चाहिये कि कोई भी एक उपकरण/तकनीक या विधि बालक के अधिगम और/या प्रगति को जानने के लिये सभी आवश्यक सूचनायें प्रदान नहीं कर सकता। उन का प्रयोग विभिन्न समय में इस बात पर निर्भर करता है कि क्या आकलन किया जाना है।

9.2.4.2 सूचनाओं का अंकन:

सर्व साधारण रूप से सूचनाओं का आलेख रिपोर्ट कार्ड्स (प्रगति विवरण प्रपत्र) के प्रयोग द्वारा किया जाता है। देशभर के विद्यालयों के अधिकांश रिपोर्ट कार्ड्स में सूचना बालकों द्वारा टैस्ट्स/परीक्षाओं में प्राप्त अंकों या ग्रेड्स के रूप में अंकित होती है। ऐसे रिपोर्ट कार्ड्स बालक

के अधिगम और प्रगति का पूर्ण चित्र प्रदान करने में असफल रहते हैं। इसका और विस्तार होना चाहिये। आलेख में अवलोकनों के आलेख और बालकों का गृहकार्यों में प्रदर्शन, बालक क्या और कैसे व्यवहार करते हैं संबंधी वर्गीकरण और बालकों के अन्य लोगों के प्रति व्यवहार संबंधी घटनाओं और किस्सों का विवरण भी शामिल किया जाना चाहिये।

प्रभावशाली आलेखन

- एक डायरी में अवलोकनों का तत्काल आलेख बनाना।
- किसी गतिविधि के समय बालक के कार्य का आकलन।
- बालक के कार्य संबंध में विवरणात्मक कथन लिखना।
- बालक का प्रोफाइल तैयार करना।
- बालक के कार्य का नमूना एक Partifalio में रखना।
- महत्वपूर्ण परिवर्तनों के नोट बनाना।
- अंकन करते समय बालक के संशयों को स्पष्ट करना।

9.2.4.3 एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या:

एक बार सूचना अंकन के पश्चात्, अगला चरण संग्रहीत सूचनाओं की व्याख्या करना है। बालक कहाँ है और उसे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है-को समझने और बालक के संबंध में निष्कर्ष निकालने में यह सहायता करता है। इसके लिये दैनिक विश्लेषण और आलेखों पर पुनविचार की जरूरत होती है जो साथ ही साथ संग्रहीत सूचनाओं में भी प्रतिबिम्बित होता है।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जिन सूचनाओं का संग्रह किया जाता है उन्हें केवल सूचना/साक्ष्य संग्रह के साथ ही नहीं रोक देना चाहिए। आपको इसे संक्षिप्त गुणात्मक टिप्पणी के रूप में आगे ले जाना चाहिये। प्राय: देखा जाता है कि बालकों की प्रतिक्रिया को ''0'' या ''X'' या ''A'' अथवा ''B'' आदि से अंकित किया जाता है। यह आवश्यक है कि ग्रेडिंग या अंकन के आगे जाया जाये। इस का तात्पर्य है कि अंकों और ग्रेड्स का विस्तार से वर्णन होना चाहिये। बालक ने जो कुछ भी करने का प्रयास किया है वह क्यों किया है, को समझने में यह सहायता करेगा। इस प्रकार के आकलन से प्राप्त आंकड़े शिक्षण अधिगम अभ्यासों और बालकों को अधिगम को समृद्ध बनाते हैं।

डी एम स्कूल, भुवनेश्वर (उड़ीसा), के एक विद्यार्थी आकाश, जो माध्यमिक स्तर की परीक्षा 2011 में सम्मिलित हुआ है, को प्राप्त हुए सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन (CCE) प्रमाण पत्र के भाग को देखते हैं। प्रमाण पत्र में प्रत्येक ग्रेड के सामने अधिगम के विवरणात्मक सूचकों का प्रयोग किया गया है।

टिप्पणी

दृश्य: आकाश का कक्षा IX के लिये सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाण पत्र

विषय क्षेत्र	विवरणात्मक सूचक	ग्रेड
कार्यानुभव	कार्यानुभव, कला शिक्षा और शारीरिक शिक्षा सहयोगात्मक, योजनाबद्ध और समयबद्ध, प्रेरणात्मक एवं सहायक और घनात्मक व्यवहार है।	A
कला शिक्षा	अच्छे अवलोकन के साथ मौलिक और सृजनात्मक है। कलाकारों के कार्यों की सराहना और कला को वास्तविक जीवन के साथ संबंध करने की इच्छा का प्रदर्शन करता है।	A
शारीरिक एवं स्वास्थय शिक्षा/ खेल	शारीरिक स्वास्थ्य की समझ का प्रदर्शन करता है, सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूकता, विभिन्न खेलों का और खेलों के नियमों और आत्म अनुशासन का ज्ञान है। शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रमों में भाग लेता है और प्रेरणाशील है।	A+
	जीवन कौशल	
वैचारिक कौशल	कल्पनाशील है, समस्या को पहचान सकता है समान रूप से नवीन युक्तियों का सृजन कर सकता है और निर्णय ले सकता है।	A
सामाजिक कौशल	दूसरे की भावनाओं को समझता है, दूसरों के साथ सामजस्यपूर्ण ढंग से रहता है, ध्यानपूर्वक सुनता है और उपयुक्त अनुतान और शारीरिक भाषा के सथ सम्प्रेषण करता है।	A
भावनात्मक कौशल	शक्तियों को पहचानने और कमजोरियों से उबरने की योग्यता है, तनाव के कारणों की पहचान कर सकता है और जूझने के लिये बहुआयामी योजनाओं का निर्माण कर सकता है। भावनाओं को सकारात्मक रूप में प्रदर्शित कर सकता है।	A+
व्यवहार एवं मूल्य शिक्षकों के प्रति	कक्षा में सदैव सम्मान और विनम्रता प्रदर्शन करता है, कक्षा अध्यापक और विद्यालय के नियमों का पालन और सम्मान करता है और सकारात्मक व्यवहार है।	A
सहपाठियों के साथ	हम उम्रों के साथ स्वस्थ मैत्री संबंध हैं, सहपाठियों के साथ प्रभावशाली ढंग से वार्तालाप, मौलिक युक्तियों का योगदान समूह में अन्य लोगों के विचारों का सम्मान करता है और सहयोगी है।	A
विद्यालय कार्यक्रम	विद्यालय के अधिकांश कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेता है। जिम्मेदार है और स्वस्थ विद्यालय भावना का प्रदर्शन करता है।	

पर्यावरण के प्रति	पर्यावरण के प्रति जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार है। विद्यालय, समुदाय स्तर पर पर्यावरण संबंधी क्रियाकलापों में भाग लेता है और अन्य प्राणियों, वनस्पयितें और मनुष्यों के प्रति सकारात्मक रूचि रखता है।	A
जीवनमूल्यों के प्रति	नियमों का पालन करता है। ईमानदार और स्वाभिमानी हैं। विनम्र, विनयशील, दयालु, सहयोगी और जिम्मेदार, विविधता और विपरीत लिंगीय का सम्मान करता है और सकारात्मक व्यवहार और जिम्मेदार नागरिकता की भावना का प्रदर्शन करता है।	A
	पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ	
साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल	विस्तार से अध्ययन करता है और लिखित तथा मौखिक पाठ्य की सराहना करता है, युक्तियों तथा विचारधारा को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है और साथियों के साथ सहयोग करता है।	A
वैज्ञानिक तथा ICT कौशल	विद्यालय और अन्तविद्यालय स्तर पर वैज्ञानिक क्रियाकलापों में भाग लेता है, वैज्ञानिक अभिवृत्तियों और प्रयोगात्मक कौशल का अच्छा प्रदर्शन करता है और जिज्ञासु है।	A
	शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा	
खेल/स्वदेशी खेल (खो-खो आदि)	जाने पहचाने खेलों में योग्यता प्रदर्शित करता है। सहिष्णु, शक्तिशाली और फुर्तीला, लचीला, अच्छे हस्त-नेत्र सामंजस्य वाला और खिलाड़ी है। विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया है।	
NCC/NSS	समाज सेवा में रूचि को प्रदर्शित करता है, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना के साथ नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करता है, समूह में अच्छी तरह से कार्य करता है और दिये गये कार्य को निबटाता है। कैम्पस में भाग लिया है।	

आकाश के प्रमाण पत्र को पढ़िये और निम्न क्रियाकलाप पर अपनी प्रतिक्रिया दीजिये:

क्रियाकलाप-7

(i) यदि आकाश के CCE के प्रमाण पत्र में केवल ग्रेड्स (विवरणात्मक सूचक नहीं) दिये जाते तो क्या हमें उसके प्रदर्शन के विषय में ठीक से जानकारी हो पाती? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिये।

(ii) आकाश की पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के बारे में आप क्या जानते हैं?

टिप्पणी

प्रगति जाँच-1

1. प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में आकलन के उद्देश्यों का वर्णन कीजिये।

.....

.....

.....

2. आकलन के मुख्य पदों के बारे में संक्षेप में बताइये।

.....

.....

.....

9.3 सतत एवम् व्यापक मूल्यांकन (CCE): पृष्ठभूमि

पारंपरिक विद्यालय व्यवस्था की इस आधार पर कटुआलोचना की जाती है कि यह रट कर सीखने की पक्षधर है और बालकों के व्यक्तिगत सामाजिक गुणों को किनारे करते हुए सीमित बोधात्मक वृद्धि को प्राप्त करता है। परीक्षाओं बच्चों को पुस्तक के बजाय जीवन से दूर जाती हैं। विद्यार्थी का आकलन केवल केन्द्रीय विषय क्षेत्रों में उपलब्धि पर मुख्यत: केन्द्रित रहता है और बालक के जीवन के अन्य पहलुओं जैसे सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, वैयक्तिक आदि पहलुओं की उपेक्षा करता है। रिपोर्ट कार्ड्स बालक की शक्तियों की अपेक्षा उसकी कमजोरियों को प्रदर्शित करते हैं। बालकों के खराब प्रदर्शन का जिम्मा उसकी ज्ञानात्मक क्षमताओं पर थोप दिया जाता है जैसे कि विद्यालयी प्रक्रियाओं और/या आकलन उपागमों का इसमें कुछ योगदान नहीं है। इसलिये, पारंपरिक परीक्षण अभ्यास बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में कम सहायक थे।

आपके विद्यालय में बालकों के अधिगम और प्रगति के आकलन हेतु अपनायी जाने वाली यूह रचनाओं पर विचार कीजिये और निम्न क्रियाकलाप पर प्रतिक्रिया दीजिये।

क्रियाकलाप-8

1. आप अपने विद्यार्थियों का सामाजिक विज्ञान में अधिगम और प्रगति के आकलन हेतु जिन प्रक्रियाओं का पालन करते हैं, उनका वर्णन कीजिये।
2. आपके विद्यालय में बालकों के अधिगम और प्रगति की आकलन हेतु पालन की जाने वाली प्रक्रिया की शक्तियाँ एवं कमजोरियाँ बताइये।

आप सहमत होंगे कि प्रत्येक बालक दूसरे बाले से कई प्रकार से भिन्न होता हैं हम चाहते हैं कि प्रत्येक बालक अपनी योग्यतानुसार विकास करे और राष्ट्र की सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक प्रगति में प्रभावशाली रूप से जिम्मेदार बने। इसके लिये, विद्यालयी व्यवस्था और आकलन अभ्यास का बाल, सुविधायुक्त और विकास सहयोगात्मक होना आवश्यक है। हमारे देश में लम्बे समय से विद्यालयी प्रक्रियाओं, विशेषत: आकलन प्रक्रियाओं में परिवर्तन हेतु प्रयास किये जा रहे हैं, जिस से कि बालकों का अधिगम सशक्त और बेहतर हो सके। हम कुछ मुख्य सूत्रपातों (शुरूआतों): सुझावों, नीतियों, कार्य योजनाओं और कानूनों आदि पर एक दृष्टि डालते हैं।

1. शिक्षा आयोग (1964-66) ने इंगित किया है कि मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक अंग के रूप में होता है, और शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठता से संबंद्ध होता है। इस प्रकार, मूल्यांकन की तकनीकें वैध, विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ और व्यवहारिक होनी चाहिये और विद्यार्थियों का आकलन करते समय विविध तकनीकों का पालन किया जाना चाहिये।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) की आवश्यकता की संभावना का ध्यान करती है, जिसमें शिक्षा के दोनों पहलू शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक सम्मिलित किया जाता है, जिस का विस्तार निर्देश की सम्पूर्ण कालावधि में होता है।

3. प्रोग्राम ऑफ एक्शन (1992) CCE की अवधारणा को पुन: व्यक्त करता है और राष्ट्रीय परीक्षा सुधार रूपरेखा के द्वारा परीक्षा निकायों को निर्देश समूह के रूप में सेवा करने का आह्वान करता है, जो नवाचार को स्वतंत्रता देंगे और विशिष्ट परिस्थिति के अनुकूल रूपरेखा की अपनायेंगे।

4. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (2005) सतत एवं व्यापक आकलन का सुझाव देता है और विद्यालय स्तर पर आकलन प्रक्रियाओं में लोच शीलता की सलाह देता है; और विद्यार्थियों के आकलन कार्य पर जोर देता है।

5. RTE Act (2009) ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा तक CCE के प्रयोग को कानूनी रूप से आवश्यक बना दिया है। खंड 29 (1) कहता है कि पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में CCE को अपनाये जाने से विद्यार्थियों को भय, मानसिक आघात और चिंता से मुक्त हो सकेंगे। और खंड 3(1) प्राथमिक शिक्षा के पूर्ण होने तक किसी विद्यार्थी को बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने की आवश्यकता नहीं होगी।

इस प्रकार विद्यालयों के लिये एक कार्यकारी CCE योजना की आवश्यकता है।

9.3.1 CCE की आवधारणा

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन की ऐसी प्रक्रिया का परामर्श देता है जो विद्यालय आधारित है और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य निर्धारित करती है। यह पद तीन कुंजी शब्दों से मिलकर बना है। सतत् शब्द का तात्पर्य पूरे शैक्षिक सत्र में बालकों के अधिगम एवं

टिप्पणी

प्रगति की लघु अन्तराल पर संभावित नियत कालिक नियमित रूप से की जाने वाली निगरानी से है, जिस से उनकी वर्तमान स्थिति, शक्तियों और अतिरिक्त निवेशों की आवश्यकता और/या अधिगम विकास और प्रगति के सीमाओं को बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप से है। ''व्यापक'' शब्द का तात्पर्य है कि पाठ्यक्रम विषय, पाठ्यक्रम क्रियाकलापों, सामाजिक वैयक्तिक गुण, कार्य और कला शिक्षा आदि को मूल्यांकन समावेश करता है। इसके अन्तर्गत विविध स्रोतों जैसे विद्यालय आलेखों, सहपाठी समूहों, अभिभावकों, शिक्षकों और स्वयं सं विविध उपकरणों और तकनीकों जैसे अवलोकन, साक्षात्कार, वृत्तचित्र विश्लेषण आदि के प्रयोग से एकत्रित की गई दोनों गुणात्मक और परिमाणात्मक सूचनायें आती हैं। ''मूल्यांकन'' शब्द का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें बालक के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करना; प्राप्त सूचनाओं की व्याख्या करना; बालक की प्रगति के संबंध में निर्णय करना; और अगली कक्षा में पदोन्नति के संबंध में निर्णय लेना शामिल हैं।

9.3.2 CCE के उद्देश्य:

CCE के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना।
- मूल्यांकन का प्रयोग बालक के अधिगम और प्रगति के उपकरण के रूप में करना।
- स्व-अधिगम साथ ही साथ स्व-मूल्यांकन को प्रोत्साहित करना।
- अध्येता के विकास, अधिगम प्रक्रिया, अधिगम गति और अधिगम क्रियाकलापों के सन्दर्भ में सटीक निर्णय करना।
- परीक्षा संबंधी चिंता, भय, मानसिक आघात, तनाव या फोबिया को छात्रों सेदूर करना।
- विद्यालय आधारित मूल्यांकन को स्थायी बनाना।
- बाह्य परीक्षाओं को हतोत्साहित करना।

क्रियाकलाप-9

CCE के (पक्ष या विपक्ष में) बारे में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये।

9.3.3 विद्यार्थी आकलन के क्षेत्र

सभी प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों की प्रगति के चार क्षेत्रों को CCE योजना के अन्तर्गत लाया जाना चाहिये।

(i) पाठ्यचर्या क्षेत्र

(ii) अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्र

(iii) पाठ्चर्या गतिविधियाँ

(iv) सामाजिक-वैयाक्तिक गुण

9.3.3.1 पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मूल्यांकन:

पाठ्य चर्या क्षेत्र के अन्तर्गत कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विद्यालय के सभी विषय जैसे भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययन आते हैं। इन क्षेत्रों में मूल्यांकन शैक्षिक सत्र के प्रारंभ से ही चालू हो जाना चाहिये। आकलन की आवधिकता मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक हो के संबंध में विद्यालय द्वारा निर्णय लिया जाना चाहिये। निर्दिष्ट अवधि में पूर्ण किया गया भाग प्रत्येक आकलन के अन्तर्गत आना चाहिये। बाद के क्रम में किये जाने वाले आकलन के अन्तर्गत पहले आकलन क्षेत्र में आ चुके भाग की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिये। इस आवधिक आकलन का उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम और/या प्रगति में दृष्टि गोचर होना चाहिये। इसलिये, ये आकलन केवल लिखित टैस्ट/परीक्षा के रूप में ही नहीं होने चाहिये। शिक्षक को उद्देश्य हेतु विविध यंत्रों और तकनीकों का उपयुक्त चयन करना चाहिये, जिसमें मौखिक टैस्ट, परियोजना, गृहकार्य, कक्षाकार्य, मॉडल एवं आलेखों के निर्माण कार्य का सम्मिलित किया जा सकता है। आवधिक आकलन के अतिरिक्त, कक्षा के बाहर या भीतर जबकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया जारी हो तब भी दैनिक आधार पर आकलन किया जाना चाहिये। यह "on teaching or while learning" आकलन है। इस उद्देश्य हेतु मौखिक परीक्षायें, व्यक्तिगत/सामूहिक कार्य/ क्रियाकलाप और अवलोकन का प्रयोग शिक्षक द्वारा किया जा सकता है।

क्रियाकलाप-10

1. आपके विद्यालय में पाठ्यचर्या क्षेत्र में अधिगम/प्रगति आकलन हेतु पालन की जाने वाली आवधिकता बताइये।
2. पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अधिगम/प्रगति के आवधिक और दैनिक आधारित आकलन हेतु आपके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों और तकनीकों के नाम बताइये।

9.3.3.2 अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मूल्यांकन

विषय प्रकृति, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और अभ्यासों को ध्यान में रखते हुए, कला शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, और कार्यानुभव जैसे विषयों को पृथक वर्ग में स्थान दिया जाता है, जिसे अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों के नाम से जाना जाता है। ये विषय सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक अनुभव और कौशल प्रदान करता है।

कक्षा के भीतर तथा बाहर विविध अवसरों जैसे समूह में योजना कार्य करते हुए, कक्षा में प्रदत्त कार्य के प्रदर्शन के समय, समूह में वार्तालाप करते हुए जब कि सहयोगात्मक अधिगम जारी हो, विद्यार्थियों के इन क्षेत्रों में अधिगम और प्रगति का आकलन प्राय: अवलोकन द्वारा किया जाना चाहिये।

टिप्पणी

क्रिया कलाप का नाम	क्या संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता है?	क्या अभिभावकों का सहयोग प्राप्त है?	कठिनाई यदि कोई है
1			
2			
3			
4			
5			

प्राथमिक स्तर पर विभिन्न कक्षाओं हेतु कुछ पाठ्यचर्या क्रियाकलाप नीचे प्रस्तावित किये गये हैं:

1. कक्षा 1 और 2 के लिये पाठ्यचर्या क्रियाकलाप

   (i) भाषा कौशल (क्रियाओं के साथ अनुवाचन, घटनाओं का वर्णन, कथावाचन, और चित्रण)

   (ii) अवलोकन की प्रकृति

   (iii) खेल और क्रीड़ायें

   (iv) अन्य कौशल

2. कक्षा 6 से 8 तक के लिये पाठ्यचर्या क्रियाकलाप

   (i) भाषा संबंधी कौशल (पठन/अनुवाचन/कथावाचन एवं भाषण)

   (ii) वैज्ञानिक कौशल

   (iii) खेल एवं क्रीड़ायें

   (iv) अन्य (स्कूल कैबिनेट, मीना मंच, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, एकल अभिनय, नृत्य, गायन, चित्रकला आदि)

प्रत्येक विद्यालय को प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत विविध क्रियाकलापों का चयन करना चाहिये जिस से कि प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी रूचि और अनुकूलता के अनुसार भागीदारी करने का अवसर प्राप्त हो सके। शिक्षक द्वारा विद्यार्थी के प्रदर्शन का आकलन अवलोकन के माध्यम से ग्रेड देकर किया जाना चाहिये।

संबंधित अध्यापक विद्यार्थियों की पाठ्यचर्या गतिविधियों में भागीदारी और प्रदर्शन को अपने दैनिक औपचारिक और अनौपचारिक अवलोकन के माध्यम से सूचनात्मक सूत्रों का नियमित रिकार्ड रखेगा जो बाद में विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करने में सुविधा प्रदान करेगा।

विद्यालय के संदर्भ में शिक्षक द्वारा उन घटनाओं/परिस्थितियों की पहचान की जा सकती है जिनमें एक बालक अपनील क्षमताओं का प्रदर्शन करेगा।

शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की भागीदारी और प्रदर्शन के संबंध में ग्रेड्स प्रदान किया जाना,

परिभाषित विवरण भागीदारी और प्रदर्शन के स्तर को प्रदर्शित करने वाले भली प्रकार परिभाषित विवरण के लिये प्रत्येक ग्रेडस्तर

9.3.3.4 सामाजिक-वैयक्तिक गुणों (SPQ) का मूल्यांकनः

आप अपने विद्यार्थियों में विभिन्न सामाजिक-वैयक्तिक गुणों जैसे स्वच्छता, समय बद्धता, सहयोग, आदर, उत्तरदायित्व, नेतृत्व, भावनात्मक स्थिरता, ईमानदारी, सराहना आदि का अवलोकन करते होंगे। इन गुणों का पोषण और विकास शिक्षकों, घरेलू वातावरण तथा विद्यालयी वातावरण के प्रभाव से होता है; और विद्यालय परिसर के बाहर और भीतर के परिप्रेक्ष्य में घटित होता है। ऐसे सभी घटक बालक के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं। इन गुणों की आपको मान्यता देनी चाहिये और सराहना करनी चाहिये और विशिष्ट मूल्य वाली घटनाओं, परिस्थितियों और गतिविधियों जो इन गुणों की सूचक हैं, के संबंध में नियमित रूप से अंकित कर रखनी चाहिये। इन अंकित सूचनाओं के आधार पर, आपको विद्यार्थियों के एक विशिष्ट अवधि में किए जाने वाले व्यवहार के स्तर के अनुसार उन्हें (A,B या C आदि) ग्रेड्स प्रदान करना चाहिये। विद्यालय को आकलन की अवधि, एक शिक्षक सत्र में मुख्यतः तीन या चार बार निधारित की जानी चाहिये।

CCE योजना की रूपरेखा के अन्तर्गत SPQ

विशिष्ट क्षेत्र	उपकरण एवं तकनीक	अवधि	आलेख
• स्वच्छता • सच्चाई • सहयोग • नियमितता • अनुशासन • समय पालन • सूत्र पात • भावनात्मक स्थिरता • पर्यावरण के प्रति जागरूकता • शारीरिक श्रम के प्रति प्रेम सम्मान • वरिष्ठों के प्रति सम्मान	• अवलोकन • साक्षात्कार • चैक लिस्ट • प्रोफाइल	शिक्षक के द्वारा दैनिक अवलोकन	सीधे ग्रेडिंग तीन-चार मास में एक बार

टिप्पणी

- सराहना
- उत्तरदायित्व
- नेतृत्व
- ईमानदारी

प्रगति जाँच-2

सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन (CCE) की अवधारणा का वर्णन कीजिये।

.....

.....

.....

9.4 आकलन की विधियाँ

एक व्यापक मान्यता है कि सामाजिक विज्ञान केवल सूचना प्रसारित करता है। यह पुस्तक केन्द्रित होता है तथा परीक्षाओं हेतु इसे रटने की आवश्यकता होती है। इन पुस्तकों की विषय वस्तु को दैनिक वास्तविकता से असंबद्ध होना माना जाता है। आगे, सामाजिक विज्ञान को अतीत के बारे में अनावश्यक विवरण प्रदान करने वाले विषय के रूप में देखा जाता है। एक दृष्टिकोण यह भी है कि सामाजिक विज्ञान में विशेषज्ञ विद्यार्थियों के लिये रोजगार के कम अवसर उपलब्ध हैं। इन सभी मतों से इस विषय का 'फालतू' होने जैसा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।

उपरोक्त वर्णित परिस्थिति सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं और आकलन के संबंध में कई प्रश्न उत्पन्न करती है। सामाजिक विज्ञान अधिगम का क्या अर्थ है? सामाजिक विज्ञान की कक्षा में किस प्रकार का पारस्परिक व्यवहार अधिगम में वृद्धि कर सकता है? सामाजिक विज्ञान शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं? प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम का आकलन करने और यह देखने में कि इन उद्देश्यों की कितनी प्राप्ति हुयी है, में किस प्रकार के सूचक हमारी सहायता कर सकते हैं?

सामाजिक अध्ययन/विज्ञान के शिक्षण उद्देश्य राष्ट्रीय अभिकेन्द्रित समूह का सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर स्थिति प्रपत्र प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन विज्ञान शिक्षण के निम्न उद्देश्यों को बताता है:

प्राथमिक स्तर

- बालक में अवलोकन,परख और वर्गीकरण कौशलों का विकास करना
- और सामाजिक पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों पर जोर देते हुए बालक में पर्यावरण के प्रति समग्रतात्मक विकास करना।
- भिन्नता और विविधता के प्रति सम्मान की भावना का विकास एवं बालक को सामाजिक मुद्दों के प्रति सुग्राही बनाना।

उच्च प्राथमिक स्तर पर

- मानव जीवन और अन्य प्राणियों के बसेरे के रूप में पृथ्वी के बारे में समझ विकसित करना।
- अपने क्षेत्र, प्रदेश और देश को वैश्विक संदर्भ में अध्ययन करने का विद्यार्थी में सूत्र पात करना।
- विश्व के अन्य भागों के परिप्रेक्ष्य में भारत के अतीत के अध्ययन का विद्यार्थी में सूत्रपात करना।
- विद्यार्थियों को देश की सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं की क्रियाशील और गतिशीलता से परिचित करवाना।

स्रोत: स्थिति प्रपत्र: National Focus Group on Teaching of Social Science, NCERT, 2006, पृ. 8

क्रियाकलाप-11

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान/अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों का अध्ययन कीजिये और इस स्तर पर बालकों की उन योग्यताओं की पहचान कीजिये जिन्हें विकसित करने की आवश्यकता है।

(i)

(ii)

(iii)

(iv)

इन योग्यताओं के बारे में विस्तार से जानने के लिए निम्न चर्चा आपको सहायता प्रदान करेगी।

9.4.1 आकलन के सूचक

हम चाहते हैं कि बालक विभिन्न प्रकार के कौशलों, सैद्धान्तिक ज्ञान, भावनाओं और संवेदनशीलता के विकास के साथ सामाजिक विज्ञान अधिगम करें। हम आकलन हेतु सूचकों की विस्तृत सूची तैयार कर सकते हैं जो आपको अधिगम कार्यों की योजना निर्माण में सहायता

कर सकता है। प्रत्येक सूचक में उन योग्यताओं का समावेश किया गया है जिनको बालकों में विकास किया जाना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर हमें निम्न सूचकों के साथ उनकी योग्यताओं के विकास में सहायता करनी चाहिये:

सूचकों के संदर्भ में योग्यताओं के आकलन के लिये अधिगम सूचक:-

क्र.सं	सूचक	योग्यतायें
1.	अवलोकन और पठन	रिपोर्टिंग, कथन और चित्रण, चित्र-पठन चित्र निर्माण, सारणी और मानचित्र
2.	चर्चा	सुनना, बातें करना, विचार व्यक्त करना, दूसरों से जानकारी प्राप्त करना।
3.	अभिव्यक्ति	चित्रण, शारीरिक क्रियायें, सृजनात्मक लेखन, मूर्तिकारी
4.	वर्णन	तार्किकता, तर्कसंगत संबंध बनाना
5.	वर्गीकरण	श्रेणी विभाजन, समूह निर्माण, अन्तर और तुलना करना
6.	प्रश्न पूछना	जिज्ञासा प्रकट करना, समीक्षात्मक चिंतन, प्रश्नों का विकास करना
7.	विश्लेषण	अनुमान करना, परिकल्पना और निष्कर्ष निर्माण
8.	प्रयोग	तत्काल निर्माण करना, वस्तुएं बनाना और प्रयोग करना
9.	न्याय और समानता	गैर-लाभप्रद या भिन्न योग्यता वालों के प्रति संवेदनशीलता, पर्यावरण के प्रति लगाव प्रदर्शित करना।
10.	सहयोग	सूत्रपात करना और जिम्मेदारी लेना, साझा करना और साथ-2 मिलकर कार्य करना।

9.4.2 वैकल्पिक आकलन

विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने की हमारी वर्तमान विधियाँ प्राय: शिक्षकों द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षायें होती हैं जिनमें बहुविकल्पीय या अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है। इन मूल्यांकन विधियों का प्रयोग जटिल समस्या समाधान कौशलों के मापन, अपसारी चिन्तन, विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों और संप्रेषण कौशलों में भी किया जाता है। यद्यपि इन विधियों को दो दशक पहले चुनौती दी गई, तथापि हमने अपनी शिक्षा संस्थाओं में इनका पालन पूर्ववत जारी कर रखा है। यह उचित समय है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में वैकल्पिक आकलन के विचार प्रस्तुत किये जायें।

वैकल्पिक आकलन प्रक्रिया ज्ञान निर्माण के रचनात्मक सिद्धान्त पर आधारित है। ऐसी प्रक्रियाओं का मूलभूत केन्द्र विद्यार्थी की वास्तविक जीवन के कार्यों एवं क्रियाकलापों में प्रवीणता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए शिक्षार्थी की योग्यता पर स्थित होता है।

सामाजिक विज्ञान में आकलन केवल कागज और कलम द्वारा परीक्षण तक सीमित नहीं रहता है। नाटक, चित्र पठन कार्यों, परियोजनाओं, बालकों के चित्रण और उनके साथ संवाद द्वारा भी आकलन किया जा सकता है।

9.4.2.1 सृजनात्मक लेखन, अभिनय और नृत्य द्वारा आकलनः

जब बालकों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है–या तो अभिनय द्वारा, चित्रण अथवा सृजनात्मक लेखन द्वारा, वे बेहतर ढंग से अधिगम करते हैं। यह हमें उनके मौलिक विचारों के आकलन में सकारात्मक बनाता है। आइये, हम पर्यावरण प्रदूषण विषय का चयन करते हैं और देखते हैं कि तीन प्रकार से कैसे आकलन किया जा सकता है:

A : पारंपरिक प्रश्न

- मनुष्य के तीन क्रियाकलापों के नाम बताइये जिनसे जल प्रदूषण होता है।

B : चित्रण

- जल प्रदूषण कैसे होता है को प्रदर्शित करने हेतु चित्र बनाइये।

C : सृजनात्मक लेखन अभ्यास

- आपके गाँव के तालाब का पानी किस प्रकार प्रदूषित होता है? वर्णन कीजिये और इसकी रोकथाम के लिए सुझाव दीजिये।

9.4.2.2 आकलन के लिये चित्र पठन कार्यः बालकों को उनकी अवलोकन, संबंध जोड़ने और व्याख्या करने की योग्यता को अभिव्यक्त करने के लिये चित्रों और फोटोग्राफ्स का प्रयोग कर कई प्रकार के प्रश्न तैयार किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिये, अपने देश के विभिन्न मन्दिरों की पेन्टिंग को श्रेणीबद्ध जैसे तस्वीर A, तस्वीर B, तस्वीर C करके उनसे इन तस्वीरों का अवलोकन कर निम्न प्रश्न पूछे जा सकते हैं:

1. लोगों के कला और संगीत प्रेम का वर्णन कीजिये।
2. तस्वीर C में दिये गये मन्दिर के निर्माण में आपके अनुमान से कितने दिन/मास/वर्ष लगे होंगे?
3. तस्वीर A से लोगों की जीवन शैली (उदाहरण के लिये खाने की आदतें, पोशाक आदि) का वर्णन कीजिये।

9.4.2.3 बालकों की चित्रकारी

बालक स्वयं को चित्रकारी के माध्यम से अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और गहराई से अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह बालकों को व्यक्तिगत व्याख्या और कल्पना का अवसर देता है। किसी एक सिद्धान्त या विचार संबंधी उनकी समझ के बारे में पूछने का एक सुखद तरीका है। प्रत्येक

टिप्पणी

बालक की चित्रकारी भिन्न और विशिष्ट होती है। बालकों के लिये चित्रकला केवल एक आनंददायी क्रियाकलाप न होकर वरन शिक्षकों के लिये एक बहुत प्रभावशाली अधिगम अवसर होता है। वैसे ही यहाँ पर देखा जा सकता है, चित्रकारी, बालकों की अवधारणाओं, युक्तियों, विचारों और व्यक्तिगत भावनाओं, जिन्हें वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते, का आकलन करने में शिक्षक की सहायता करती है। आगे दिये गये उदाहण को देखे:

उदाहरण: गाँव के तालाब का चित्र बनाइये।

यह चित्रकला अभ्यास हमें–गाँवों में किस प्रकार जल प्रदूषित होता है और विभिन्न प्रदूषकों आदि के बारे में बालकों के विचारों के संबंध में कई अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। एक आकलन अभ्यास के रूप में यह अग्रिम अधिगम के लिये एक महत्वपूर्ण निर्देशक का कार्य करता है।

9.4.2.4 क्षेत्र भ्रमण

भ्रमण से तात्पर्य केवल आनंद के लिये बाहर घूमना नहीं है अपितु बालक साथ-साथ जो अधि गम करते हैं-बाहर जाने से पूर्व, भ्रमण के दौरान और भ्रमण के पश्चात् बालकों का आकलन करने का अवसर भी शिक्षक को ये भ्रमण प्रदान करते हैं। छोटे बच्चे अवलोकन के द्वारा अधि क अधिगम करते हैं और अपने में सुधार करते हैं। उदाहरण के लिये, समीप स्थित एक कुटीर उद्योग का भ्रमण वहाँ प्रयुक्त कच्चेमाल, कार्य में संलग्न बहुत से लोग, विपणन संभावनायें, मजदूरों की दैनिक/मासिक आय आदि को देखने और उनका रिकार्ड लिखने हेतु करते हैं। यह अध्यापक से कक्षा में इसके बारे में सुनकर सीखने की अपेक्षा बालकों की अधिगम में अधि क सहायता करता है।

9.4.2.5 पोर्ट फोलियों आकलन:

पोर्ट फोलियो से तात्पर्य बालकों के कार्य के उद्देश्यपूर्ण संग्रह से है जो विद्यार्थी की नियत कालावधि में निर्दिष्ट क्षेत्र में किये गये प्रयासों, प्रगति, या उपलब्धियो की कहानी बताता है। यह विद्यार्थी के प्रपत्रों, विडियो टेपों, प्रगति विवरणों या संबंधित सामग्रियों से भरे लिफाफे से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। पोर्टफोलियों में केवल उत्कृष्ट कार्य ही नहीं अपितु सभी कोटि के कार्यों को रखना चाहिये जिससे कि सम्पूर्ण विद्यालयी वर्ष में बालक की प्रगति और विकास का प्रदर्शन किया जा सके। ऐसा संग्रह शिक्षक और अभिभावकों को दिखाता है कि बालक कितना निपुण है और यह उसके द्वारा किये गये वास्तविक कार्य का रिकॉर्ड (आलेख) है। बालक के द्वारा वर्ष भर में किये गये वास्तविक कार्य का संग्रह पोर्टफोलियों में किया जा सकता है। उदहारण के लिये, आप अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी का पोर्टफोलियो कक्षा की दीवार पर लिफाफे चिपकाकर कर सकते हैं और विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रकार का कार्य, समय-समय पर उनके अभीष्ट लिफाफों में रखने हेतु निर्देश दे सकते हैं:

- लिखित सामग्री–वर्क शीट्स, सृजनात्मक लेखन, टैस्ट्स, कक्षा के बाहर की गतिविधियों संबंधी रिपोर्ट्स
- विभिन्न चित्रकारी–पौधे, फूल, जानवर आदि

- हस्तकला संबंधी कार्य जैसे पेपर फोल्डिंग, पेपर कटिंग
- बालकों द्वारा तैयार किये गये ग्रीटिंग कार्ड्स
- दूसरों से बालक को प्राप्त होने वाले पत्र
- बालक द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की सूची
- कपड़ों, पत्तियों के संग्रह
- भय मुक्त विधि के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वारा लिखित दैनन्दिनी (डायरी)
- बालक के द्वारा आत्म मूल्यांकन प्रपत्र का नमूना

इस प्रकार, पोर्टफोलियो एकमात्र कार्य का अंश के स्थान पर कार्यों का संग्रह होता है। जैसे-जैसे विद्यालय वर्ष प्रगति करता है, पोर्टफोलियो का संग्रह साथ-साथ बढ़ता रहता है। प्रत्येक नियत अवधि के समापन पर शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी के पोर्टफोलियों को उसकी प्रगति की जाँच के लिये देखता है और विशिष्ट तथा उपयुक्त पृष्ठ पोषण अभिभावकों को देता है। पोर्टफोलियो प्राय: अभिभावकों को उनके अपने बालकों को, उनकी योग्यताओं और रूचियों को जिनका अवलोकन वे घर पर नहीं कर पाते, को समझने में सहायता करता है, और बालकों के प्रदर्शन, प्रगति और विकास की शिक्षक से चर्चा करने में सहायता करता है।

9.4.2.6 प्रदर्शन आधारित आकलन के लिये निर्देश (Rubric)

विद्यार्थियों के पाठ्यचर्या विषयों, पाठ्यचर्या गतिविधियों, और सामाजिक-व्यक्तिगत गुणों सहित किसी क्षेत्र में प्रदर्शन का आकलन करने हेतु विशेषज्ञों, शिक्षक अथवा शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों के द्वारा मूल्यांकन के लिये तैयार किया गया उपकरण Rubric कहलाता है। यह कसौटियों और मानकों से संबंधित अधिगम उद्देश्यों का एक समूह होता है जो विद्यार्थियों के प्रदर्शन/गृहकार्य के आकलन में प्रयुक्त होता है। Rubrics विशिष्ट कसौटी के अनुसार मानकीकृत मूल्यांकन में, ग्रेडिंग प्रक्रिया को सरल एवं पारदर्शी बनाने की अनुमति देता है। यह एक मूल्यांकन दिग्दर्शिका है जो विद्यार्थियों के प्रदर्शन का एक अंकीय मूल्यांकन की बजाय कसौटी की पूर्ण श्रृंखला के योग पर आधारित आकलन करती है। Rubric शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिये कार्यकारी दिग्दर्शिका है, जो प्राय: विद्यार्थियों को निर्दिष्ट कार्य करने से पूर्व दी जाती है कि जिससे कि विद्यार्थी जान सकें कि उनके कार्यों के आकलन की कसौटी क्या है। Rubric शुद्ध या विश्लेषणात्मक हो सकते हैं, और वे गणित, विज्ञान, इतिहास, लेखन, नाटक, कला, संगीत आदि सहित किसी भी विषय क्षेत्र के लिये निर्मित किये जा सकते हैं। यह एक रचनात्मक प्रकार का आकलन है क्यों कि यह पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अंश (भाग) बन जाता है। विद्यार्थी अपने आकलन में समूह और आत्म आकलन दोनों के द्वारा आकलन प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। जैसे ही विद्यार्थी Rubrics से परिचित होते हैं, वे Rubric निर्माण प्रक्रिया में अपने शिक्षक को सहयोग कर सकते हैं।

टिप्पणी

विद्यार्थी द्वारा तैयार प्रोजेक्ट रिपोर्ट के आकलन का Rubric

श्रेणी	4 = उत्कृष्ट	3 = बहुत अच्छा	2 = संतोषप्रद	1= सुधार की आवश्यकता
व्यवस्था	सुसंबद्ध पैराग्राफ और उपशीर्षक के साथ सुव्यस्थित क्रम में सूचना दी गई हैं।	सुसंबद्ध पैराग्राफ के साथ व्यवस्थित सूचना दी गई है।	सूचना व्यवस्थित हैं, परन्तु पैराग्राफ सुसंबद्ध नहीं हैं।	सूचना अव्यवस्थित ढंग से दी गई हैं।
सूचना की मात्रा	सभी शीर्षकों को संबोधित किया गया है और सभी प्रश्नों के उत्तर कम से कम 2 वाक्यों में दिये गए हैं।	सभी शीर्षकों को संबोधित किया गया है और अधिकांश प्रश्नों के उत्तर कम से कम 2 वाक्यों में दिये गये हैं।	सभी शीर्षकों को संबोधित किया गया है और अधिकांश प्रश्नों के उत्तर 1 वाक्य में दिये गये हैं।	एक या अधिक शीर्षकों को संबोधित नहीं किया गया है।
सूचना की गुणवत्ता	सूचना स्पष्ट रूप से मुख्य शीर्षक से संबद्ध है। इसमें विभिन्न विवरणों और/या उदाहरणों को सम्मिलित्त किया गया है।	सूचना स्पष्ट रूप से मुख्य शीर्षक से संबद्ध है। इस में 1-2 विवरणों और/या उदाहरणों को सम्मिलित किया गया है।	सूचना स्पष्ट रूप से मुख्य शीर्षक से संबद्ध है। इसमें विभिन्न विवरण और/या उदाहरण नहीं दिया गया है।	सूचना का शीर्षक से बहुत कम अथवा बिल्कुल भी संबंध नहीं है।
व्याकरणिक मानदण्ड	कोई भी व्याकराणिक, वर्तनी अथवा चिह्न आदि की त्रुटि नही है।	अधिकांशत व्याकराणिक, वर्तनी, अथवा चिह्न संबंधी त्रुटि नहीं है।	कुछ व्याकरणिक, वर्तनी या चिह्न संबंधी त्रुटियाँ हैं।	कई व्याकरणिक, वर्तनीय चिह्न संबंधी त्रृटियाँ हैं।
रेखाचित्रीय व्यवस्था	रेखाचित्र आयोजन या बाह्य रूपरेखा पूर्ण और स्पष्ट है शीर्षकों एवं उपशीर्षकों के बीच तार्किक संबंध है।	रेखाचित्र आयोजन या बाह्य रूपरेखा पूर्ण और स्पष्ट है, अधिकांश शीर्षकों और उपशीर्षकों के बीच तार्किक संबंध है।	रेखाचित्र आयोजन या बाह्यरूपरेखा शुरू की गई है और कुछ शीर्षकों तथा उपशीर्षकों को सम्मिलित करती है।	रेखाचित्र आयोजन या बाह्य रूप रेखा प्रारंभ नहीं की गई है।
चित्र एवं उदाहरण	चित्र एवं उदाहरण स्वच्छ, सटीक एवं पाठक को शीर्षक को समझने में योगदान देने वाले हैं।	चित्र एवं उदाहरण सटीक हैं और पाठक को शीर्षक को समझने में योगदान देने वाले हैं।	चित्र एवं उदाहरण स्वच्छ एवं सटीक हैं। यदा-कदा पाठक को शीर्षक को समझने में योगदान देता है।	चित्र और उदाहरण सही नहीं हैं या पाठक को शीर्षक को समझने में कोई योगदान नहीं करते हैं।

स्रोत: Senapaty, 2010, pp. 46-47

टिप्पणी

Rubrics विद्यार्थियों के अंतिम उत्पाद (परिणाम) को बेहतर बना देते हैं और इसलिये, अधि गम में वृद्धि होती है। जब शिक्षक प्रपत्रों या परियोजनाओं का मूल्यांकन करता है, उन्हें ज्ञात हो जाता है कि वह क्या है जो अंतिम उत्पाद (परिणाम) को अच्छा बना देता है और क्यों। जब विद्यार्थियों को पहले ही Rubrics प्राप्त हो जाता है, तो वे समझ जाते हैं कि उनका मूल्यांकन कैसे होना है और उसी प्रकार से वे तैयारी कर सकते हैं। Rubrics के कई लाभ हैं:

Rubrics के लाभ

- विद्यार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन किस प्रकार किया जायेगा और उनसे क्या अपेक्षा है, को स्पष्ट रूप से दर्शाकर विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार करता है।
- विद्यार्थियों को अपने कार्यों की गुणवत्ता का बेहतर तरीके से आकलन करने में सहायता करना है।
- आकलन को और अधिक वस्तुनिष्ठ और सुंसंगत बनाने की अनुमति देता है।
- अध्यापक को उसकी कसौटी को निर्दिष्ट पदों में स्पष्ट करने पर बल देता है।
- विद्यार्थियों के कार्य के मूल्यांकन में शिक्षकों के लगने वाले समय को घटाना
- समूह में विद्यार्थी के प्रदर्शन के आकलन की कसौटी के बारे में विद्यार्थियों की जागरूकता को प्रोत्साहित करना।
- निर्देशों के प्रभावशीलता के सन्दर्भ में शिक्षक को उपयोगी पृष्ठ पोषण प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को उन की शक्तियों और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों के संबंध में अधि क सूचनाप्रद पृष्ठ पोषण प्रदान करना।
- प्रयोग में सरल और वर्णन में सरल

9.5 ग्रेडिंग बनाम अंकन प्रणाली

विद्यार्थियों की उपलब्धियों का आकलन करते समय हम सदैव तीन चीजों में रूचि रखते हैं: (i) विधार्थी स्वयं के संदर्भ में किस प्रकार प्रगति करते हैं? (ii) विद्यार्थी अपने समूह के संदर्भ में किस प्रकार प्रगति करते हैं? और (iii) विद्यार्थी अपने शिक्षक के द्वारा निर्धारित मानकों के समूह के सन्दर्भ में अपेक्षित स्तर की प्राप्ति के पदों में किस प्रकार प्रगति करते हैं? वर्तमान में, यह कार्य 101-अंक पैमाने पर संख्यात्मक अंक (जैसे 0,1,2,...100) प्रदान करने की विधि द्वारा किया जाता है, जिसमें बहुत से दोष होते हैं।

वर्तमान 101-अंक पैमाना प्रणाली की एक कमी यह है कि यह 0 से 100 तक चलता है और इस में विशुद्ध शून्य और 100 अनुपस्थित होते हैं। शून्य, जिसे प्रयोगकर्ता की सुविधा के लिये कृत्रिम रूप से निर्मित किया जाता है, अनवस्था की दशा का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, और न ही 100 अंकों की प्राप्ति उपलब्धि की सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है।

टिप्पणी

विभिन्न विषय क्षेत्रों के प्राप्तांको की विविधता में इस परिणाम दिखाई देता है। इस का यह दोष न तो विभिन्न परीक्षाओं और न ही विभिन्न विषयों के प्राप्तांकों की परस्पर तुलना करने की अनुमति देता है।

इस दोष को दूर किया जा सकता है यदि विद्यार्थियों को प्राप्तांकों की श्रेणीबद्ध योग्यता वर्ग (श्रेणी) में स्थापित कर दिया जाये।

यह योग्यता वर्ग विद्यार्थियों के ऐच्छिक वर्गीकरण की कई श्रेणियों के अनुसार हो सकते हैं। प्रत्येक श्रृंखला को वर्णमाला संकेत (अक्षर) द्वारा पदनामित किया जा सकता है, जिसे ग्रेड कहा जाता है। अतीत की विविध कमेटियों और कमीशनों, यहाँ तक कि NPE-POA 1992 से पहले के भी, ने अंकों के स्थान पर ग्रेड्स दिये जाने की सिफारिश की थी। ग्रेडिंग प्रणाली का पारंपरिक अंकन प्रणाली से श्रेष्ठ होने के कारण ही भारत के कई उच्च अधिगम वाले मुख्य संस्थानों ने इसे सफलतापूर्वक अपनाया है। विद्यालय स्तर पर Indian council of School Certificate Examination (ICSE) ग्रेडिंग प्रणाली को कई वर्षों से प्रयोग कर रही है। Central Board of Secondary Education (CBSE) ने ग्रेडिंग प्रणाली को प्रस्तुत करने का प्रयास किया परन्तु भारी जन विरोध और विश्वविद्यालयों के प्रतिरोध के कारण इसे वापस लेना पड़ा। अब CBSE और ICSE दोनों ही ग्रेड्स और अंक दोनों को ही अपनी अंक तालिका में दर्शाते हैं और शेष सभी बोर्ड में उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण की घोषणा करने वाली प्रणाली जारी है।

क्रियाकलाप-12

1. ग्रेडिंग द्वारा आप विद्यार्थियों के किन अधिगम क्षेत्रों का आकलन करते हैं? नाम बताइये?
2. ग्रेडिंग द्वारा अपने विद्यार्थियों का आकलन करने में आपको यदि कोई समस्या सामने आती है, उसके विषय में बताइये।
3. ग्रेडिंग प्रणाली का अंकन प्रणाली की अपेक्षा प्राप्त होने वाले लाभों/फायदों का अपने अनुभव के आधार पर, वर्णन कीजिये।

9.5.1 ग्रेड्स का प्रयोग

मूल्यांकन के संदर्भ में, ग्रेडिंग आवश्यक रूप से अपनायी जाने वाली एक ऐसी विधि है जिसमें प्रतीकों के समूह, जैसे A,BC,D,E का प्रयोग किया जाता है, जो स्पष्ट रूप से परिभाषित और विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य संबद्धो द्वारा समान रूप में समझे जाते हैं। अंक भी बहुत बड़े 101-अंक पैमाने पर एक प्रकार के ग्रेड्स ही होते हैं। एक उचित रूप से प्रस्तुत की गई ग्रेड प्रणाली केवल विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना ही नहीं प्रदान करती अपितु प्रदर्शन की गुणवत्ता की और भी संकेत करती है।

9.5.2 ग्रेड्स आकलन की विधियाँ

ग्रेडिंग विभिन्न प्रकर से की जा सकती है: (i) प्रत्यक्ष ग्रेडिंग और अप्रत्यक्ष ग्रेडिंग (ii) सम्पूर्ण ग्रेडिंग और सापेक्षिक ग्रेडिंग

प्रत्यक्ष ग्रेडिंग:

प्रत्यक्ष ग्रेडिंग में, विद्यार्थी के प्रदर्शन का आकलन गुणात्मक पदों में, किया जाता है और अक्षर पद के रूप में (जैसे A,BC,D.....) ग्रेड्स व्यक्त किये जाते हैं। इस विधि का उपयोग लाभदायकता से पाठ्यचर्या विषयों, पाठ्यचर्या गतिविधियों और सामाजिक एवं व्यक्तिगत गुणों के आकलन हेतु किया जा सकता है।

अप्रत्यक्ष ग्रेडिंग:

अप्रत्यक्ष ग्रेडिंग में, विद्यार्थी के प्रदर्शन का आकलन पहले अंकों के पदों में किया जाता है तत्पश्चात् सम्पूर्ण या सापेक्षिक ग्रेडिंग प्रक्रिया का प्रयोग कर अक्षर पद वाले ग्रेड्स में अंकों का रूपान्तरण कर दिया जाता है।

सम्पूर्ण ग्रेडिंग:

सम्पूर्ण ग्रेडिंग में विषय में अंकों के वितरण का विचार किये बिना ही अंकों का ग्रेड्स में प्रत्यक्ष रूपान्तरण किया जाता है। यह बालकों का 5 वर्गों में वर्गीकरण करने जैसा है।

अंकों की श्रेणी	ग्रेड
75%	A
60% से 74%	B
45% से 59%	C
33% से 44%	D
33% से कम	E

सम्पूर्ण ग्रेडिंग प्रणाली में, ग्रेड्स का वितरण पूर्व निर्धारित नहीं होता है। यदि सभी विद्यार्थी उच्च स्तरीय प्रदर्शन प्रदर्शित करते हैं तब सभी को उच्च ग्रेड्स प्राप्त होंगे। यदि कुछ विद्यार्थी निम्न स्तर का प्रदर्शन प्रदर्शित करते हैं तो उन्हें निम्न ग्रेड्स प्राप्त होंगे।

सापेक्षिक ग्रेडिंग:-

सापेक्षिक ग्रेडिंग को वक्र पर ग्रेड के रूप में जाना जाता है। वक्र का तात्पर्य सामान्य संभाविता वक्र से है। इसे 'मानदंड संदर्भित ग्रेडिंग' के रूप में भी जाना जाता है। सापेक्षि ग्रेड्स का कार्य समस्त उपलब्धियों के क्रम में विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से श्रेणी बद्ध करना और अक्षर ग्रेड्स (जैसे A B C D E) प्रदान करना है। A, B, C, D, E अक्षर ग्रेड्स प्रदान करने से पूर्व ही इनका साम्य निर्धारित कर दिया जाना चाहिये। सामान्य वक्र पर ग्रेडिंग A और E; और B और D जिनका विस्तृत प्रयोग एक समान प्रतिशत में पिछले परिणाम में गया है। उदाहरण के लिये, यदि विद्यार्थियों का विभाजन 5 श्रेणियों में किया जायेगा, तब ग्रेड के अनुसार विभाजन करने पर निम्न स्थिति होगी:

टिप्पणी

अक्षर ग्रेड	अन्तराल (सिग्मा दूरी)	उदाहरणों की संख्या
A	1.5 से 00	7%
B	0.5 से 1.5	24%
C	- 0.5 से 0.5	38%
D	- 1.5 से -0.5	24%
E	- 00 से -1.50	7%

सामान्य वक्र के आधार पर ग्रेडिंग कक्षा समूह (जैसे बहुत छोटे समूह का सामान्य परिणाम वितरण) के लिये अतार्किक और अनुचित प्रतीत होती है। इस प्रकार, शिक्षक द्वारा अनुमानित अंक वितरण हेतु निर्धारित दिशा निर्देश, सर्वाधिक व्यवहारिक उपागम होते हैं। समान पाठ्यक्रम में एक समय से अन्य समय में और एक पाठ्यक्रम से अन्य पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की क्षमताओं में विविधता के लिये अनुमति देने हेतु वितरण में लोचशीलता होनी चाहिये। स्थिर प्रतिशतता की अपेक्षा विद्यार्थियों की श्रेणी जिन्हें अक्षर ग्रेड प्राप्त करना चाहिये को निम्न प्रकार इंगित किए जाने की आवश्यकता है।

A = विद्यार्थियों का 10 से 20 प्रतिशत

B = विद्यार्थियों का 20 से 30 प्रतिशत

C = विद्यार्थियों का 30 से 40 प्रतिशत

D = विद्यार्थियों का 40 से 50 प्रतिशत

E = विद्यार्थियों का 50 से 60 प्रतिशत

इन श्रेणियों के निर्धारण का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। संस्थान के दर्शन, योग्यता और प्रगति, विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की असामर्थ्यता को ध्यान में दखकर संस्थान को इसका निर्णय करना चाहिये।

9.5.3 सम्पूर्ण प्रदर्शन की तुलना: ग्रेड पॉइंट औसत:

सापेक्षिक ग्रेडिंग प्रणाली विद्यार्थियों के किसी एक विषय के अन्तर्गत और विषय के बाहर प्रदर्शन की तुलना की अनुमति देती है। परन्तु यदि हम विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों के सम्पूर्ण प्रदर्शन की तुलना करना चाहते हैं, तब हमें विभिन्न विषयों में प्राप्त ग्रेड्स को मिलाकर ग्रेड पॉइंट एवरेज (GPA) ज्ञात करने की आवश्यकता होगी। फिर भी, GPA की गणना के लिये, सभी विषयों में ग्रेड्स सापेक्षिक ग्रेडिंग विधि पर आधारित होने चाहिये।

विद्यार्थी	विभिन्न विषयों में ग्रेड्स					GPA
X	A	C	B	B	C	3.8
Y	C	B	A	A	B	4.2

X का GPA $= \frac{5+3+4+4+3}{5} = \frac{19}{5} = 3{\cdot}8$

Y का GPA

GPA के आधार पर, यह अनुमान किया जा सकता है कि Y का प्रदर्शन X की तुलना में श्रेष्ठ है।

9.5.4 प्रभावशाली ग्रेडिंग हेतु नियमावली

ग्रेडिंग प्रणाली के सन्दर्भ में, निम्न मानदंडों का सावधानीपूर्ण कार्यान्वयन उच्च कोटि की विश्वसनीयता और वैधता के साथ ग्रेड्स प्रदान करने की ओर अग्रसित करेगा।

(i) निर्देश के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को अपनी ग्रेडिंग प्रक्रिया के बारे में बताना।

(ii) विद्यार्थियों को स्पष्ट करना कि पाठ्यक्रम ग्रेड्स केवल उनकी उपलब्धि पर आधारित होंगे।

(iii) अन्य घटकों (प्रयास, कार्यव्यवहारों, व्यक्तिगत-सामाजिक लक्षण) का आलेखन किस प्रकार होगा? का वर्णन।

(iv) ग्रेडिंग प्रक्रिया को नियत अधिगम परिणामों से संबद्ध करना (जैसे निर्देशात्मक उद्देश्य)

(v) वैध तथ्य (जैसे-टैस्ट, रिपोर्ट्स रेटिंग्स) ग्रेड्स निर्धारण के आधार रूप में प्राप्त करना।

(vi) टैस्ट्स रिपोर्ट्स और अन्य प्रकार के मूल्यांकन में नकल रोकने हेतु सावधानी बरतना

(vii) संभावित शीघ्रता के साथ सभी परीक्षा परिणामों का (और अन्य मूल्यांकन आँकड़े) पुनरावलोकन कर लौटाना

(viii) विविध उपलब्धियों के उचित भार का ग्रेड में समावेश

(ix) हल्के प्रयास या दुर्व्यवहार के लिये उपलब्ध ग्रेड को नीचे नहीं करना

(x) निष्पक्ष बनें, पक्षपात से बचें, और जब संशय में हों (जैसा कि सीमांत प्राप्तांक की स्थिति में) तथ्यों का पुनरावलोकन करें। यदि अभी भी संशय में हों, उच्च ग्रेड प्रदान करें।

(Gronlund and Linn1990, b. 443)

टिप्पणी

ग्रेडिंग के लाभ

- यह अविश्वसनीय अंकों के आधार पर किये जाने वाले विद्यार्थियों के गलत वर्गीकरण को न्यूनतम करेगा।
- यह उच्च सफलता प्राप्त करने वालों के बीच होने वाली अस्वास्थ्यप्रद गला काट प्रतियोगिता को खत्म कर देगा
- यह कम सफलता प्राप्त करने वालों के लिये बहुत संतोषप्रद होगा जब उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषणा करने वाली प्रणाली का उन्मूलन हो जायेगा।
- यह एक नियत कालावधि में बिना अनुर्त्तीर्ण का कलंक वहन करते हुए किसी विषय में ग्रेड सुधार करने का एक अवसर प्रदान करेगा,
- परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण होने पर विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले आत्महत्या के लिये प्रयास या घर से भाग जाना रूक जायेंगे।
- अनुर्त्तीर्ण न होने वाले उम्मीदवार जो कि 50% या इस से भी अधिक हो सकते हैं, का राष्ट्र मानव एवम् प्राकृतिक संसाधन के रूप में साझा कर लाभान्वित होगा।

(NCERT, 2000, pp 35-36)

प्रगति जाँच-3

1. विद्यार्थियों के उन कार्यों की सूची बनाइये जिन्हें पोर्टफोलियो आकलन हेतु ध्यान में लाया जा सकता है।

   .....

   .....

   .....

2. Rubrics के क्या लाभ हैं?

   .....

   .....

   .....

9.6 सारांश

भारतीय शिक्षा प्रणाली में, मूल्यांकन पद परीक्षा, तनाव और चिंता के साथ जुड़ा है। यह बालक क्या जानता है अथवा क्या कर सकता है के स्थान पर बालक क्या नहीं जानता या क्या नहीं

कर सकता का निष्कर्ष प्रदान करता है। यह रट कर याद की हुयी विषय वस्तु के ज्ञान के आकलन पर भी केन्द्रित रहता है। अधिकांश समय यह विद्यार्थियों में तुलना और अस्वास्थयप्रद प्रतियोगिता को बढ़ावा देता है; और; कुछ मामलों में, एक अंक के लिये जिससे श्रेणी/स्थान या उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण का निर्धारण होता है, आत्महत्या करने तक को बढ़ावाा देता है।

आकलन का मूल उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाना और अन्ततः आयामों का उस सीमा तक विस्तार करा जहाँ तक विद्यार्थी की क्षमतायें विकसित हो सकती हैं। अच्छी प्रकार निर्मित आकलन और नियमित रिपोर्टिंग विद्यार्थियों को पृष्ठ पोषण प्रदान करते हैं और आगे अधिगम हेतु प्रोत्साहित करते हैं। वे अभिभावकों को उनके आश्रित के अधिगम की गुणवत्ता और प्रगति के बारे में सूचित की सेवा भी करते हैं। यह विद्यार्थियों के बीच प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करने का साधन नहीं है। एक अच्छा आकलन अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो सकता है और पृष्ठ पोषण दे कर शिक्षक एवं स्वयं विद्यार्थी दोनों के लिये लाभप्रद हो सकता है। यह स्पष्ट है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों का नियमित रूप से अनौपचारिक आधार पर अवलोकन करता रहता है। ये अनौपचारिक अवलोकन निःसंदेह, शिक्षण अधिगम को बेहतर बनाने और उसी प्रकार बालकों के अधिगम को बेहतर बनाने के बहुत से निहितार्थ लिये होते हैं। इस प्रकार, फिर भी, बालकों के बारे में एकत्रित जानकारी को प्रतिबिम्बित करने में शिक्षक की सहायता के लिये मूल्यांकन में कुछ आकलन की आवश्यकता होती है। इसलिये, आकलन दैनिक और समान रूप से आवधिक आधार पर होना चाहिये।

हम में से अधिकांश लोग यह जटिल प्रश्न उठाना चाहेंगे कि हमें कब और कैसे बालक के अधिगम का आकलन करना चाहिये। जबकि कई शिक्षक इस मत का समर्थन करते हैं कि अधि गम परिणामों का आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ ही सतत रूप से होना चाहिये, कुछ इसका विरोध यह कह कर करते हैं कि सतत आकलन अधिगम समय को घटा देता है और इसलिये, समय व्यर्थ करने वाली प्रक्रिया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) से तात्पर्य मूल्यांकन की एकक प्रक्रिया से है जो विद्यालय आधारित है और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य करती है।

यह एक विस्तृत विश्वास है कि सामाजिक विज्ञान जानकारियों का प्रसारण मुश्किल से कर पाता है। यह पुस्तक केन्द्रित है और परीक्षाओं के लिये इसे रटना पड़ता है। इसकी पाठ्य पुस्तकों की विषय-वस्तु का वास्तविक जीवन से कोई संबंध नही होता। इसकी वजह विद्यार्थियों के अधि गम का मूल्यांकन करने वाली वर्तमान अभ्यासों संबंधी तथ्य हैं, विशेषतः सामाजिक विज्ञान में, प्रायः अध्यापक द्वारा निर्मित और मानकीकृत परीक्षाओं में बहुविकल्पीय या अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है। इन मूल्यांकन विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन मूल्यांकन विधियों का प्रयोग जटिल समस्याओं के समाधान कौशलों, अपसारी चिंतन विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों और सम्प्रेषण कौशलों के मापन में भी किया जाता है। यद्यपि इन विधि यों में दो दशक पूर्व परिवर्तन किया गया था, फिर भी हमने आज तक अपनी संस्थाओं में इन्हीं विधियों का पालन करना जारी रखा हुआ है। यह एकदम उचित समय है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में आकलन की वैकल्पिक विधियों को प्रस्तुत किया जाये। ये विधियाँ जैसे सृजनात्मक लेखन, अभिनय और नृत्य, पोर्टफोलियो आकलन, क्षेत्रभ्रमण, चित्र पठन कार्य, प्रदर्शन आधारित

टिप्पणी

आकलन के लिये Rubrics, न केवल सामाजिक विज्ञान में प्रयुक्त होती हैं, अपितु मूल्यांकन अभ्यासों को गतिविधि आधारित, सहभागिता और आनंददायी बनाने में भी प्रयुक्त होती हैं।

वैकल्पिक आकलन प्रक्रियायें ज्ञान निर्माण के रचनात्मक सिद्धान्त पर आधारित होती हैं। इन प्रक्रियाओं का मूल केन्द्र विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति की योग्यता और वास्तविक जीवन के कार्यों और क्रियाकलापों को निबटाने के कौशलों में होता है। सामाजिक विज्ञान में आकलन इस प्रकार केवल कागज और पैन्सिल परीक्षा तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। आकलन विविध विधियों द्वारा जैसे नाटक, चित्र पठन कार्य, परियोजना कार्य और प्रयोगात्मक कार्य, पोर्टफोलियों Rubrics, बालकों की चित्रकारी और बालकों के साथ वार्तालाप द्वारा भी आकलन किया जा सकता है।

9.7 प्रगति की जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

3. प्राथमिक स्तर पर सामाजि विज्ञान में आकलन के उद्देश्यों का वर्णन कीजिये।

उत्तर – आकलन का सम्पूर्ण प्रयोजन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाना और विद्यार्थियों की क्षमतायें जहाँ तक विकसित हो सकती हैं उस सीमा तक विभिन्न आयामों का विस्तार करना। फिर भी, आकलन के विशिष्ट उद्देश्य हैं:

- एक नियत समयावधि में बालक में अधिगम और होने वाले परिवर्तनों के बारे में पता लगाना।
- व्यक्तिगत आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पहचान करना।
- अधिक सुविधाजनक तरीके से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की योजना बनाना।
- बालक की यह समझने में सहायता करना कि वह क्या जानता है और वह क्या कर सकता है।
- पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमता तक हुई है, का पता लगाना।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाना।
- विषय में बालकों की प्रगति के संबंध में अभिभावकों से सम्प्रेषण करना।
- बालकों से आकलन के भय को दूर करना।
- सामूहिक अधिगम करने हेतु बालकों को प्रोत्साहित करना।

4. आकलन के पदों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

उत्तर – आकलन की प्रक्रिया सतत और चक्रीय होती है। इसका तात्पर्य है कि आकलन शिक्षण

अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग होता है-जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ ही प्रारंभ और समाप्त होता है।

इसके तीन आधार पद होते हैं:

(i) बालक के बारे में जानकरी एकत्र करना:

कोई भी सूचना संग्रह की व्यवस्थित प्रक्रिया जिसका प्रयोग बालक के बारे में अनुमान करने में किया जाता है, आकलन है। बालक की अधिगम और प्रगति के बारे में सूचना संग्रह के संदर्भ में, दो चीजें महत्वपूर्ण होती हैं–प्रथम, विविध स्रोतों से सूचनाओं का संग्रह, और द्वितीय विभिन्न विधियों या उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग।

(ii) सूचनाओं का अंकन

रिकॉर्डिंग में अवलोकनों के रिकार्ड्स और बालक को प्रदत्त कार्यों के प्रदर्शन पर की टिप्पणियाँ, बालक क्या करते हैं और वे कैसा व्यवहार करते हैं और बालक के दूसरों के प्रति व्यवहार संबंधी घटनायें या उपाख्यान संबंधी रेटिंग्स (श्रेणियाँ)

(iii) एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या

एक बार जब सूचनाओं का अंकन हो जाता है, अगला पद एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या करने का होता है। यह बालक के बारे में–बालक कहाँ है और बालक की सहायता करने हेतु क्या आवश्यकतायें हैं, समझने और निष्कर्ष निकालने में सहायता करते हैं। इसके लिये रिकॉर्ड्स के दैनिक विश्लेषण और पुनरावलोकन की आवश्यकता होती है।

प्रगति जाँच-2

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा का वर्णन कीजिये।

उत्तर - सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) से तात्पर्य मूल्यांकन की एक ऐसी प्रक्रिया से है जो विद्यालय आधारित है तथा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का लक्षित करती है। पद में तीन कुंजीशब्द सम्मिलित हैं-''सतत'' का तात्पर्य बालकों के अधिगम और प्रगति की पूरे शैक्षिक सत्र में संभावित आवधिकता में लघु अन्तराल पर नियमित निगरानी करने से है। पद ''व्यापक'' का तात्पर्य पाठ्यचर्या विषय, पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, सामाजिक-वैयाक्तिक गुण, और कार्य तथा कला शिक्षा आदि का मूल्यांकन के अन्तर्गत आने से है। शब्द ''मूल्यांकन'' एक प्रक्रिया है, जो बालक के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों संबंधी एकत्र की जाने वाली सूचना संग्रह इन सूचनाओं की व्याख्या; बालक की प्रगति के संबंध में निर्णय; और अगली कक्षा में प्रोन्नति देने के संबंध में निर्णय करने; से व्यवहार करती है।

प्रगति जाँच-3

3. पोर्ट फोलियों आकलन हेतु ध्यान में रखे जाने वाले विद्यार्थियों के कार्यों की सूची बनाइये।

टिप्पणी

उत्तर – पोर्टफोलियो का तात्पर्य बालकों के कार्यों के उद्देश्यपूर्ण संग्रह से है जो विद्यार्थी के प्रयासों, प्रगतियों, या नियत समयावधि में किसी निर्दिष्ट क्षेत्र में की गई उपलब्धियों के बारे में कथा कहती हैं। जैसे जैसे विद्यालय वर्ष प्रगति करता है, पोर्टफोलियों का संग्रह भी बढ़ता जाता है। विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले निम्न कार्यों का संग्रह पोर्टफोलियों के लिये किया जा सकता है:

- लिखित सामग्रियाँ : वर्कशीट्स, सृजनात्मक लेखन, परीक्षायें, गतिविधियों की रिपोर्ट्स आदि
- विभिन्न चित्रकलायें : पौधे, फूल, जानवर आदि
- हस्तकला कार्य जैसे पेपर फोल्डिंग तथा पेपर कटिंग
- बालकों द्वारा तैयार किये गए बधाई पत्र।
- अन्य लोगों से बालक को प्राप्त होने वाले पत्र।
- बालक द्वारा पठित कहानी की पुस्तकें
- कपड़े, पत्तियों आदि के संग्रह
- भयमुक्त ढंग से बालक द्वारा लिखित डायरी के अंश
- बालक की आत्ममूल्यांकन पत्र के नमूने

4. Rubrics के क्या लाभ हैं?

उत्तर– Rubric एक मूल्यांकन उपकरण होता है जिस का निर्माण विद्यार्थी का किसी क्षेत्र, जिन में पाठ्यचर्या विषयों, पाठ्यचर्या गतिविधियों और सामाजिक एवं व्यक्तिगत गुणों को सम्मिलित किया जा सकता है, में प्रदर्शन का आकलन करने हेतु किया जाता है। प्रदत्त कार्य आरंभ करने से पहले इसे विद्यार्थियों को सौंपा जाता है जिससे कि वे उन मानदंडों पर विचार कर सकें जिन पर उनके कार्य का आकलन/मूल्यांकन किया जायेगा। Rubrics शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिये सहायक होते हैं। वे विद्यार्थियों के अन्तिम उत्पाद में सुधार करते हैं और इसलिये अधि गम में वृद्धि होती है। जब विद्यार्थियों को Rubrics पहले ही प्राप्त हो जाते हैं, वे समझ जाते हैं कि उनका मूल्यांकन कैसे होगा, और वे उसी के अनुरूप तैयारी कर सकते हैं। जब शिक्षक प्रपत्रों और परियोजनाओं का मूल्यांकन करते हैं, तो उन्हें ज्ञात हो जाता है कि अन्तिम उत्पाद को क्या अच्छा बनाता है और क्यों। Rubrics द्वारा प्रदान किये जाने वाले कई लाभ निम्नवत् हैं–

- विद्यार्थियों को यह स्पष्ट दिखाकर कि उनका मूल्यांकन कैसे किया जायेगा और उन से क्या अपेक्षायें हैं, विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार करता है।
- विद्यार्थियों की अपने कार्य की गुणवत्ता की बेहतर ढंग से परख करने में सहायता करता है।
- आकलन को और अधिक वस्तुनिष्ठ और सुसंगत बनाने की स्वीकृति देता है।

- अध्यापक को अपने मानदंडों को निर्दिष्ट पदों में स्पष्ट करने पर जोर देता है।
- विद्यार्थियों के कार्यों के मूल्यांकन में व्यय होने वाले अध्यापकों के समय को घटाता है।
- सामूहिक प्रदर्शन आकलन में प्रयोग किये जाने वाले मानदंडों के बारे में विद्यार्थियों की जागरूकता को प्रोत्साहित करता है।
- निर्देशों की प्रभावशीलता के संदर्भ में अध्यापक को उपयोगी पृष्ठ पोषण प्रदान करता है।
- विद्यार्थियों को उनकी शक्तियों और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्र के बारे में अधिक सूचनात्मक पृष्ठपोषण प्रदान करता है।
- प्रयोग में सरल होते हैं और वर्णन में सरल होते हैं।

9.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

Anastasi, A (1988): Pshychological Testing (6th Ed.) Macmillan Publishing Company, New Delhi.

Gronlund, N.F. & Linn. R.L. (1990): Measurement and Evaluation in Teaching, Macmillan Publishing Company New York

NCERT (2000) : Grading in schools, New Delhi

NCERT (2001) : Using Grades for Admission, New Delhi

9.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. प्रांरभिक स्तर पर विद्यार्थियों के मूल्यांकन की वर्तमान पद्धति की कमियों की सूची तैयार कीजिए।
2. अंकन एवं ग्रेड़िग प्रणाली के लाभ एव ंहानियों का वर्णन कीजिए।
3. आकलन की अवधारणा एवं उद्देश्यों को लिखिए।
4. विद्यालयों में सामाजिक–व्यैक्तिक गुणवत्ता के मूल्यांकन की वर्तमान में प्रचलित पद्धति का वर्णन कीजिए।
5. रूब्रिक क्या है ? विद्यार्थियों एव ंशिक्षकों के लिए इसकी उपयोगिता का वर्णन कीजिए।